মহারাণী কাশীশ্বরী কলেজ পত্রিকা

২০২২ -২০২৩

জ্যোতি

অপূর্ব অরুণোদয়ে আকাশ
সমুজ্জ্বল প্রতিবিম্ব বিকাশ
ত্রিভুবন জোড়া আনন্দ সকাশ
লক্ষ হীরক জ্যোতি প্রকাশ
রামধনু হেন বর্ণ সমাহার
অমূল্য বিভবে ভরা চারিধার
এ কী অপরূপ লীলার প্রকাশ
উজ্জ্বল তাঁর অস্তিত্ব বিভাস।
জাগতিক সুখ দুঃখ মূল্যহীন
সদা সাথে আছেন তিনি আলাদীন।

Sima Chakrabarti

তমসো মা জ্যোতির্গময়

সম্পাদকীয়

দীর্ঘ করোনা-পথ পেরিয়ে আজ আবার ছাপা-অক্ষর পড়তে পারছি। কথার ওপর অনেক কথা---শুধু সিলিং-ই ছুঁয়ে যাচ্ছে না, মুখোশের আড়ালে অস্পষ্ট হচ্ছে না। আজ আবার নতুন বইয়ের নতুন পাতার গন্ধে মেতেছি। আবার মুখোমুখি বসে কথাবলা ! লেখালিখির চর্চা !

আমাদের এই অক্ষর-ছাপার খেলা চলুক।

পত্রিকা সমিতি
মহারাণী কাশীশ্বরী কলেজ

প্রত্রিকা কমিটি ঃ

অধ্যাপক শিপ্রা দাস বাগচী, অধ্যাপক মৌসুমী মল্লিক, অধ্যাপক রত্না মণ্ডল, অধ্যাপক সুশান্ত কুমার বাগ, অধ্যাপক অর্পিতা ভাদুড়ি, অধ্যাপক মৌমিতা বিশ্বাস, অধ্যাপক অনুজা শেঠ সোম, অধ্যাপক আবু ফারাহ হক, অধ্যাপক পিয়ালী ঘোষ

सम्पादकीय वार्ता

प्रिय पाठकों ,

हमारी इस कॉलेज मैगजीन में आप सब के सहयोग की सराहना करते हुए कहना चाहूंगी कि प्रत्येक व्यक्ति को कुछ लिखने का प्रयास करते रहना चाहिए यदि आप सफल व्यक्ति बनना चाहते हैं तो कलम पकड़िए क्योंकि इसकी धार तलवार से भी तेज होती है ये आपके व्यक्तित्व को निखारने में आप में आत्मविश्वास को बढ़ाने में कामयाब सिद्ध होगी।

" यह तो शुरुआत है अभी कुछ ख्वाबो को जकड़ा है
ख्यालों से पहचान है ,अभी तो कलम को पकड़ा है।।

कर्मण्येवाधिकारस्ते महाफलेषु कदाचन....

कर्म करते चलो फल की इच्छा मत रखो क्योंकि आप हमारे देश, हमारे समाज, हमारे धर्म, हमारे भविष्य के करता धर्ता है हमारा साहित्य बहुत ज्ञान उपयोगी है और साहित्य को समाज का दर्पण कहते हैं उस साहित्य को पढ़कर प्रत्येक क्षेत्र में चारों ओर क्रांति फैला दिजिए यही आप सब विद्यार्थियों का कर्तव्य है।

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने भी लिखा है

"कागज़ और कलम की ताकत दुनिया की हर ताकत से बड़ी है एक रोटी कम खाओ पर बच्चों को जरूर पढ़ाओ"।।

क्योंकि गुजरा हुआ वक्त दोबारा नहीं आयेगा। आपका समय बहुत अनमोल है उसका सदुपयोग कीजिए अपनी छोटी-छोटी यादों को शब्दों में पिरोकर एक माला के रूप में सहेज कर रखिए यही सब जीवन में काम आएगा। डायरी में लिखे हुए चंद शब्द आपको ही सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देंगे।।

क्योंकि कल कभी नहीं आता

आज में जीना सीखो। लेखनी को विश्राम मत दो।

"काल करै सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलै होएगी, बहुरि करेगा कब।।"

तो चलिए,कलम उठाइये और लिख डालिए कुछ ऐसा.....कि किसी के जीवन की दिशा ही बदल जाये।

मुस्कुराते रहिए

धन्यवाद

दर्शना शर्मा

एम.ए,एम.फिल.,एम.एड

हिंदी विभाग, महारानी काशीश्वरी कॉलेज कोलकाता।।

মহারাণী কাশীশ্বরী কলেজ পত্রিকা

বর্ষ ঃ ২০২৩

সম্পাদক মন্ডলী
ড. গোবিন্দ মণ্ডল । অধ্যাপক দর্শনা শর্মা। ড. রীতা চ্যাটার্জী।

সূচীপত্র

আকাশ ব্রহ্ম ছলনা	অধ্যক্ষ - ড. সীমা চক্রবর্ত্তী	10
অবলুপ্তির পথে	অধ্যক্ষ - ড. সীমা চক্রবর্ত্তী	10
প্রেম ছিল ঘরে ঘরে	অধ্যক্ষ - ড. সীমা চক্রবর্ত্তী	11
ভ্রমভাসি	অধ্যক্ষ - ড. সীমা চক্রবর্ত্তী	11
জ্যোতি প্রকাশ	অধ্যক্ষ - ড. সীমা চক্রবর্ত্তী	12
সাদায় সাদা	অধ্যক্ষ - ড. সীমা চক্রবর্ত্তী	12
मोहब्बत है बेवकूफी भला	– डॉ सीमा चक्रवर्ती	13
शायर बन गई हुं मैं	– डॉ सीमा चक्रवर्ती	13
मौसम जब हो चुका है गीला	– डॉ सीमा चक्रवर्ती	14
महसूस होते हैं वह दर्द	– डॉ सीमा चक्रवर्ती	14
मुस्कान लबों पर जब आए	– डॉ सीमा चक्रवर्ती	15
रोशन फिजाओं में	– डॉ सीमा चक्रवर्ती	15
She Caught	- Dr. Sima Chakrabarti	16
Symbol of peace	- Dr. Sima Chakrabarti	16
She loved to	- Dr. Sima Chakrabarti	17
I am determined to	- Dr. Sima Chakrabarti	17
The only way I can motivate myself is	- Dr. Sima Chakrabarti	18
Eyes are ever thirsty	- Dr. Sima Chakrabarti	18
বসন্তের রবি	- শ্রেয়সী রায়	20
অন্ধকারের ডায়েরি	- রূপসা মন্ডল	21-23
অপ্রাপ্তির লড়াই	- সন্ধ্যা গায়ন	24-27
আমাদের প্রিয় অধ্যক্ষা মহাশয়া	- সন্ধ্যা গায়ন	27
গল্পের নাম ভগবান যা করেন মঙ্গলের জন্য করেন	- সুস্মিতা দাস	28-30
শেষ থেকে শুরু	- শ্রেয়া চ্যাটার্জী	32
নবজন্ম	- প্রতীতি চক্রবর্তী	33
আমাদের এই পথ চলাতেই আনন্দ পায়ে পায়ে ‘অন্যরকম’-এর সঙ্গে	- সুমি চ্যাটার্জি	34-35
মেঘলা আকাশ	- সুস্মিতা টুডু	36
সত্য	- সঞ্চারী সাহা	3

প্রথম দিনের সেই ক্লাসে	- শ্রেয়া চ্যাটার্জী	38
বীরাঙ্গনা তারা	- বর্ষা চক্রবর্তী	39
আমার কলকাতা	মৈত্রেয়ী মজুমদার	40
ঊনবিংশ শতকের এক নিরক্ষর বালিকা-বধূর আহ্বান	- অধ্যাপক সুনন্দা মুখার্জী	41-48
চেঞ্জের সন্ধানে	- অধ্যাপক সুনৃতাবরী সেন	50-52
জয়তু নারী	- অধ্যাপক পিয়ালী ঘোষ	54-56
মনের সমস্যা ও সমাধান	- অধ্যাপক রিয়াঙ্কা চাটার্জী	58-59
लड़कियां	– शानवी उपाध्याय	61
हाँ, हम किसान हैं।	– नाम–स्नेहा गुप्ता	62
प्रकृति हमारी माँ	– रिया कुमारी राय	63
मेरी जिन्दगी	– नेहा कुमारी	64
महादेवी वर्मा जी	– नेहा कुमारी	65
बचपन की यादे	– नेहा कुमारी	66
प्यारे पक्षी	–श्रिया भट्टाचार्य	69
पिता	– ज्योति कुमारी गुप्ता	70
अनजान नगर	– नेहा कुमारी	71
A Poem From Santiago Nasar's Dead Body.	- Shruti Tripathi	73
Rainy Day	- Swagata Khan	74
A Student's Note	- Pushplata Singh	75
Accept Your Faults	- Pushplata Singh	77
Love -	Tejeshweta Pandey	77
Meeting At Bougainvillea	- Anneyasha Karar	78
Not Fallen	- Soumiya Srivastava	79
Shadow Lines	- Shruti Tripathi	80-81
Memorable Days Of My College Life	- Jyoti Mishra	82-83
Artificial Intelligence's Impact On The Job Market And Its Role In Creating New Jobs	- Arsha Gupta	85-88

Influencers And Content Creators : A Powerful Marketing Tool In The Digital Age	- Arsha Gupta	89-93
21st Century Waterloo	- Ahana Choudhuri	96
We Gain Freedom When	- Sneha Gupta	97
You	- Sweta Samaddar	97
Loner's Strive	- Alivia Chakraborty	98
Awkward	- Sampurna Mazumdar	99
चुप रहो पर बोलते रहो	– अध्यापक डॉ रमेश यादव	101
लौटना है तो लौटो	– अध्यापक डॉ रमेश यादव	102
हार और जीत – स्वरचित	– अध्यापक दर्शना शर्मा	103
कहानी ... आस्था और विश्वास	– अध्यापक दर्शना शर्मा	104-105
असंभव को बनाया संभव	– अध्यापक दर्शना शर्मा	106-109
पंच्छी की जुबानी	– अध्यापक दर्शना शर्मा	110
छात्राओं से .. दो शब्द	– अध्यापक दर्शना शर्मा	

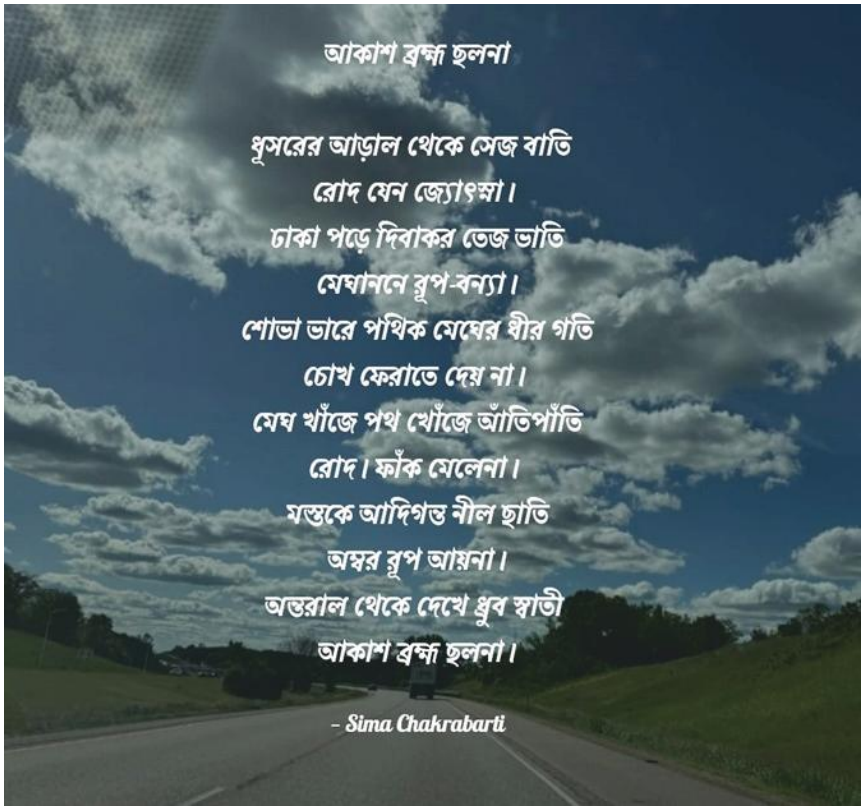
আকাশ ব্রহ্ম ছলনা
ধূসরের আড়াল থেকে সেজ বাতি
রোদ যেন জ্যোৎস্না।
ঢাকা পড়ে দিবাকর তেজ ভাতি
মেঘাননে রূপ-বন্যা।
শোভা ভারে পথিক মেঘের ধীর গতি
চোখ ফেরাতে দেয় না।
মেঘ খাঁজে পথ খোঁজে আঁতিপাঁতি
রোদ। ফাঁক মেলেনা।
মস্তকে আদিগন্ত নীল ছাতি
অম্বর রূপ আয়না।
অন্তরাল থেকে দেখে ধ্রুব স্বাতী
আকাশ ব্রহ্ম ছলনা।
- Sima Chakrabarti

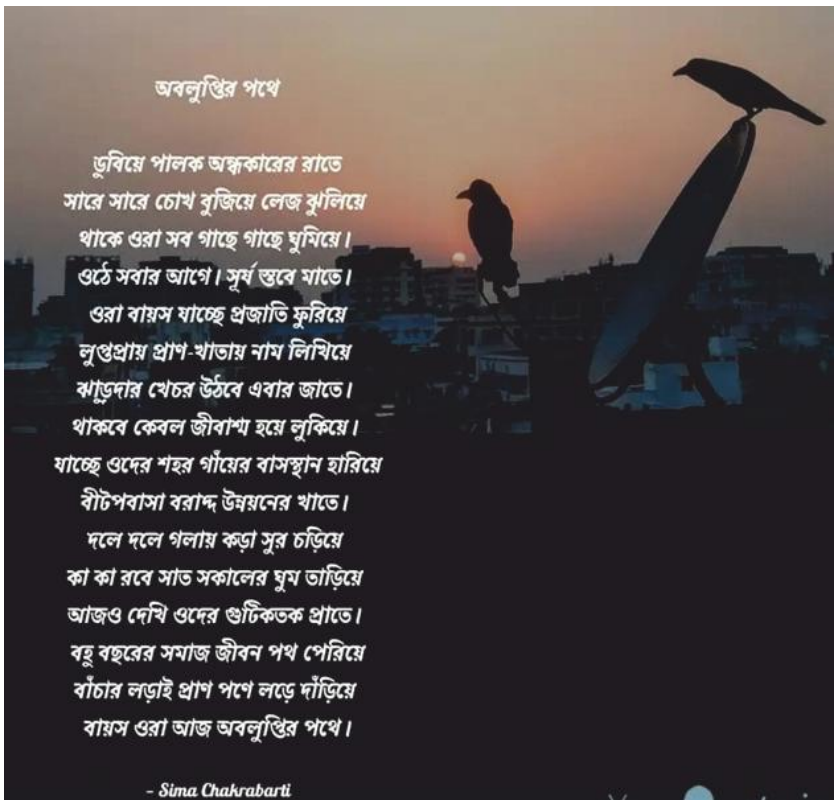
অবলুপ্তির পথে
ডুবিয়ে পালক অন্ধকারের রাতে
সারে সারে চোখ বুজিয়ে লেজ ঝুলিয়ে
থাকে ওরা সব গাছে গাছে ঘুমিয়ে।
ওঠে সবার আগে। সূর্য স্তবে মাতে।
ওরা বায়স যাচ্ছে প্রজাতি ফুরিয়ে
লুপ্তপ্রায় প্রাণ-খাতায় নাম লিখিয়ে
ঝাড়দার খেচর উঠবে এবার জাতে।
থাকবে কেবল জীবাশ্ম হয়ে লুকিয়ে।
যাচ্ছে ওদের শহর গাঁয়ের বাসস্থান হারিয়ে
বীটপবাসা বরাদ্দ উন্নয়নের খাতে।
দলে দলে গলায় কড়া সুর চড়িয়ে
কা কা রবে সাত সকালের ঘুম তাড়িয়ে
আজও দেখি ওদের গুটিকতক প্রাতে।
বহু বছরের সমাজ জীবন পথ পেরিয়ে
বাঁচার লড়াই প্রাণ পণে লড়ে দাঁড়িয়ে
বায়স ওরা আজ অবলুপ্তির পথে।
- Sima Chakrabarti

প্রেম ছিল ঘরে ঘরে
পরস্পরের তরে প্রেম ছিল ঘরে ঘরে
দুচোখে স্বপ্ন দেখতো ওরা ঘুরে ফিরে
আগত প্রতি শিশুর দিকে তাকিয়ে
অনাগতদের দিকে স্নেহময় হাত বাড়িয়ে।
আজ শুধু ধ্বংসলোকের কঙ্কাল আর বিভূতি
বিস্ফোরিত না বিস্ফোরিত বিস্ফোরক স্তূপাকৃতি।
চামড়া চাপা পড়ে থাকা মানব শব অগুন্তি
কান্না থরে থরে থমকে শূন্যতা শ্মশান শান্তি।
সরাতে লেগে যাবে প্রায় বছর পনেরো নাকি
কংক্রিটের ভারি ভারি লাশ কালো ধূসর খাকি।
পরতে পরতে বিপদ জ্যান্ত বোমায় লুকানো
পচা মাংসের গন্ধ বায়ু মণ্ডলে নিকানো।
কবে শুরু হবে সাফাই খরচা দেবে কারা?
ধুলোয় ঢাকবে আকাশ ঢাকবে সূর্য চন্দ্র তারা
ঝাপসা হবে দৃষ্টি ঝাঁজরা হয়ে ফাঁসবে ফুসফুসেরা
যে কটি বা আজও রয়েছে বেঁচে। হাঁস ফাঁস দিশাহারা
হবে ওরা মানব, গোটা দেশ গোটা জাতি সর্বহারা।
দেখছে পুরো পৃথিবী। শুনছে, বাজছে কাড়া নাকাড়া।
মানব সভ্যতা ধ্বংসের পদধ্বনি ফেলেছে সাড়া।
- Sima Chakrabarti

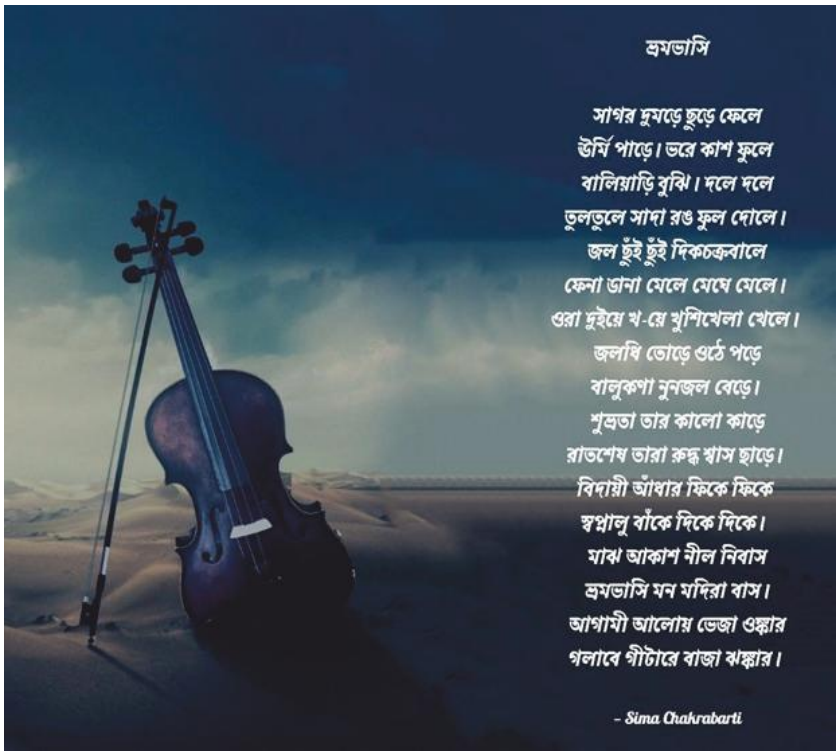
ভ্রমভাসি
সাগর দুমড়ে ছুড়ে ফেলে
ঊর্মি পাড়ে। ভরে কাশ ফুলে
বালিয়াড়ি বুঝি। দলে দলে
তুলতুলে সাদা রঙ ফুল দোলে।
জল ছুঁই ছুঁই দিকচক্রবালে
ফেনা ডানা মেলে মেঘে মেলে।
ওরা দুইয়ে খ-য়ে খুশিখেলা খেলে।
জলধি তোড়ে ওঠে পড়ে
বালুকণা নুনজল বেড়ে।
শুভ্রতা তার কালো কাড়ে
রাতশেষ তারা রুদ্ধ শ্বাস ছাড়ে।
বিদায়ী আঁধার ফিকে ফিকে
স্বপ্নালু বাঁকে দিকে দিকে।
মাঝ আকাশ নীল নিবাস
ভ্রমভাসি মন মদিরা বাস।
আগামী আলোয় ভেজা ওঙ্কার
গলাবে গীটারে বাজা ঝঙ্কার।
- Sima Chakrabarti

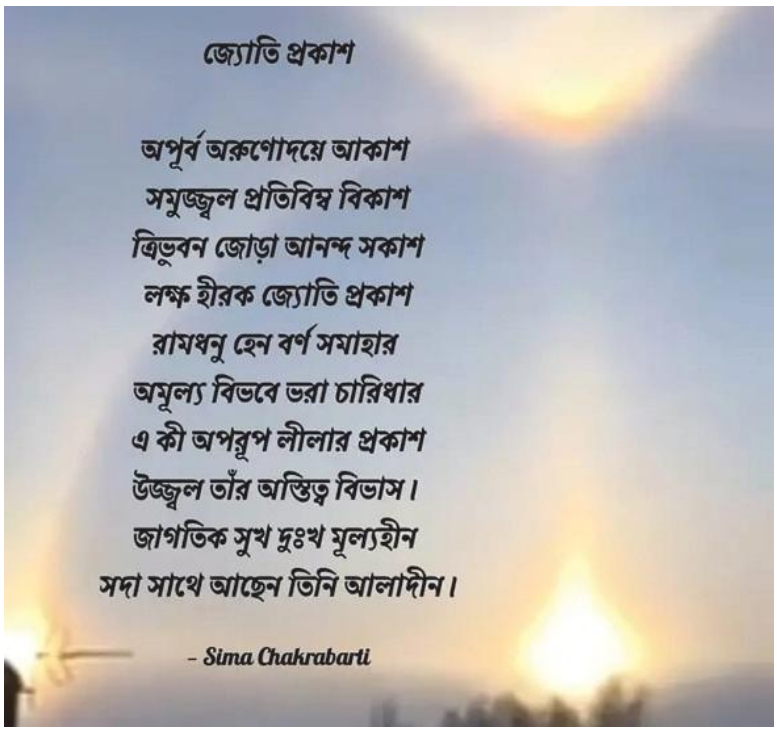
জ্যোতি প্রকাশ
অপূর্ব অরুণোদয়ে আকাশ
সমুজ্জ্বল প্রতিবিম্ব বিকাশ
ত্রিভুবন জোড়া আনন্দ সকাশ
লক্ষ হীরক জ্যোতি প্রকাশ
রামধনু হেন বর্ণ সমাহার
অমূল্য বিভবে ভরা চারিধার
এ কী অপরূপ লীলার প্রকাশ
উজ্জ্বল তাঁর অস্তিত্ব বিভাস।
জাগতিক সুখ দুঃখ মূল্যহীন
সদা সাথে আছেন তিনি আলাদীন।
- Sima Chakrabarti

সাদায় সাদা
সাদা আলোয় ভাসা
স্বাধীন জীবন ভাষা
সুদিন শুরুর আশা
নতুন চালে পাশা
সুফল স্বপন ঠাসা
সুখের ভুবন বাসা
শালুক ফোটে খাসা
সাদায় সাদা মেশা
পাখি ছাড়ে বাসা
উড়ান অভিলাষা
মুক্ত জীবন তৃষা
সুদূর গগন দিশা
ধরা-ছোঁয়ার নেশা।
- Sima Chakrabarti

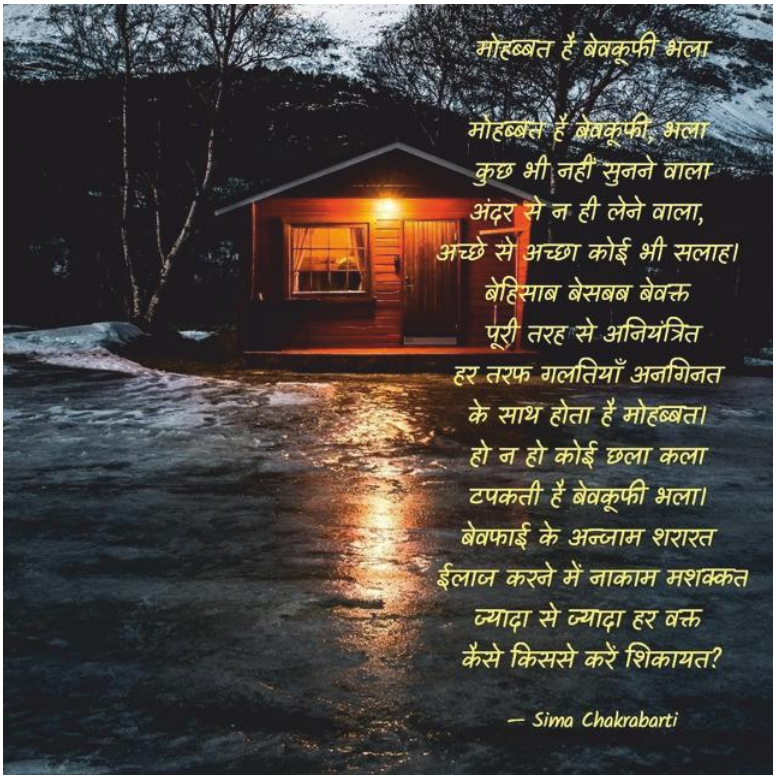
मोहब्बत है बेवकूफी भला
मोहब्बत है बेवकूफी, भला
कुछ भी नहीं सुनने वाला
अंदर से न ही लेने वाला,
अच्छे से अच्छा कोई भी सलाह।
बेहिसाब बेसबब बेवक्त
पूरी तरह से अनियंत्रित
हर तरफ गलतियाँ अनगिनत
के साथ होता है मोहब्बत।
हो न हो कोई छला कला
टपकती है बेवकूफी भला।
बेवफाई के अन्जाम शरारत
ईलाज करने में नाकाम मशक्कत
ज्यादा से ज्यादा हर वक्त
कैसे किससे करें शिकायत?
— Sima Chakrabarti

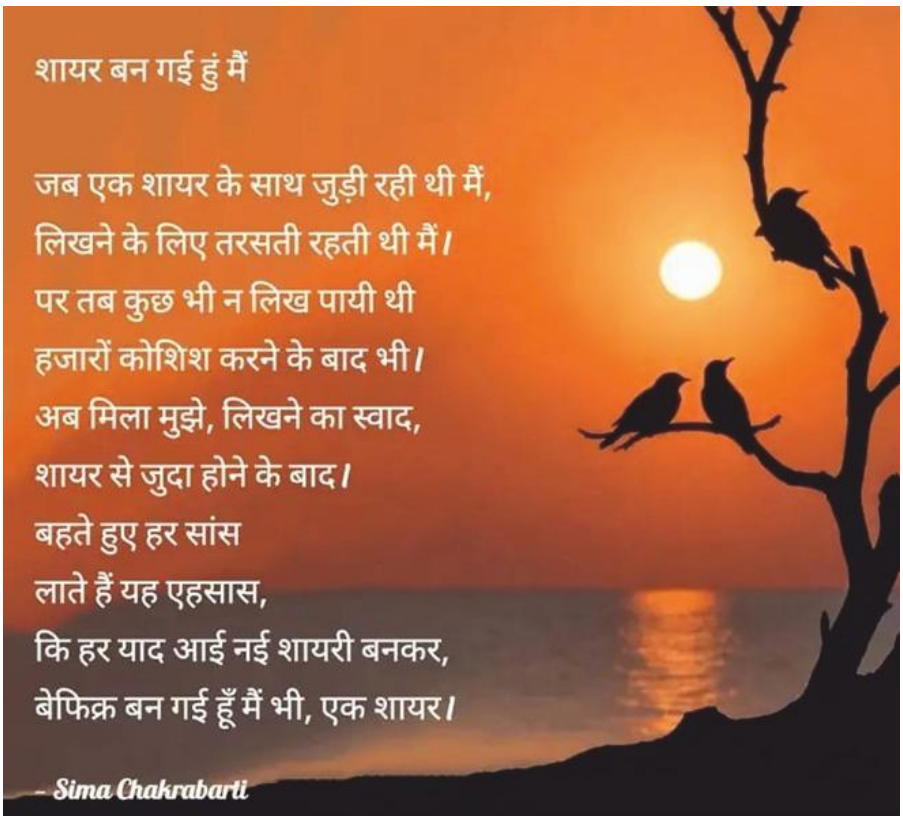
शायर बन गई हुं मैं
जब एक शायर के साथ जुड़ी रही थी मैं,
लिखने के लिए तरसती रहती थी मैं।
पर तब कुछ भी न लिख पायी थी
हजारों कोशिश करने के बाद भी।
अब मिला मुझे, लिखने का स्वाद,
शायर से जुदा होने के बाद।
बहते हुए हर सांस
लाते हैं यह एहसास,
कि हर याद आई नई शायरी बनकर,
बेफिक्र बन गई हूँ मैं भी, एक शायर।
– Sima Chakrabarti

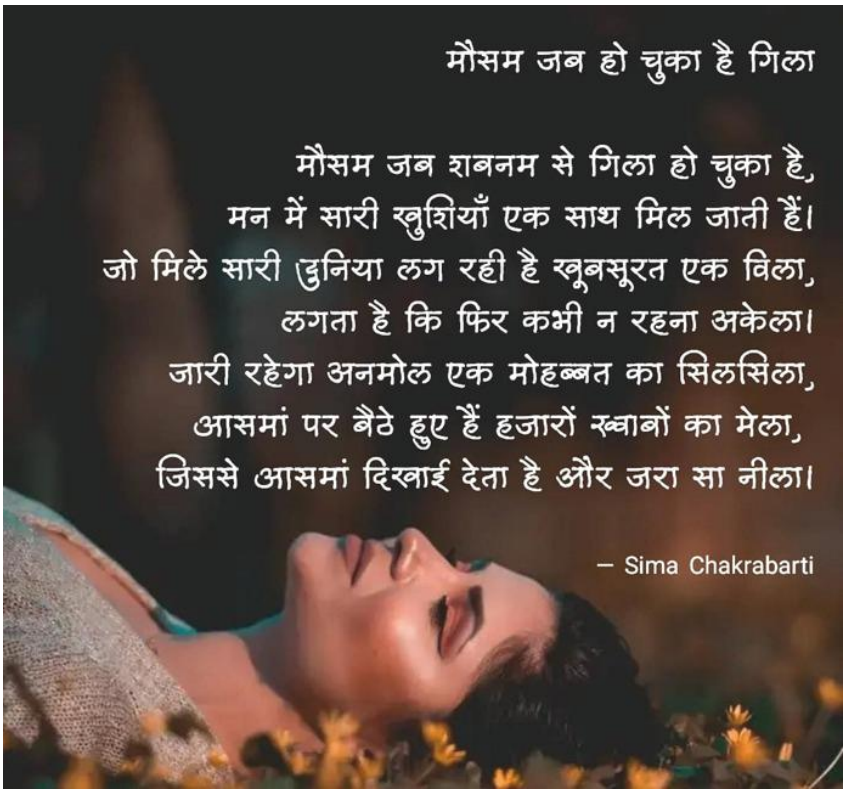
मौसम जब हो चुका है गिला
मौसम जब शबनम से गिला हो चुका है,
मन में सारी खुशियाँ एक साथ मिल जाती हैं।
जो मिले सारी दुनिया लग रही है खूबसूरत एक विला,
लगता है कि फिर कभी न रहना अकेला।
जारी रहेगा अनमोल एक मोहब्बत का सिलसिला,
आसमां पर बैठे हुए हैं हजारों ख्वाबों का मेला,
जिससे आसमां दिखाई देता है और जरा सा नीला।
— Sima Chakrabarti

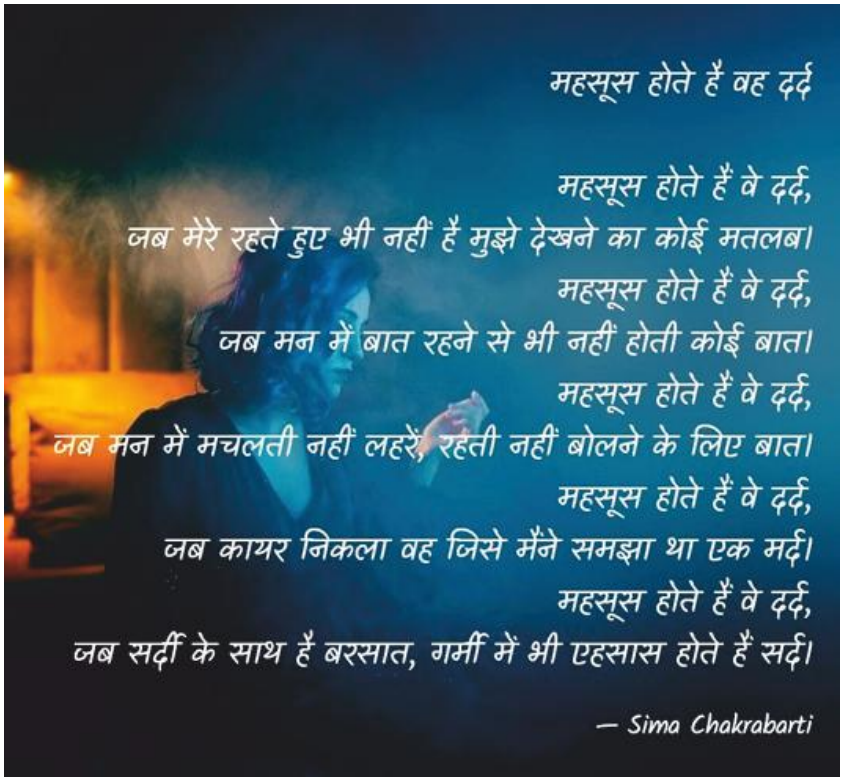
महसूस होते हैं वह दर्द
महसूस होते हैं वे दर्द,
जब मेरे रहते हुए भी नहीं है मुझे देखने का कोई मतलब।
महसूस होते हैं वे दर्द,
जब मन में बात रहने से भी नहीं होती कोई बात।
महसूस होते हैं वे दर्द,
जब मन में मचलती नहीं लहरें, रहती नहीं बोलने के लिए बात।
महसूस होते हैं वे दर्द,
जब कायर निकला वह जिसे मैंने समझा था एक मर्द।
महसूस होते हैं वे दर्द,
जब सर्दी के साथ है बरसात, गर्मी में भी एहसास होते हैं सर्द।
— Sima Chakrabarti

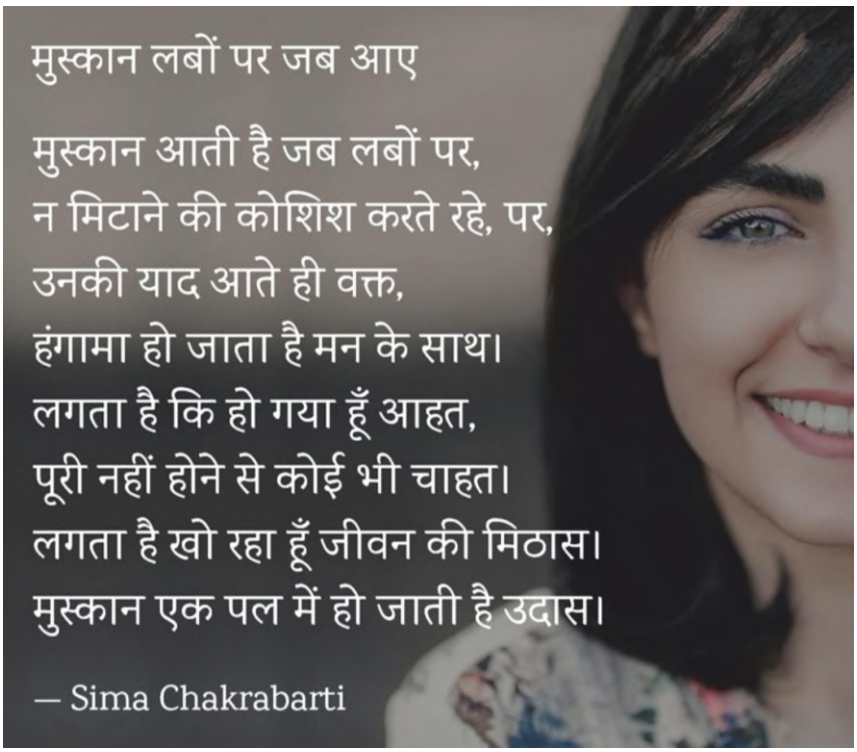
मुस्कान लबों पर जब आए
मुस्कान आती है जब लबों पर,
न मिटाने की कोशिश करते रहे, पर,
उनकी याद आते ही वक्त,
हंगामा हो जाता है मन के साथ।
लगता है कि हो गया हूँ आहत,
पूरी नहीं होने से कोई भी चाहत।
लगता है खो रहा हूँ जीवन की मिठास।
मुस्कान एक पल में हो जाती है उदास।
— Sima Chakrabarti

रोशन फिजाओं में
रोशन फिजाओं में खांब खिल उठता है
जैसे झरते हुए पर्णो पर हरियाली लग रहा है
जैसे अंधेरा से रौशनी हर तरफ फैली हुई है।
बहुत दिनों बाद आंखों से उसे देखता रहा हुं मैं।
महफिल में खुशीयों की इन्द्रधनुष में डुबता रहा हुं मैं
जैसे खांब का खुशबू मौसम में महसूस होता है
आपके साथ ब्रेक आप जब हो चुकी है
लम्बे का कारावास खत्म जो हुए है।
नया सूरज आज़ादी का दिया जैसा जल रहा है
जिसे देखने के लिये अब तक जिंदा हुं मैं।
— Sima Chakrabarti

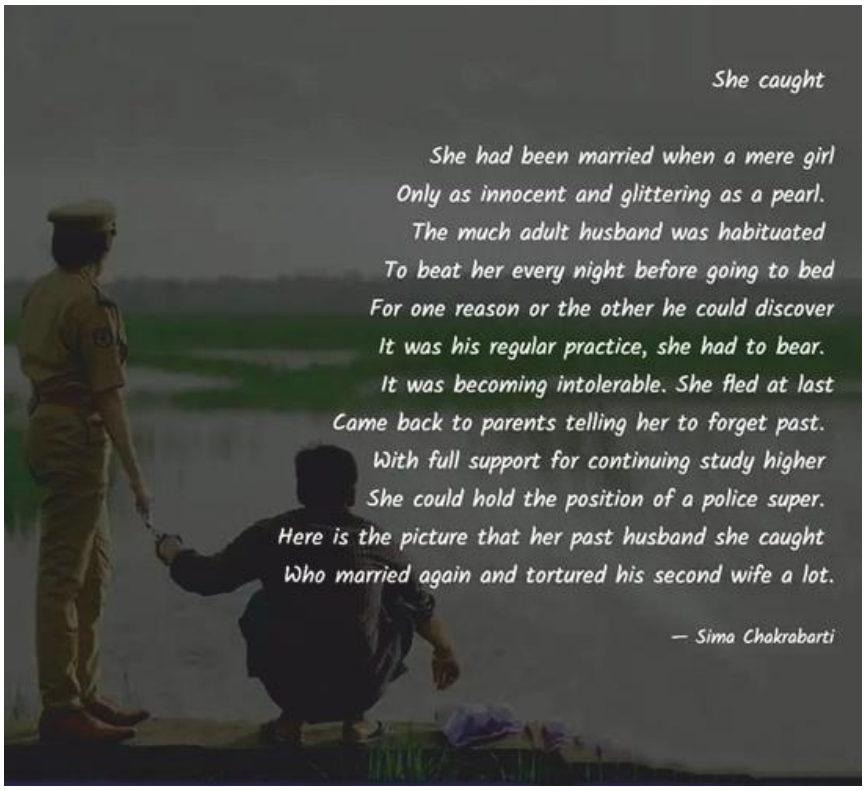
She caught
She had been married when a mere girl
Only as innocent and glittering as a pearl.
The much adult husband was habituated
To beat her every night before going to bed
For one reason or the other he could discover
It was his regular practice, she had to bear.
It was becoming intolerable. She fled at last
Came back to parents telling her to forget past.
With full support for continuing study higher
She could hold the position of a police super.
Here is the picture that her past husband she caught
Who married again and tortured his second wife a lot.
— Sima Chakrabarti

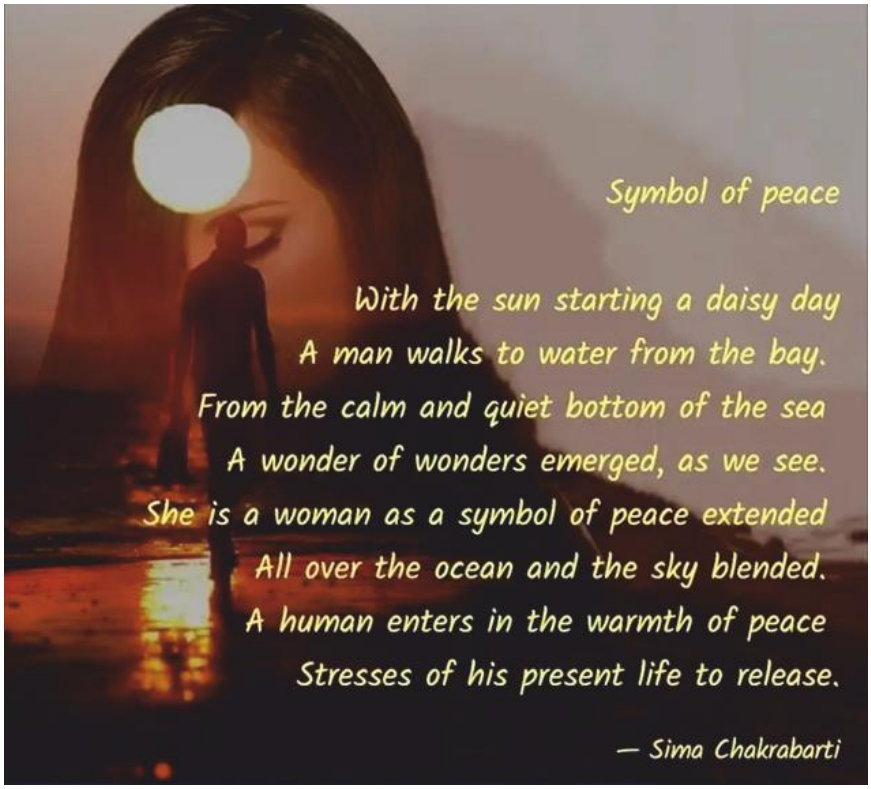
Symbol of peace
With the sun starting a daisy day
A man walks to water from the bay.
From the calm and quiet bottom of the sea
A wonder of wonders emerged, as we see.
She is a woman as a symbol of peace extended
All over the ocean and the sky blended.
A human enters in the warmth of peace
Stresses of his present life to release.
— Sima Chakrabarti

She loved to
She loved to believe herself to be a rose
Behaved so soft as her life goes.
People dishonored, tried to impose
their wishes cutting her nose
Against her dream that flows
Away, she couldn't even disclose.
Later she learned from heart base
To treat people more or less
As a wildly tough tigress
With a cruelty coated harsh voice
Any time anyone to address
Started to depress, no redress
Creating mental stress
In a personality emotionless
Yet most majestic in grace.
People in n out showed respects
Saluted her severally to impress
As much as possible always.
— Sima Chakrabarti

I am determined to
I am determined to
Fly high touching the blue
Spreading the message
Of freedom in a sausage
Digesting it as a whole
By purity of heart and soul.
I am determined to do
Enjoy happiness so true
Leading life simply through
Open sun, rain n dew.
— Sima Chakrabarti

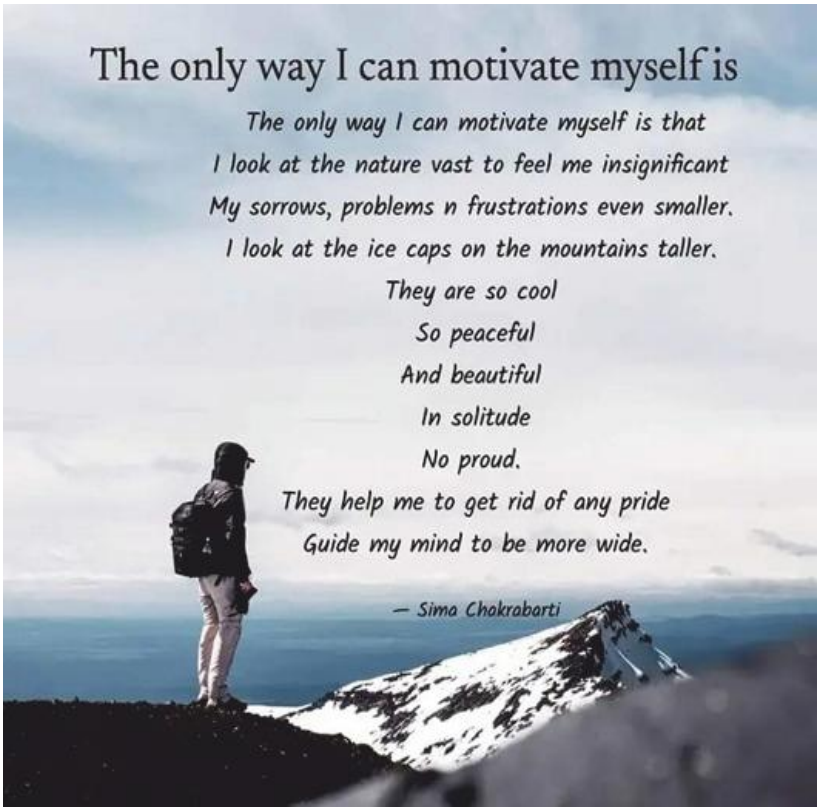
The only way I can motivate myself is
The only way I can motivate myself is that
I look at the nature vast to feel me insignificant
My sorrows, problems n frustrations even smaller.
I look at the ice caps on the mountains taller.
They are so cool
So peaceful
And beautiful
In solitude
No proud.
They help me to get rid of any pride
Guide my mind to be more wide.
— Sima Chakrabarti

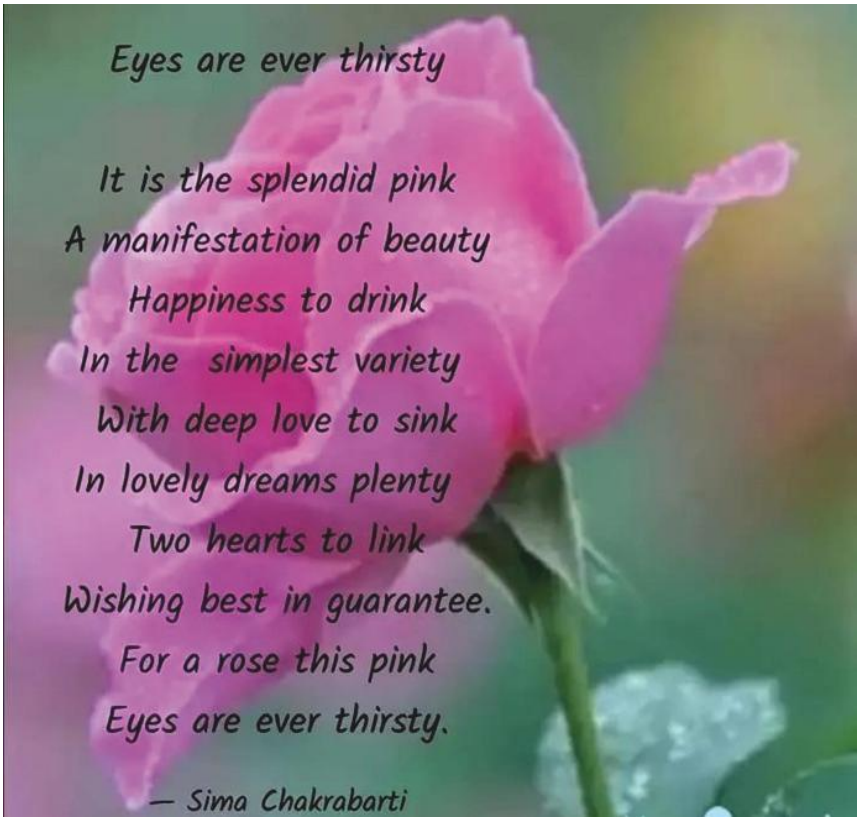
Eyes are ever thirsty
It is the splendid pink
A manifestation of beauty
Happiness to drink
In the simplest variety
With deep love to sink
In lovely dreams plenty
Two hearts to link
Wishing best in guarantee.
For a rose this pink
Eyes are ever thirsty.
— Sima Chakrabarti

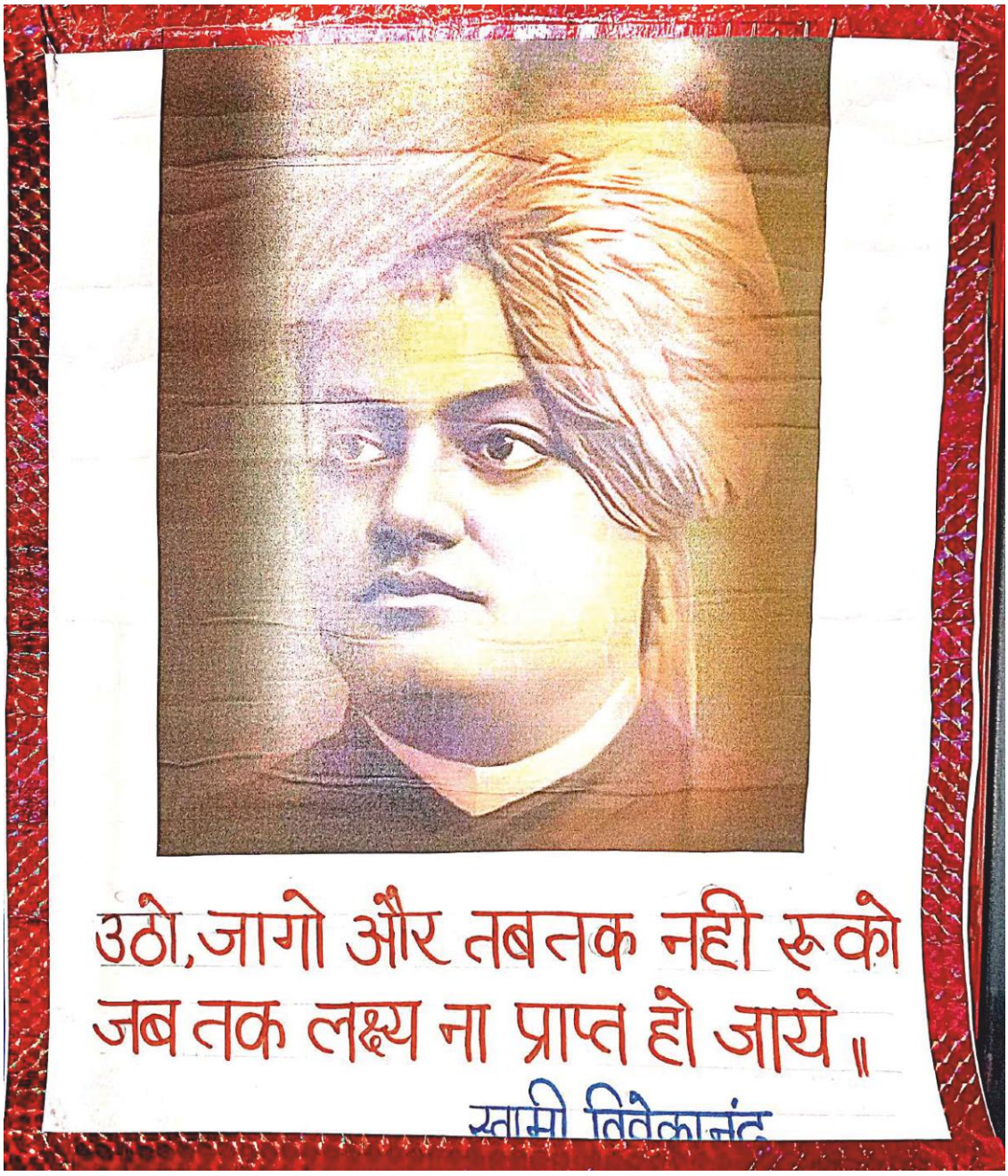
उठो, जागो और तबतक नही रुको
जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये ॥
स्वामी विवेकानंद

বসন্তের রবি

শ্রেয়সী রায়
সেম - ৬, সাম্মানিক বাংলা
রোল নং ৯৪১

on

‘এনেছে ওই শিরীষ বকুল আমের মুকুল সাজিখানি হাতে করে।
কবে যে সব ফুরিয়ে দেবে, চলে যাবে দিগন্তরে।।
পথিক, তোমায় আছে জানা, করব না গো তোমায় মানা-
যাবার বেলায় যেয়ো যেয়ো বিজয়মালা মাথায় পরে।।
তবু তুমি আছ যতক্ষণ
অসীম হয়ে ওঠে হিয়ায় তোমারি মিলন।
যখন যাবে তখন প্রাণে বিরহ মোর ভরবে গানে-
দূরের কথা সুরে বাজে সকল বেলা ব্যথায় ভ’রে।।’

কবিগুরু এই বসন্ত কালকে আমাদের কাছে এক আলাদা প্রেম আলাপে ভরিয়ে দিয়েছেন। এই বসন্তের সময় প্রকৃতির যে পরিবর্তন হয় তা যেন আমার মনকে আনন্দিত করে তোলে। বসন্তের আবেগে গাছের ছোট ছোট কচি সবুজ পাতা, আমের মুকুলের গন্ধ, কোকিলের কুহু কুহু সুরে নিজের গলা মেলানোর চেষ্টা করি। আমের মুকুলের গন্ধে মৌমাছিদের আনাগোনা দেখা দেয়। বসন্তকাল আমাদের বেরঙিন মনকে নানা রঙে রাঙিয়ে তোলে।

রবি ঠাকুরের বসন্তের গান

‘ওরে গৃহবাসী, খোল দ্বার খোল লাগলো যে দোল”

এই গানের মধ্যে দিয়ে রবি ঠাকুর যেন সকলকে বলেছেন দ্বার খুলে বসন্তের মিলন উৎসব করতে। যার মধ্যে কোনও জাতিভেদ নেই, মান অভিমান নেই, শুধু আছে আনন্দ আর রঙিন রঙের খেলায় মেতে ওঠা। ‘ওরে ভাই ফাগুন লেগেছে বনে বনে’ এই গানের মধ্যে দিয়ে রবি ঠাকুর প্রাকৃতিক সৌন্দর্যকে ফুটিয়ে তুলেছেন। এই বসন্তে মানুষের সঙ্গে সঙ্গে জীবমনের আনন্দের কথাও বলেছেন।

আমার প্রিয় কবিগুরুর তৃতীয় গানটি হল ‘‘ওগো বধূ সুন্দরী, তুমি মধু মঞ্জুরি”। এই গানটির মধ্যে মনে হয় যেন প্রকৃতিকে নববধূ রূপে তিনি বুঝিয়েছেন। নববধূরা যেরকম সুন্দর আবরণে আবৃত থাকে সেরম করেই যেন প্রকৃতিও নতুন আবরণে ঢেকে থাকে।

আমার বসন্তের আরেকটা পছন্দের গান ‘রাঙিয়ে দিয়ে যাও যাও গো এবার যাবার আগে’। এই গানটি আমার মনকে রঙে-রঙে রাঙিয়ে দিয়ে যায়।

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর জীবনের নানা প্রতিকূলতাকে গানের মাধ্যমে জয় করার মন্ত্র শেখান। রবির বসন্তের গান পরশমণির ছোঁয়ায় আমাদের জীবন ও প্রকৃতিকে দীক্ষিত করে নতুন ছন্দে ও নব আনন্দে।

অন্ধকারের ডায়েরি

রূপসা মন্ডল
সেমিস্টার - চতুর্থ
ইতিহাস বিভাগ

আচ্ছা নারী দিবস মানে কি? শুধুই কি বছরের একটা দিন নারীদের জন্য উদযাপন? Facebook ,এর story– whatsApp , এর status জুড়ে মেয়েদের নিয়ে, মেয়েদের সম্মান জানিয়ে শুধুই লেখালেখি? ব্যাস, তারপর? তারপর সেই নারীদের খোঁজ কি আর কেউ রাখে? পরিস্থিতির শিকার হয়ে কত মেয়েকেই যে অন্য পথ বেছে নিতে হয়, কাউকে জোর করে এই পথে টেনে নিয়ে আসা হয়, আবার কেউ কেউ নিজের ইচ্ছার বিরুদ্ধে বাধ্য হয়। এইভাবে কত মেয়েই তলিয়ে যায়ে এক গভীর অন্ধকারে, খোঁজ রাখে কেউ? হ্যাঁ হ্যাঁ আপনি ঠিক ধরেছেন, আমি সেই অন্ধকার পথের কথাই বলছি যেখানকার কথা শুনলে আপনি নাক সিটকোন। 'নিষিদ্ধপল্লী' বলে সমাজে যাকে সূচিত করা হয়। এই অন্ধকার পথ যে একদিন বেছে নিতে হবে এই ভাবনা কোন মেয়েই কোনদিনও ভাবতে পারে না। যেমন ভাবতে পারেনি পারুল। পারুল ছিল গ্রামের এক প্রাণোচ্ছল, সহজ-সরল মেয়ে। পড়াশোনা করতে চাইতো সে, পড়াশোনায় বেশ ভালও ছিল। তবে অভাবের তাড়নায় মাঝপথে পড়াশোনা ছাড়তে হয় তাকে। ইস্কুলের দিদিমনি শিখিয়েছিলেন ডায়ারি লেখা অভ্যাস করতে, প্রত্যেকদিনকার সব ঘটনা, ইচ্ছে, ভালো লাগা, খারাপ লাগা ডায়েরি বন্দি করতে। পারুল ভালোবাসতো ডাইরি লিখতে। পড়াশোনা ছাড়লেও ডায়েরি লেখা ছাড়েনি সে। কষ্ট হলেও টাকা জমিয়ে সে পাশের বাড়ির এক দাদাকে দিয়ে ডায়ারি আনাতো। নিজের মনের সব কথা লিখে রাখতো সে ডায়ারিতে। এখনও লেখে। তবে ও এখন সব কিছুই মাকে উদ্দেশ্য করে লেখে। কিন্তু কেন? কারণ ওর মা তো আর থাকে না ওর সাথে, কাছের মানুষ বলতে আর কেউই থাকে না ওর সাথে। এখন পারুল থাকে শহরে, কাছের মানুষদের থেকে অনেক দূরে। যেখানে সারাদিন নানা মানুষের সমাগম, চোখ ধাঁধানো আলো, সাজগোজ, কিন্তু এত কিছুর মাঝেও পারুল আজ একা। সে এখন গ্রামের সবুজ দেখতে পায় না, দেখতে পায় না ওর বন্ধুদের, দেখতে পায় না ওর মাকে। আচ্ছা, কাছের মানুষ বলতে আদৌও কেউ ছিল ওর কোনোদিন? জানা নেই এই প্রশ্নের উত্তর। এখানে ওকে কোন কিছুতেই আটকানোর কেউ নেই, আছে অবাধ স্বাধীনতা। কিন্তু এই স্বাধীনতা তো ও চায়নি। আজ ওর খুব পুরনো কথা মনে পড়ছে। দুপুরবেলা খাওয়া-দাওয়া শেষ করে বিছানায়ে শুয়ে পারুল লিখতে শুরু করে নিজের সব জমানো অভিমানের কথা ওর ডায়েরিতে।

মা কেমন আছো? বাবা, বোনু আর ভাই কেমন আছে? ভাই-এর চাকরি কেমন চলছে? শুনলাম ভাই-এর নাকি প্রোমোশন হয়েছে? ভাবা যায়, ভাই এখন নাকি একটা বড় অফিসের ম্যানেজার? আমার সেই ছোট্ট ভাইটা এখন কত বড় হয়েগেছে। ছোটো বেলায় আমার কাছে সে কতই না বায়না করত? মনে আছে মনে আছে মা, তুমি আর বাবা যখন বকতে তখন ছুটে আমার পেছনে এসে ঠিক লুকিয়ে পড়তো। আর বলতো 'দিদি, আমায় বাঁচা'। এখন আর দিদির কথা মনেও পড়ে না। বাবা সব ওষুধ গুলো ঠিক মতো খায় তো? দেখো, বাবার যা ভুলো মন, অনিয়ম যেন না করে। ঠিকঠাক যেন সব ওষুধ নিয়ম করে সময় মত খায়। বোনুর এখন নতুন সংসার, বিয়ের পর এসেছিল একবারও? আমার সেই ছোট্ট বোনটা আজ বিয়ে করে সংসার সামলাচ্ছে। তোমার মনে আছে মা, ছোট বেলায় আদো আদো গলায় কি সুন্দর করে আমায় দিদি দিদি বলে ডাকতো। আর বলতো ' দিদি, আমার বিয়েতে তুই আমায় সাজিয়ে দিবি।' কিন্তু আমি

তো জানতেই পারলাম না ওর বিয়ের কথা, আমায় জানাও নি তোমরা। কেন জানালে না মা? সম্পর্ক না থাকলেও আমার আদরের ছোট বোনটার বিয়ে হবে সেটাও কি জানার অধিকার আমার নেই? বোনও কি একবারও বলেনি আমার কথা মা? একবারও না? এত সহজেই তোমরা আমায় ভুলে যেতে পারলে? একটুও কষ্ট হল না তোমাদের? আমিও সেরকম, আমার মত একটা খারাপ মেয়ের জন্য তোমাদের কষ্ট কেন হবে? তোমাদের মনে তো আমার জন্যে শুধুই ঘৃণা আছে। আমি চলে আসার পর তোমরা আমার সাথে সমস্ত যোগাযোগই বন্ধ করে দিয়েছিলে। পুরনো ফোন নম্বর চেঞ্জ করে নতুন নম্বর নিয়েছিলে, সম্ভবত আমার সাথে যোগাযোগ বন্ধ করে দেওয়ার জন্যই নম্বরটা চেঞ্জ করেছিলে, সেটা বুঝতে পেরেছিলাম আমি। কিন্তু তাও অনেক কষ্টে তোমাদের নম্বর টা জোগাড় করে ফোন করেছিলাম একদিন। বাবা ফোনটা ধরেছিল। সেইদিন বাবার গলাটা শুনে কি যে শান্তি লাগছিল মা, তোমায় কি বলবো? কথা বলতে পারিনি আমি তখন। বাবা হ্যালো হ্যালো বলে যাচ্ছিল। কোনো উত্তর না পেয়ে ফোনটা কেটে দিয়েছিল। পরে আবার ফোন করলাম, আমি বললাম 'বাবা', সঙ্গে সঙ্গে বাবা বলল, 'তুই? তুই কেন ফোন করেছিস? কোথা থেকে পেলি নম্বরটা'? যতই হোক, শত ঘৃণা করলেও বাবা তার বড় মেয়ের গলা কিন্তু ভুলে যায়নি মা। আমি বললাম, 'তোমাদের কথা খুব মনে পড়ছিল গো'। বাবা আমায় থামিয়ে দিয়ে বলল 'চুপ কর, আর কোনো দিনও এখানে ফোন করবি না'। আমি কাঁদতে কাঁদতে বললাম 'বাবা আমায় একটু মায়ের সাথে কথা বলতে দাও, আমি আর কোনদিনও তোমাদের ফোন করে বিরক্ত করব না, শুধু একটিবারের জন্য মায়ের সাথে কথা বলতে দাও বাবা'। বাবা বলল 'আমায় আর কোন দিনও বাবা বলে ডাকবি না, আমাদের কাছে তুই মৃত',কথাটা বলেই রেখে দিল বাবা ফোনটা। আমি মাটিতে বসে পড়লাম, খুব কান্না পাচ্ছিলো সেদিন জানো মা? তুমিও কি একি কথা মনে করো? আমি কি তোমার কাছেও মৃত? আমার কি দোষ বলতো? আমি তো বিক্রি হতে চাইনি ওই নোংরা লোক গুলোর কাছে, তোমরা আমায় জোর করেছিলে, বিক্রি করে দিয়েছিলে ওই খারাপ লোক গুলোর কাছে শুধুমাত্র কিছু টাকা আর ভাইয়ের একটা চাকরির বিনিময়ে। তোমরা তোমাদের বড় মেয়ের থেকে টাকাকে বেশি প্রয়োজনীয় বলে মনে করেছিলে। আমি তো তোমাদের কাছে শুধুমাত্রই একটা বোঝা ছিলাম। ভেবেছিলে আমাকে বিক্রি করলে এই বোঝাটাও ঘাড় থেকে নামবে আর তার বদলে নগদ টাকা, ছেলের একটা চাকরি, এই সুবর্ণ সুযোগ কেউ কি ছাড়ে? তাই শুধুমাত্র তোমাদের জন্য আমায় আমার প্রিয় গ্রাম ছেড়ে চলে আসতে হল এই অন্ধকার জগতে। শুধু তোমাদের কথা ভেবে। আর তোমরাই এখন আমায় চিনতে পারছো না? আমারও স্বপ্ন ছিল, যে আমার একটা সংসার হবে। সেই স্বপ্ন এক নিমিষে শেষ হয়ে গেল। এখন আমার সংসার শুধু এই চার দেওয়ালের মধ্যে। যেখানে কোনও ভালোবাসা নেই, সুখ নেই, নেই কোন আনন্দ, নেই কোন কাছের মানুষ। আছে শুধু যন্ত্রণা আর কষ্ট। আমি এখানে ভাল আছি। এখানে রোজ ভালো ভালো খাবার খাই, নতুন নতুন জামা-কাপড় পড়ি, সাজার জিনিস আরও কত কি? জানো মা এখন আমি একটু একটু ইংরেজি শিখছি। শুধু একটাই আক্ষেপ, যে আমার সাথে তোমরা নেই, দিনের শেষে মাথায় হাত বুলিয়ে কেউ বলে না যে 'ক্লান্ত লাগছে? চিন্তা নেই, আমি আছি'। আমি তাও ভাল আছি মা, কারন তোমরা ভাল আছো। আচ্ছা, বাবার মতো তুমিও কী আমায় মনে রাখতে চাও না? আর ভালোবাসো না আমায়? তোমার কি আমার কথা একটুও মনে পড়ে না মা? কই আমি তো তোমাদের ভুলতে পারিনা। তোমরা আমার খোঁজ না রাখলেও আমি তোমাদের খোঁজ সবসময় রাখি। অনেক বার ভাবি জানো তো যে, তোমরা যখন আমায় মনে রাখোইনি তাহলে আমিও তোমাদের ভুলে যাব, ভাববো না তোমাদের কথা। কিন্তু যতবারই এই কথা ভাবি ততবারই তোমাদের মুখ গুলো চোখের সামনে ভেসে ওঠে। পারিনা আমি। আজ খুব মনে পরছিল তোমাদের কথা, আমার সেই ফেলে আসা দিনগুলোর কথা। আমি জানি আমার এই কথাগুলো তোমার কাছে কোনোদিনও পৌঁছবে না। বন্দি হয়ে থেকে যাবে এই ডায়েরির পাতায়ে সারাটা জীবন। পারুলের মতই কত মেয়ের স্বপ্ন, ইচ্ছে, কষ্ট, অভিমানের কথা গুলো শুধু ডায়রির

পাতাতেই বন্দি হয়ে থেকে যায়। কেউ কোনদিনও তাদের কথা জানতে পারেনা, জানে শুধু ওই ডায়েরির পাতা গুলো। কখনো তাদের কথা কেউ ভাবেনি। কত মেয়ের জীবন থেমে থাকে শুধুমাত্র চার দেওয়ালের মধ্যে একটা বদ্ধ ঘরে। দিনের বেলায় যেই মানুষ গুলো এই মেয়েগুলোর দিকে আঙুল তোলে, আবার তাদের মধ্যে অনেকেই রাতের অন্ধকারে লুকিয়ে লুকিয়ে যায় এই মেয়েগুলোর কাছে। সমাজে সেই মানুষ গুলো আবার পরিচিত 'ভদ্রলোক' হিসেবে। আর সেই মেয়ে গুলো, যারা প্রত্যেক দিন বাধ্য হয়ে নিজের শরীরকে বিলিয়ে দেয় সেই তথাকথিত ভদ্রলোকেদের কাছে, তারা 'নোংরা' এই সমাজে। নারী দিবস কি এই 'নোংরা' মেয়েদের জন্যও পালিত হয়? হয়তো হয়, তবে তা শুধু একদিনের জন্য, সেই একটা দিন লোক দেখিয়ে Social Media, এ বিভিন্ন Post– Video আরও কত কি করে মানুষ। যেন এই সমাজ কত উন্নত। কিন্তু ঠিক তারপরের দিন থেকেই এই একদিনের 'উন্নত' সমাজের চির অনুন্নত চেহারার বহিঃপ্রকাশ ঘটে। সত্যি, হাসি পায় এই মুখোশধারী সমাজের রূপ দেখে।

প্রকৃত ভাবে নারীদের সম্মান তখনই হবে যখন এই 'নোংরা' নারীদের কলঙ্কিত না করে তাদের এই অন্ধকার পথ থেকে বের করে নিয়ে আসা হবে, তাদের সমাজ বহির্ভূত না করে সমাজের অংশ বলেই গণ্য করা হবে, একটা নতুন জীবন তাদেরকে উপহার দেওয়া হবে যেখানে অন্ধকার না, থাকবে শুধুই আলোর হদিশ। তখনই হবে প্রকৃত নারী দিবস উদযাপন, তখনই প্রত্যেকটা দিন হবে নারীদের দিন।

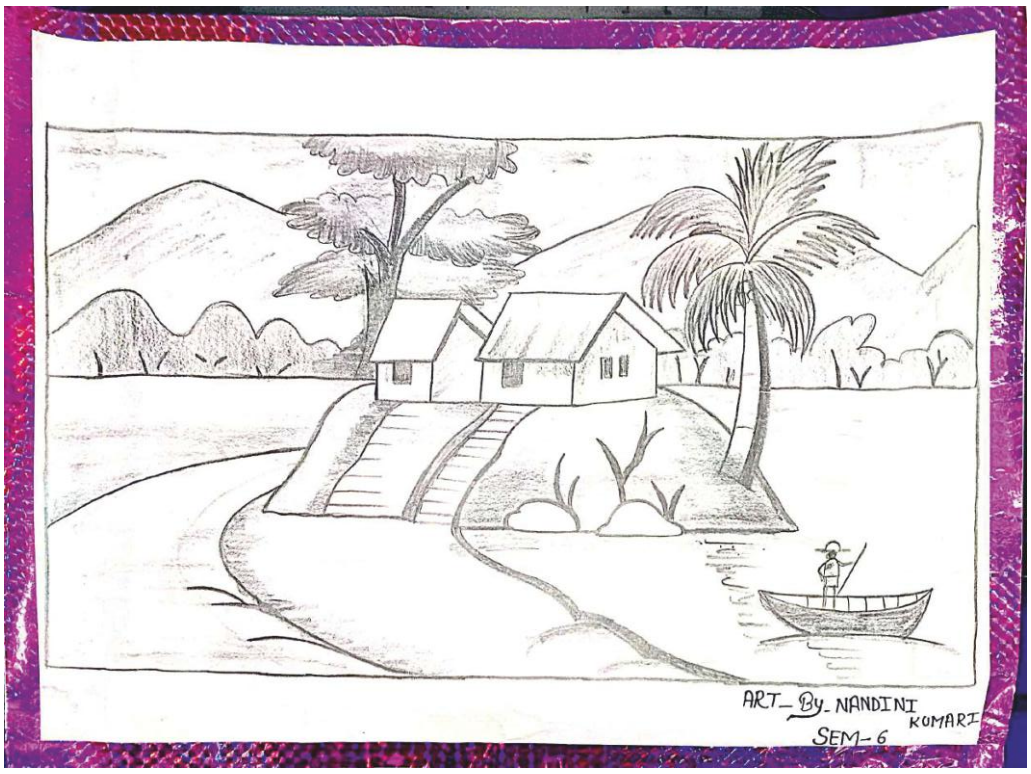

অপ্রাপ্তির লড়াই

সন্ধ্যা গায়ন
সেমিস্টার - ৬
ইতিহাস বিভাগ

প্রতিনিয়ত চলে জীবনযুদ্ধ
সইতে হয় অজস্র লাঞ্ছনা
সমাজ জানে না তোমার লড়াই
ভদ্রতার আড়ালে চলে নিস্তব্ধ বঞ্চনা

'হকার' শব্দটি শুনলেই আমাদের মুখে কেমন যেন মৃদু তাচ্ছিল্যের হাসি ফুটে ওঠে। তবে মাঝে মাঝে মনে হয় তাচ্ছিল্যের হাসিটা হয়তো নিজেদের দূষিত মনের ভিতরে থাকা কলুষতা গুলিকেই করা উচিত। যদি করতে পারতাম তাহলে হয়তো আজ সমাজের অনেক অদৃশ্য জঞ্জাল বিলীন হয়ে যেত।

হাওড়া স্টেশনের এমনই এক সামান্য হকার ধীরেন দাস। স্টেশনের অন্যান্য হকার ভাইয়েরা তাকে 'ধীরু' বলেই ডাকতে অভ্যস্ত। ধীরেনের বয়স প্রায় চল্লিশের দোরগোড়ায়।

ধীরেনের বয়স যখন সবে দশের গণ্ডি পেরিয়েছে তার কিছুদিনের মধ্যেই যেন কঠিন বাস্তব তার নৃশংস রূপ নিয়ে কন্টকাকীর্ণ পথ সজ্জিত করে রাখল ধীরেন ও তার মায়ের জন্য। সংসারের বটগাছ খানা প্রায় উপড়ে পড়তে চলেছে। হার্টের অসুখ এক দণ্ড সময় দিতে চায় না ধীরেনের বাবাকে। ধীরেন ও তার মা এতদিন যে শীতল ছায়ায় সুরক্ষিত ছিল সেই ছায়া যেন নিষ্ঠুর অভিশাপের দরুণ পরিণত হলো তপ্ত প্রখর রৌদ্রে।

বাবার অসুখের চিকিৎসার জন্য অর্থ সঞ্চয়ের তাগিদ ধীরেনকে টানলো কলকাতার দিকে। কলকাতা ধীরেনকে টানলেও হাওড়া স্টেশন ধীরেনকে নিজের গন্ডি পেরতে দিল না। ধীরেন থেকে গেল হাওড়া স্টেশনেই। কলকাতায় আসার পথে ধীরেনের হাতে যে সামান্য পুঁজি ছিল তা দিয়েই শুরু করল ঝালমুড়ি বিক্রি। ধীরেন ভেবেছিল এই ঝাল মুড়ি বিক্রির টাকা দিয়েই সে তার বাবার হার্টের চিকিৎসা করাবে। কিন্তু ভাগ্য যে কতটা নির্মম হতে পারে তা সম্পর্কে ধীরেনের অনভিজ্ঞ চিন্তার জগত বড়ই অজ্ঞাত ছিল। ধীরেন ঠিক যেদিন থেকে অর্থ সঞ্চয়ের তাগিদে 'উপার্জন' নামক যুদ্ধে নামল ঠিক তার ছয় দিন পর ধীরেনের বাবার হৃদযন্ত্র থামিয়ে দিল তার কাজ। জীবন স্রোত ধীরেনের বাবাকে ছুড়ে ফেলে দিল মৃত্যু নদীতে। বাবার মৃত্যুর খবর টুকুও সেদিন জানতে পারেনি ধীরেন। মাসখানেক পর ধীরেন হাতে কিছু টাকা নিয়ে ট্রেনে চাপল। গন্তব্য ছিল বাঁকুড়া জেলা। বাবার চিকিৎসার জন্য সামান্য টাকা জমিয়ে তার মনের অভ্যন্তরে যে আনন্দের রশ্মি খেলছিল তা ফুটে উঠলো তার মুখে। ব্যাঘ্রের ন্যায় ছুটন্ত ট্রেনের গতিও তার কাছে ধীর মনে হচ্ছিল। স্টেশনে নেমে হাতে কিছু ফল নিয়ে কুটির চালা ঘরে ঢুকতেই সে যখন তার বাবার মৃত্যুর খবর জানল, তার হৃদয়ের কাঁচ যেন ভেঙে টুকরো টুকরো হয়ে গেল। মৃন্ময় মূর্তির ন্যায় স্তব্ধতা গ্রাস করল ধীরেনকে। শুধু দুটি চোখের অশ্রুবিন্দু সচল রইল।

সেবার প্রায় সাত দিন সে তার নিজের মাটির ঘরে কাটিয়েছিল। প্রতিটি দিনই তার মায়ের গাল স্পর্শ করে যে নোনা জল বয়ে যেত সেই জল নিজের হাতে মুছিয়ে দিত ধীরেন। কারণ সে বুঝে গিয়েছিল কঠিন বাস্তবের রূপ এতটাই নির্মম যে পৃথিবীর সমগ্র জলরাশি একত্রিত করলেও তার কাঠিন্য ম্লান করা সম্ভব নয়।

সাত দিন পর ধীরেন ফিরে এল তার দ্বিতীয় মায়ের কাছে। হ্যাঁ মা-ই বটে। প্রথম যেদিন বাঁকুড়া থেকে ধীরেন চলে এসেছিল, এই হাওড়া স্টেশনই তাকে নিজের বুকে আশ্রয় দিয়েছিল, ঠিক যেমন ভাবে মা সন্তানকে তার কোলে আশ্রয় দেয়, লালন-পালন করে। এই স্টেশনও ধীরেনকে ঠিক সেইভাবেই আগলে রেখেছিল।

এইভাবেই দেখতে দেখতে কেটে গেল পঁচিশটা বছর। এখন ধীরেনের নতুন সংসার হয়েছে। কিন্তু সংসারের মায়াজাল ছিন্ন করে নিজের মা, স্ত্রী, ছোট্ট মেয়েকে কুটির চালা ঘরে ফেলে রেখেই ধীরেন হকারকে পরিবারের পেটের দায়ে পড়ে থাকতে হয় হাওড়া স্টেশনে। সহ্য করতে হয় কত লাঞ্ছনা, শুনতে হয় অজস্র গালিগালাজ যেগুলি সভ্যতা , ভদ্রতা ও সৌজন্যের মুখোশধারী লোকগুলোর মুখোশের আড়ালে থাকা নোংরা মুখ থেকে অবলীলায় আত্ম গর্বের সহিত বহির্ভূত হয়। ট্রেনের ভিতরে স্বল্প পরিসরে মুড়ির টিন কৌটো নিয়ে চলাচলের জন্য বা কিছু সময় দাঁড়ানোর জন্য বহু বিকৃত মুখের বিরক্তির বাণ নিঃশব্দে সহ্য করতে হয় ধীরেনকে। দুঃখের সামান্য আঁচও যাতে পরিবারের নাগাল না পায় তাই দুঃখের সকল তেজস্বী তাপ, সকল তাচ্ছিল্যের যন্ত্রণা ধীরেনকে সহ্য করতে হয়।

ধীরেনের মেয়ের নাম আলো। ঘন অন্ধকারাচ্ছন্ন জঙ্গলে পাতার ফাঁক দিয়ে যে সূর্য রশ্মি প্রবেশ করে ঠিক সেই রশ্মির মতই প্রাণোচ্ছল আলো।

মেয়ের থেকে দূরে থাকার যন্ত্রণা ধীরেনকে ক্ষতবিক্ষত করে। তবে আলোর হাতের একটি চুড়ি সেই যন্ত্রণায় কিছুটা হলেও স্বস্তির প্রলেপ দিয়েছে। সারাদিন পাহাড় সমান ক্লান্তি, পরিশ্রমের পর ধীরেন যখন চুড়িখানা হাতে নেয় তখন তার মনে হয় মেয়ে যেন তার নরম আঙুল গুলির স্পর্শে ধীরেনকে পৃথিবীর সকল আরাম, সকল শান্তির জোয়ারে ভাসিয়ে নিয়ে যেতে চায়।

একদিন সকালে ধীরেন মুড়ির টিন কৌটো নিয়ে দাঁড়িয়ে আছে প্লাটফর্মে।। তার চঞ্চল চোখ দুটি হঠাৎই থেমে গেল একটি বাচ্চা মেয়েকে দেখে। বাচ্চা মেয়েটির সাথে রয়েছে তার মা। মেয়েটির মুখের আদলে ধীরেন খুঁজে পেলে আলোকে। বাচ্চা মেয়েটির মুখের মায়া ধীরেনকে যেন এক অসম্ভব আবেগপূর্ণ ভালোবাসার জালে জড়িয়ে ফেলল। ধীরে ধীরে মেয়েটির দিকে এগিয়ে গেল ধীরেন। মেয়েটির পাশে হাঁটু গেড়ে বসে এক দৃষ্টিতে তাকিয়ে থাকলো মেয়েটির দিকে। সে যেন আলোর চঞ্চলতা, বায়না, অভিমান, খিলখিলে হাসি সবটাই ওই স্নিগ্ধ মুখে দেখতে পাচ্ছে। হঠাৎই বাচ্চা মেয়েটির মা তার মেয়ের দিকে স্তব্ধ দৃষ্টিতে তাকিয়ে থাকা ধীরেনকে লক্ষ্য করল এবং কোন কিছু না ভেবেই তারস্বরে চিৎকার করে ধীরেনের দিকে চোরের তকমা ছুঁড়ে দিল। ভদ্রমহিলা তার চিৎকারে খানদশেক লোকও সেখানে জড়ো করে ফেললেন। এতক্ষণ ধীরেন খোলা চোখে যে স্বপ্ন দেখছিল সেই স্বপ্ন ভেঙে এবার সে ফিরে এলো বাস্তবে। হ্যাঁ সে বাস্তব যা কিনা হকার ধীরেনের পিতৃস্নেহ বুঝলো না। পিতার ন্যায় ভালবাসাকে 'চোর' নামক কলঙ্ক উপহার দিল। কেউ কেউ বলে উঠলেন 'এই হকার গুলো এখন দেখছি দিনে-দুপুরে বাচ্চা চুরি করছে'। কেউ কেউ তো আবার মারতেও ছুটে এলেন। সে যাত্রায় অবশ্য হাওড়া স্টেশনের অন্যান্য হকার বন্ধুরাই ধীরেনকে রক্ষা করেছিল।

ধীরেন রোজ তার বাড়িতে ফোন করে। সকলের ভালো-মন্দ, চাওয়া-পাওয়ার হিসেবও রাখে। একদিন ফোনের ওপার থেকে আধো আধো গলায় ভেসে এলো এক আবদার। আলোর দৃঢ় বিশ্বাস তার বাবা যে শহরে থাকে সেই শহরে অনেক সুন্দর সুন্দর পুতুল পাওয়া যায়। তাই সে বাবার কাছে একটি পুতুলেরই আবদার করে বসলো। হকার ধীরেন সবসময় তার অক্ষমতাকে বিকৃত মুখে বিদ্রূপ করে মেয়ের আবদার গুলিকে পূর্ণতা দিয়েছে। এবারও তার অন্যথা হলো না।

ধীরেন রোজ তার উপার্জনের টাকাগুলি গোনে। আর প্রায় রোজই তার মুখের হাসি একটু একটু করে চওড়া হয়। কারণ সে মেয়ের জন্য পুতুল কেনার টাকা একটু একটু করে প্রায় জমিয়েই ফেলেছে।। ধীরেন যখন দুপুরবেলা রাস্তার ধারে চট টাঙ্গানো হোটেলে খেতে যায় তখন হোটেলের মালিক ধীরেনকে মাছ দেওয়ার কথা জিজ্ঞেস করলে ধীরেন প্রতিবারই একবার হাসে আর শান্ত গলায় না করে দেয়। অথচ এই শহরেই আমাদের মত কত মানুষ রয়েছেন যাদের খাওয়ার থালায় একবেলা আমিষ না পড়লে তারা খেতেই পারে না। অন্যদিকে হকার ধীরেনের মতো কত বাবা রয়েছেন যারা প্রতিদিন, প্রতিনিয়ত পরিবারের জন্য নিজের শখ আহ্লাদ গুলিকে ত্যাগ করে যাচ্ছেন।

প্রায় দু সপ্তাহ ধরে একটু একটু করে টাকা জমিয়ে ধীরেন মেয়ের জন্য পুতুল কিনতে পারে এবং ধন্যবাদ জানায় ঈশ্বরকে। একটুও বিলম্ব না করে ঠিক পরের দিনই ধীরেন বাঁকুড়ার উদ্দেশ্যে উঠে পড়ে ট্রেনে। তবে আজ তার হাতে মুড়ির টিন কৌটো নেই, আছে মেয়ের জন্য কেনা পুতুলখানি। তিন - চার ঘন্টার এই ট্রেন সফরে ধীরেনের ভাবনা জুড়ে শুধুই তার মেয়ে বিরাজ করছে। সে মনে মনে ভেবে ফেলেছে বাড়ি গিয়ে তার মেয়ের হাতে প্রথমে পুতুলটি দেবে না। এরপর মেয়ের গাল গুলো যখন অভিমানে ফুলে উঠবে তখনই মেয়েকে আদর করে পুতুলটি সে তার মেয়ের হাতে তুলে দেবে। ধীরেন ভেবে নিয়েছে এবার সে মেয়ের আঙুল ধরে শালুক দিঘির এপারে দাঁড়িয়ে ওপারের সূর্যাস্ত দেখবে।

নিজের ভাবনার জগতে হারিয়ে যাওয়া ধীরেনকে নিয়ে ট্রেন পৌঁছে গেল বাঁকুড়া। ট্রেন থেকে নেমে স্টেশনের বাইরে এসে মেয়ের জন্য গোটা পাঁচেক কমলালেবু নিয়ে ধীরেন বসে পড়ল একটি ভ্যান রিক্সায়। রিক্সা কিছুদূর চলার পর ধীরেনের বাড়ি থেকে ফোন আসে। ফোনের ওপার থেকে আধো আধো কণ্ঠে শোনা যায়, ত্বাবা, তুমি কখন আসবে ?দ ধীরেন জানিয়ে দেয় আর মিনিট দশেকের মধ্যে এসে পৌঁছে যাবে।

হায়রে ধীরে হকার ! সে জানে না আগামী দশ মিনিট সময়টুকুও তোমার হাতে নেই। পৃথিবীর ওপারের মৃত্যুজগৎ তোমার জন্য উন্মুক্ত দ্বারে অপেক্ষা করছে। চোখের নিমেষে ধীরেনের প্রাণ যেন জীবনের বেড়াজাল পেরিয়ে মৃত্যুর খাদে আছড়ে পড়ল।

মেয়ের ফোন কাটার পরই ধীরেন যে ভ্যান রিক্সায় বসে বাড়ি যাচ্ছিল, পিছন দিক থেকে একটি বাস এসে সেই ভ্যান রিক্সায় ধাক্কা দেয়। ধীরেন, রিকশা চালক এবং আরো দুজন যাত্রীদের ওপর দিয়ে বাসের চাকাগুলি সজোরে গড়িয়ে যায়। ক্ষতবিক্ষত হয়ে যায় প্রতিটি দেহ। ধীরেনের বুক চিরে রক্তাক্ত হৃৎপিণ্ড শরীর থেকে আলাদা হয়ে যায়। দেহের প্রায় প্রতিটি অংশের মাংস বাসের চাকার তলায় পিষে যায়। তাজা গরম রক্ত আগ্নেয়গিরির লাভার মতো ছড়িয়ে পরে চারিদিকে। ধীরেনের চোখের মণিগুলি প্রায় উপড়ে এসেছে। চেনা যায় না তার মুখ। শুধু দেখা যায় বাসের আঘাতে অর্ধেক ছিঁড়ে যাওয়া রক্তাক্ত ঠোঁট দুটি কাঁপছে। হয়তো শেষে একটু জলের প্রত্যাশা করেছিল ধীরেনের পিষে যাওয়া রক্তাক্ত দেহ। মেয়ের জন্য কেনা পুতুল খানা আর মেয়ের হাতে তুলে দেওয়া হলো না ধীরেনের। শালুক দিঘির ওপারে রোজ সূর্যাস্ত হবে কিন্তু আর কোনদিনই মেয়ের হাত ধরতে পারবেনা ধীরেন, দেখাও হবে না শালুক দিঘির ওপারে সূর্যাস্ত।

ছোট্ট আলো, রক্তাক্ত ক্ষতবিক্ষত বাবার মুখ সে চিনতে পারেনি সেদিন। সে জানে না মৃত্যু কি ? জানেনা সময়ের হিসেব। কত সময়, কতগুলি দিন পার হয়ে যায় সে শুধুই তার মাকে জিজ্ঞাসা করে 'মা দশ মিনিট হতে আর কত সময় লাগবে ?'

এমন কত হকার আমাদের লাঞ্ছনা, বঞ্চনা, বিদ্রূপ, তাচ্ছিল্য, ঘৃণা এসবের পাহাড় মাথায় তুলে নিয়ে আর পরিবারের দায়িত্বে দুটি কাঁধকে ভারাক্রান্ত করে প্রতিদিন লড়াই চালিয়ে যাচ্ছেন। কেউ কেউ ধীরেনের মতো জীবনের যুদ্ধক্ষেত্রে প্রাণ হারাচ্ছেন। আমরা তাদের জীবন যুদ্ধ জানিনা শুধু 'ব্যর্থ, মৃত সৈনিকদের' তকমা লাগিয়ে দিই।

হয়তো সকলের জীবনের যুদ্ধ মুখর অধ্যায় আমরা জানতে পারি না, জানা সম্ভবও নয়। কিন্তু জীবন মানেই তো যুদ্ধ। বিশেষত যারা প্রতিদিন, প্রতিনিয়ত স্রোতের প্রতিকূলে দাঁড়িয়ে অভাব, অপ্রাপ্তির সঙ্গে যুদ্ধ করে বেঁচে আছে তারা তো এক একজন বড় যোদ্ধা। কেন আমরা তাদের অবজ্ঞা করি ? বরং আমাদের উচিত তাদের যুদ্ধকে সম্মান জানানো। তাদের প্রতিদিনের লড়াই থেকে শিক্ষা নেওয়া, যে শিক্ষা আমাদের জীবনের প্রতিটি অপ্রাপ্তির সামনে মাথা নীচু করে নয় বরং প্রকাণ্ড পর্বতের ন্যায় উচ্চশিরে দাঁড়াতে শেখাবে।

আমাদের প্রিয় অধ্যক্ষা মহাশয়া

সন্ধ্যা গায়ন
সেমিস্টার - ৬
ইতিহাস বিভাগ

আমাদের এই মহৎ শিক্ষা প্রতিষ্ঠান
তার প্রদীপশিখা আজ আরও বেশি আলোকিত
আপনার হাতে বেড়েছে তার জ্যোতি
মুকুটে জুড়েছে নতুন পালক, নতুনভাবে পল্লবিত ।।
সে যেন এক জ্ঞানের ভান্ডার
পরিপূর্ণ বৃক্ষের ন্যায় বিকশিত
আজ তার প্রতিটি শাখায় পুষ্প জোয়ার
আপনার হাত ধরেই সে উচ্চশিরে পুরস্কৃত ।।
পেরিয়েছে সে আজ সকল সীমারেখা
ঘুচিয়ে দিয়েছে মলিন অন্ধকারের অজ্ঞানতা
বুনে চলেছে হাজারো ছাত্রীর প্রত্যাশিত স্বপ্ন
আপনার জোরেই মুছে গিয়েছে তার সকল কলুষতা ।।

গল্পের নাম ভগবান যা করেন মঙ্গলের জন্য করেন

সুস্মিতা দাস
বিভাগ ইতিহাস সাম্মানিক
রোল নম্বর ৫০২
প্রাক্তন ছাত্রী (২০১৮-২০২১)

কলকাতার এক নিম্নমধ্যবিত্ত পরিবারের মেয়ে রিয়া গ্র্যাজুয়েশন কমপ্লিট করে একটা কোম্পানিতে কাজে জয়েন করে। রিয়া খুব মিশুকে প্রকৃতির মেয়ে তাই সে সহজেই নতুন পরিবেশে মানিয়ে নিতে পারে। নতুন অফিসে প্রথম দিনেই সে দু চারটে বন্ধু বানিয়ে নেয়।

অফিসে তার আলাপ হয় নীলের সাথে। নীল প্রায় এক বছর ধরে এই কোম্পানিতে কাজ করছে তাই এক্সপেরিয়েন্স এর দিক থেকে নীল তার সিনিয়র।

নীলও খুব হাসিখুশি মিশুকে প্রকৃতির ছেলে অন্য কলিগদের তুলনায় নীলের সাথে রিয়ার সম্পর্ক অল্প সময়ের মধ্যেই বেশি ভালো হয়ে উঠেছিল। কাজে কোনো সমস্যা হলে একে অপরকে সাহায্য করা, লাঞ্চ টাইমে একসাথে লাঞ্চ করা, কফি ব্রেকে একটু গল্প আড্ডা এই ভাবেই দিনে দিনে দুজনের বন্ধুত্ব গভীর হয়ে উঠছিল।

রিয়া নিজের বেস্ট ফ্রেন্ড জয়িতাকে নিজের সব কথা শেয়ার করতো।

অফিস থেকে ফিরে একদিন রাতে যখন রিয়া জয়িতার সাথে ফোন করে গল্প করছিল তখন জয়িতা বললো, ‘‘ভাই একটা কথা বলি ??’’

‘‘ হ্যাঁ বল..’’

‘‘তোর অফিসের যে ফ্রেন্ডটা আছে নীল.. যার গল্প তুই রোজ আমার সাথে করিস.. তোর মনে কি তার জন্য কোনো অনুভূতি আছে??’’

‘‘এই জন্যই বলি তুই শুধু আমার বেস্ট ফ্রেন্ড নয় আমার বোন.. তুই কি করে বুঝলি..’’

‘‘আমি সব বুঝি.. সব সময় ওর গল্প.. নীল এত ভালো.. নীল ভালো গান করে.. খুব ভালো রান্না করে.. খুব সুইট.. আজকে একসাথে একটা নতুন ক্যাফেতে গিয়েছিলাম.. সব সময় ওরই চর্চা.. বুঝবো তো বটেই..’’

‘‘ এবার কি করি বলতো.. ??’’

‘‘ওর কি কোনো গার্লফ্রেন্ড আছে ?? ’’

‘‘মনে তো হয় না.. আমি ডিরেক্ট কোনো দিন জিজ্ঞেস করিনি.. তবে গার্লফ্রেন্ড থাকলে কি আমার সাথে এত গল্প করত.. অফিসে ফ্রী টাইম পেলে নিশ্চই গার্লফ্রেন্ডকে সময় দিত..’’

‘‘তাহলে.. ঠিক আছে.. অফিসে অন্য মেয়েদের সাথে কেমন আচরণ তার ?? মানে তোর সাথে যেরকম ফ্রেন্ডলী সবার সাথেও কি তাই??’’

‘‘না না অন্য মেয়েদের সাথেও ভালো ভাবেই কথা বলে কিন্তু আমার সাথেই বেশি ফ্রেন্ডলী..’’

‘‘ তাহলে কি ছেলেটার মনেও তোকে নিয়ে কোনো অনুভূতি জেগেছে নাকি ? ?’’

‘‘ মনে তো হচ্ছে তাই.. কিন্তু আমার ধারণা যদি ভুল হয়..’’

‘‘তোর কাছে ওর গল্প শুনে তো মনে হয় সেও তোকে পছন্দ করে.. একবার এই নিয়ে কথা বলে দেখ কি হয়.. তবে আমি তোর জন্য খুব খুশি.. ফাইনালি তোর কাউকে ভালো লেগেছে.. ।’’

‘‘এই জয়িতা.. আমি কি তাহলে নীলকে নিজের মনের কথা বলে দেবো ? ?’’

‘‘হ্যাঁ বল কিন্তু আগেই হুট করে বলে দিসনা.. আরেকটু মন জয় কর.. এক কাজ কর.. তুই বললি এর আগের দিন লাঞ্চে ছেলেটা তোর জন্য বিরিয়ানী বানিয়ে এনেছিল যেহেতু তুই বিরিয়ানী খেতে ভালোবাসিস.. তো তুইও এবার ওর পছন্দের কিছু খাবার বানিয়ে নিয়ে যা.. কালকে লাঞ্চ টাইমে সেটা খাওয়া আর মনের কথা বলে দে.. দেখ কি হয়..’’

নীল যেহেতু চাইনিস খাবার খেতে ভালোবাসে তাই সকাল সকাল ঘুম থেকে উঠে তার জন্য চিলি চিকেন আর ফ্রাইড রাইস বানিয়ে নিয়ে গেলো রিয়া। রিয়া সকাল থেকেই সেদিন একটু নার্ভাস ছিল তাই নীল যখনই তার সাথে কথা বলতে আসছিল তখনই সে একটু কম কম কথা বলছিল বা কাজের বাহানা করে পালিয়ে যাচ্ছিল। অনেক সাহস যুগিয়ে লাঞ্চ টাইমে যখন রিয়া নিজের মনের কথা বলার জন্য নীলকে খুঁজছিল তখন সে শুনতে পেলো..

নীল নিজের আরেক কলিগের সাথে আলোচনা করছিলো যে , ‘‘ভাই রিয়ার সকাল থেকে কি হয়েছে বলতো.. বেশি পাত্তা দিচ্ছে না আমাকে..’’

‘‘ রিয়া তোকে পাত্তা দিচ্ছে না.. তো তাতে তোর প্রবলেম কোথায় ? ? পছন্দ করিস নাকি ? ?’’

‘‘ আরে.. পাগল নাকি.. মেয়েটা খুব বোকা..’’

‘‘ কেনো ? ?’’

‘‘একটু হেসে মিষ্টি করে কথা বললেই গলে যায়.. যা বলি তাই করে দেয়.. আমি তো নিজের অনেক কাজ ওকে দিয়ে করিয়ে নি.. বদলে একটু মাঝে মধ্যে কফি খাইয়ে দি.. একটু ভালোমন্দ গল্প করি একটু চিল করি.. সকাল থেকে ভাবছি একটা দরকারি কাজ করাবো ওকে দিয়ে.. কিন্তু মেয়েটা পাত্তাই দিচ্ছে না..’’

‘‘ আর কত দিন মানুষকে বোকা বানাবি.. তোর চালাকি বুঝে গেছে তাই তোকে পাত্তা দিচ্ছে না..’’

‘‘ আরে.. না না মেয়েটা মনে মনে আমাকে খুব পছন্দ করে..’’

‘‘ তাই.. ? ? কোনো দিন যদি তোকে মনের কথা বলে দেয়.. তাহলে কি করবি.. ? ?’’

‘‘ ফ্যামিলি প্রেসার আছে মাথায় অনেক.. এই মুহূর্তে কাউকে নিজের জীবনে জায়গা দেওয়া সম্ভব নয়.. এই বলে কাটিয়ে দেবো.. এখন নয়তো পরে সুযোগ দেবো এই আশায় আরও হেল্প করবে আমার.. আর এমনিতেও রিয়া আমার টাইপের না.. ওকে দেখেছিস কেমন দেখতে.. আমার মতো গুড লুকিং ছেলের কথা ও.. ভাবে কি করে.. একে তো মোটা তার ওপর গায়ের রং চাপা..একটু যদি রোগা আরেকটু ফর্সা হতো তাহলে ভেবে দেখতাম..’’

‘‘ তুই ভাই খুব শয়তান..’’

‘‘ জানিসই তো আমি এমনই..’’

এসব শুনে রিয়ার মনটা ভেঙে গেলো..

রিয়া সঙ্গে সঙ্গে জয়িতাকে ফোন করে এসব বিষয় কান্নাকাটি করতে থাকলো..

‘‘আমি কার কি ক্ষতি করেছি বল ?? আমার সাথে ভগবান এরকম কেনো করলেন.. কেনো ওই ভুল মানুষটা আমার জীবনে এলো.. কেনো আমি এত কষ্ট পাচ্ছি.. ভাই আমি এই কাজ ছেড়ে দেবো..’’

‘‘না একদম না.. তোকে স্ট্রং হতে হবে.. এবার কথা বলতে এলেই কথা শুনিয়ে দিবি.. দেখবি আর কিছু বলার মুখ থাকবে না.. এসব মানুষদের জন্য তুই কেনো কাজ ছাড়বি ?? আর কর্পোরেট জগৎ এরকমই হয় এতে তোর একটা শিক্ষা হলো.. কাউকে ভালো ভাবার আগে তুই একবার হলেও নিজের মনের বদলে নিজের ব্রেইন ব্যবহার করবি.. এটা স্কুল কলেজ নয় রে.. ভগবান যা করেন মঙ্গলের জন্য করেন.. সময় থাকতে থাকতে তুই সত্যি জানতে পারলি.. কত ভালো হলো বলত.. এখন তোর সাময়িক কষ্ট হচ্ছে কিন্তু ভগবানকে ধন্যবাদ জানা.. যে তুই সত্যিটা এত তাড়াতাড়ি জেনে গেলি.. বেঁচে গেলি.. আর তুই এর থেকেও ভালো ছেলের যোগ্য.. যে তোকে সত্যি ভালোবাসবে.. তুই যেমন ঠিক তেমন ভাবেই তোকে আপন করে নেবে.. সে নিজেই তোর জীবনে চলে আসবে ভগবানের ওপর বিশ্বাস রাখ..’’

এমন সময় নীল পেছন থেকে এসে বলল, ‘‘ রিয়া.. আমাকে একটা কাজ করে দিবি.. ??’’

‘‘ না আমি কোনো কাজ করতে পারবো না.. আর হ্যাঁ.. মিস্টার নীল আমি বোকা নয়.. আসলে আমি একটা ভালো মনের মানুষ তাই আমার মনে হয় আমার আশেপাশে সবাই ভালো মানুষ.. কিন্তু আমি ভুল প্রমাণিত হয়েছি.. আর নয়.. আমি সব শুনে নিয়েছি.. আর আমার সাথে কথা বলার চেষ্টা করবেন না.. নয়তো ম্যাডামের কাছে আপনার নামে কমপ্লেইন করতে বাধ্য হবো..’’

জয়িতার কথা মতো রিয়া অনেক সাহস যুগিয়ে এত গুলো কথা নীলকে শুনিয়ে দিলো।

তারপর নীল নিজের মতো আর রিয়া নিজের মতো অফিসে কাজ করতে থাকলো.. অচেনা কলিগদের মতোই তাদের দুজনের সম্পর্কটুকু রয়ে গিয়েছিল।

এই ভাবেই দেখতে দেখতে দুমাস কেটে গেলো রিয়া আগের তুলনায় নিজেকে অনেকটা সামলে নিয়েছিল।

একদিন রিয়ার বাড়িতে রিয়ার জন্য এক বিয়ের প্রস্তাব এলো।

রিয়া তো বিয়ের কথা উঠলেই খুব রেগে যেতো.. আগেই সে বলত যে সে এখনও চাকরি করবে ২৫ বছর বয়সের আগে সে বিয়ের কথা ভাববে না কিন্তু রিয়ার মা তাকে অনেক বুঝিয়ে বুঝিয়ে ছেলেটার সাথে একবার দেখা করার জন্য রাজি করলো।

সেই ছেলের পরিবার রিয়ার বাড়িতে এলো। সবারই রিয়াকে মোটামুটি পছন্দ হলো। ছেলের সাথে যখন রিয়াকে একা কথা বলার সুযোগ দেওয়া হলো তখন রিয়া বললো, ‘‘আচ্ছা আপনি আমার ছবি দেখেছেন.. আপনাকে তো দেখতে বেশ ভালই.. তাহলে আপনি আমার মতো মোটা আর চাপা গায়ের রঙের মেয়েকে দেখতে এলেন কেনো ?? কোনো ফ্যামিলি প্রেসার নাকি.. ??’’

‘‘দেখুন আপনার ছবি দেখে আমার আপনাকে ভদ্র সভ্য মেয়ে মনে হয়েছে তাই আমি এখানে এসেছি। আমার কাছে রূপ নয় আপনার ব্যবহার আর মনটা গুরুত্বপূর্ণ তাই আপনাকে আরেকটু চিনতে চাই জানতে চাই.. আর ফ্যামিলিতে আমার ইচ্ছা অনিচ্ছা কে গুরুত্ব দেওয়া হয়। তাই ফ্যামিলি প্রেসারের কোনো ব্যপার নেই।’’

‘‘ আমি বিয়ের পরও আমার কাজটা ছাড়বো না..।’’

‘‘ কোনো অসুবিধা নেই.. সেটা আপনার লাইফ আপনার সিদ্ধান্ত..’’

‘‘ পরবর্তীকালে আপনার পরিবারের কোনো সমস্যা হবে না তো এই নিয়ে ? ? ”

‘‘ আমার পরিবারে আমার সিদ্ধান্তকে গুরুত্ব দেওয়া হয়.. তো এই দিক থেকে আপনি নিশ্চিন্ত থাকুন।”

এই ছিল রবির সাথে রিয়ার প্রথম আলাপ.. প্রথম আলাপেই দুজনের কথাবার্তা আর ব্যবহার দুজনের মন জয় করার জন্য যথেষ্ট ছিল।

তার ঠিক এক বছর পর রবি আর রিয়ার বিয়ে হলো। জয়িতা বিয়ে অ্যাটেন্ড করতে এসে রিয়াকে কানে কানে বলল,ক্ষ্ম শুনলাম.. জামাই বাবু নাকি তোকে খুব ভালোবাসে.. তোকে চোখে হারায়.. বিয়ে বাড়িতে সবাই তাই আলোচনা করছে..”

‘‘তোকে আর আলাদা করে কি বলবো বল.. তুই তো সবই জানিস..”

‘‘হ্যাঁ বলেছিলাম না.. ভগবানের ওপর বিশ্বাস রাখ.. তুই ভালো সেখানে ভগবান তোর সাথে কখনও খারাপ করতে পারেন না.. তুই অনেক ভালো মানুষের যোগ্য.. পেলি তো তাহলে তুই তোর মনের মতো মানুষ..”

‘‘হ্যাঁ..”

‘‘ ভগবান যা করেন মঙ্গলের জন্যই করেন..”

শেষ থেকে শুরু

শ্রেয়া চ্যাটার্জী
ইংরেজি সাম্মানিক
দ্বিতীয় সেমিস্টার

ওই যে সেদিন স্কুল শেষে
কান্না মেখে ফিরেছিলাম ঘরে,
মনে পড়ে সেই দিনের কথা?
দুঃখ মাঝে খুশি গেছিলো সরে..

হাসি খেলা পড়ার মাঝে,
কাটলো বছর বারো,
দুঃখ সুখের হিসেব বোধহয়
বাড়বে এবার আরও!

জমবে ধুলো বেঞ্চের ওই
নামগুলোরই খাঁজে,
হাসি মজা টিফিন চুরি
থাকবে স্মৃতির ভাঁজে।

ছুটির ঘন্টা মনের মাঝে
কাটবে না আর দাগ,
সবার মাঝে টিফিন বাক্স
হবে কি আর ভাগ?

কাটলো কবে বছরগুলো?
হাসি খেলায় সবার মাঝে,
চোখের জলে জানাই বিদায়
শেষের বেলার সুপ্ত সাঁঝে।

সময় যেন ঘোড়ার ন্যায়
অবিরাম যায় ছুটে,
নতুন দিনের বহ্নিরেখা
ঘুম নিয়েছে লুটে।

প্রথম দিনের সেই ক্লাসে
গেলাম সেদিন যেই,
ডজন খানেক বন্ধু নতুন
হাত বাড়ালো এই।

সেদিনের ওই ইংলিশ ক্লাসে
ভয় ছিলো খুব মনে,
আলাপপর্ব হলো এবার
নতুন টিচার দের সনে।

পরম স্নেহে আপন করে
নিলেন সেদিন তারা,
হাসি খুশি মজার মাঝে
দুঃখ হলো সারা।

চারটি বছর কাটুক মোদের
হাসি, খেলা, পড়ার সাথে;
কল্পনা মাখা রঙিন দিনের
স্বপ্ন মেশানো থাকুক তাতে।

শেষের থেকে নতুন শুরু
থাকুক মনের গহীন তলে,
নতুন রঙের স্বপ্ন হাজার
বাড়ছে হেথায় অন্তরালে।

ইচ্ছেবাতি থাকুক জ্বালা
আলোর পথের ছোঁয়ার সাথে,
স্বপ্ন সকল দিক যে ধরা
ঘুম ভাঙানীর শেষের রাতে।

নবজন্ম

প্রতীতি চক্রবর্তী
B. COMS(H)
6th Semenster

ছোটোবেলা থেকেই অনেক অবহেলায় আমার বড়ো হওয়া। স্কুলে পড়াকালীন নানারকমের মন্তব্য আমাকে শুনতে হয়েছে, তার কারণ ছিল আমার চলন, কথায় বলার ধরণ, শখ-আহ্লাদ, স্বপ্ন। ছোটোবেলা থেকেই আমি যেন আর পাঁচজনের মতো ছিলাম না, একটু হয়তো আলাদাই ছিলাম। আমি নীলান্তিকা ওরফে নিশাণ, হ্যাঁ আমি একজন রূপান্তরকামী নারী। আমার বলতে গেলে এখনকার নিউক্লিয়ার ফ্যামিলির মতোই আমার পরিবার - বাবা, মা, বোন আর আমি। ছোটো থেকেই ছেলে হওয়া সত্ত্বেও আমার মেয়ে সুলভ আচরণ ছিল। স্কুলে ছক্কা, হাফ লেডিস নামে আমাকে ডাকা হতো। ছোটো থেকেই আমার কেন জানি না মায়ের সাজগোজের জিনিসের প্রতি আলাদা ঝোঁক ছিল। বড়ো হওয়ার সাথে সাথে আমার এই ধরনের ইচ্ছা আর ঝোঁকটা যেন বাড়তে থাকলো, লুকিয়ে লুকিয়ে বোনের সাজগোজের জিনিস নিয়ে সাজতাম। বুঝলাম যে এটা স্বাভাবিক না। আমার বাহ্যিক রূপটা পুরুষের মতো হলেও আমার অন্তরটা ছিল নারীর। সত্যি বলতে আমি তখন ভালো ছিলাম না মনে হতো যেন নিজেই নিজের কাছে অপরিচিত। কিন্তু এখন আমি বদলে গেছি, আমার নারীত্বকে আমি জয় করতে সক্ষম হয়েছি। আমি এখন নির্দ্বিধায় নিজেকে নারী বলে পরিচয় দিতে পারি। অনেক লড়াইয়ের সম্মুখীন হতে হয়েছিল শুধুমাত্র আমি আমার নারীসত্তাকে অর্জন করতে চেয়েছিলাম। কাউকে পাশে পাইনি সেই হিসেবে বাবা, মা আর বোন ছাড়া। সবাই হাসাহাসি করতো, কিন্তু আমি কখনো ভেঙে পড়লে এসব থেকে তারাই আমাকে সামলাতো। এখন আমি এই কলকাতা শহরের একটি কলেজে কমার্স নিয়ে পড়ছি আর নিজের পরিচয় বানাচ্ছি। আমাকে আজ অনেকে আমার লেখালেখি আর আঁকার জন্য চিনছে, নিশাণ নামে নিশান নামে / নীলান্তিকা নামের। আমি যেন নতুন ভাবে জীবন পেয়েছি, শিখেছি নতুন ভাবে বাঁচতে। সব শেষে এইটুকুই যে আমাকে আজও অনেকে অনেক কথা শোনায়, আবার কলেজের মেয়েরা আমাকে ভালোবাসা দেয় অনেক। এই লড়াই জয়ের পর আমার বাবা মা আরেকটা মেয়ে পেয়ে খুব খুশি আর আমার বোন একটা দিদি। আর আমি এই পরিবারে জন্মগ্রহণ করেছি বলে আমার নিজেকে খুব ভাগ্যবতী মনে হয়, আমি জীবনে এটাই চাইবো আমার যতবারই মানুষ জন্ম হবে, আমি যেন এদেরকেই আমার পরিবার হিসেবে পাই। আর আমার মতো সবাই যেন এমনই একটা সাপোর্টিং পরিবার পাই।

আমাদের এই পথ চলাতেই আনন্দ পায়ে পায়ে 'অন্যরকম'-এর সঙ্গে

সুমি চ্যাটার্জি
চতুর্থ সেমেস্টার
সমাজতত্ত্ব সাম্মানিক

দূর আকাশের উঁচুতে দুটো চিল চক্রাকারে ঘুরছে। মাঝে মাঝে হাওয়া কেটে কেটে মসৃণ বাঁক নিয়ে ঘুরেফিরে সে আসে সঙ্গীনিটির কাছে, আবার স্বপ্নে চলে যায়। একদল কালো পিঁপড়েরা বকুলগাছের শুকনো ডালের গা বেয়ে চলেছে কোথায়। একটা চড়ইয়ের মতো দেখতে ছোট্ট টুনটুনি কোত্থেকে বকুলগাছের ফিনফিনে ডালে এসে বসে। তারপর লাফ দেয় আর একটা ডালে, তারপর আবার একটায়। কিছু খুঁজছে বোধহয়। মুখ নীচু করে ছোটো ছোটো একরাশ বকুলফুলের মাঝে। এসব হয়তো দেখা হতো না। যেমন দেখিনি ঘেটুবন, যেমন দেখিনি বৃষ্টি ভেজা ডাহুক পাখি, যেমন পাইনি কোনো এক অপরাহ্ণে কোচ বকের দেখা। দেখবার মতো কিছু দেখার চোখ যে আমাদের নেই। সভ্যতার দামি চকচকে মোড়কের জৌলুসে সে চোখ ধাঁধিয়ে গেছে। কিন্তু আমাদের 'অন্যরকম' ঠিক যেন ওই ছাতিমগাছের পাতার শেষ প্রান্তে মুক্তোর মতো লেগে থাকা বৃষ্টির ফোঁটা। আমাদের সেসব পচে গলে নষ্ট হয়ে যাওয়া চোখে যে দিয়েছে প্রাণ সঞ্চার করে। আজ আমরা দেখতে পাই। চোখের পাতা দুখানি মুড়ে সে সব অনুভবও করতে পারি বেশ কিছুটা। আমাদের এই 'অন্যরকম' ঠিক যেন একটা যাদুকর। আমাদের ভিতরের গুপ্ত কোনো কোণা থেকে যে আমাদের মধ্যে ঘুমিয়ে থাকা ক্ষমতাগুলোকে তাঁর যাদুদণ্ডের মাধ্যমে টেনে বার করে নিয়ে এসে হাজির করেছেআমাদেরই সামনে।

মাসতুতো দিদির কাছে প্রথম শুনে কিছুটা অবাক আর কিছুটা উৎফুল্ল হয়েছিলাম। অবাক হয়েছিলাম,

এখানকার কাজকারবারের সঙ্গে আমার সেই চেনা কোচিং-এর কোনো মিল খুঁজে না পেয়ে। পরে এখানে এসে সেই পার্থক্যটা আরও স্পষ্ট দেখেছি। তখন আমরা যারা পড়তে আসতাম তাদের মধ্যে, পংকার হয়তো আসতে দেরি হয়েছে। এসে বলেছে- 'মাঠে খেলতে গিয়েছিলাম ফিরতে দেরি হয়ে গেল।' ওমনি স্যার বলেন আচ্ছা এই মাঠে খেলতে গিয়েছিলাম তাই দেরি হয়ে গেল- এটাকে ইংরেজিতে বোলে দেখাতো দেখি কেমন পারিস। ও মাথা চুলকে আকাশ-পাতালেও যখন উত্তর খুঁজে পায় না। তখন প্রশ্নটির আর ওর একার থাকে না। সবাই মিলে জুটে যাই উত্তর খুঁজতে। একেবারে শেষে স্যার সবার উত্তর শুনে তার থেকেই বানিয়ে দিতেন সঠিক উত্তরটা। এই ভাবেই চলতো আমাদের ইংরেজি শেখ।

তখন আমাদের পড়ার পর পড়তে আসতো বড়ো দিদিরা। মাম্পিদি, মৌসুমিদি, সুমনাদি ।সবাই এসেই ও ঘরে ঢুকে গিয়ে দরটা বন্ধ করে দিত কারণ তখনও এ ঘরে আমাদের পড়াশুনা শেষ হয়নি দরজা যখন খুললো, তখন দেখা গেল কেউ চুল বাঁধছে কেউ শুয়ে পড়েছে, কেউবা ঘরে ঘুরে বেড়াচ্ছে। দেখেতো আমি অবাক। এ আবার কি স্যারের বাড়ি এসে এমন করা যায় নাকি। এমনই অবাধ বিচরণের অধিকার আমাদের দেওয়া হয়েছে এখানে। কারণ এটি শুধু স্যার আর দিদিভাইয়ের বাড়ি নয়। এযে আমাদের বাড়ি, অন্যরকমের বাড়ি। ডাকা, বড়বি, পুটে, মিঠু আর ওই যে ট্রেনটুনি, বুলবুলি, চড়ুইয়ের বাড়ি আর কারো কারো কথায়- পাবলিকের বাড়ি। সত্যিই তাই এখানে যখন তখন চলে আসা যায়, কেউ তাতে বিরক্ত হয় না। উলটে স্যার হয়তো বেশ কয়েকটি কবিতা কিংবা ভালো একটা লেখা শোনাতে লাগলেন

আর আমাদের দিদিভাই হয়তো মুখের সামনে এনে ধরলেন ঘুগনি, থোড়ের তরকারি, আমের চাটনি কিংবা চিঁড়ের পোলাও। শুরুর দিকে কিন্তু আমার এখানকার অন্য সব নাটক, গান, কবিতা, ছবি আঁকা, ফেলে দেওয়া জিনিস দিয়ে নানারকমের নতুন কিছু তৈরি এসব করতে খুব ভালো লাগলেও এখানকার পড়ার ধরন তেমন ভালো লাগতো না। মনে হতো সব সময় বাক্যগঠন আর অনুবাদ করতে থাকলে স্কুলের পড়াগুলো করবো কখন। শুধু এগুলো করলেই তো আর পরীক্ষায় পাস করবো না। তার জন্য তো প্রশ্নের উত্তর লেখাতে হবে, যেমনটা স্কুলে করানো হয়। আমাদের অন্যরকমের স্যারকেও ঠিক স্যার বলে মনে হতো না। মনে হতো এক মজার মানুষ আমার একান্ত আপন আত্মীয়। মোটা মোটা সহায়িকার পাতা উলটোতে উলটোতে গম্ভীর ভাবমূর্তিখানি সামনে হাজির করে বড়ো বড়ো প্রশ্নের উত্তর না লেখালে কি আর পড়া হয়। একদিন একটা হলুদ রঙের বই, নীচে কালো সাদায় আঁকা গাঢ় অন্ধকার দেওয়ালের পিছনের থেকে বেরিয়ে আসছে একটা শাড়ি পরা যুবতী। উপরের হলুদ অংশে মোটা মোটা কালো হরফে লেখা 'আলো আঁধারিক্ষ্ম বেবী হালদার। স্যার আমায় দিয়ে বললেন বাড়ি নিয়ে যা গিয়ে পড়বি। বইটা হাতে করে নিয়ে এলাম বাড়িতে। বই পড়বার অভ্যাস আমার একেবারেই ছিল না। কখনো কখনো খেয়াল বশে কিছু ছোটোগল্পের বই নিয়ে বসতাম। পড়তামও কিছুটা কিন্তু ব্যাস ওই পর্যন্তই। তবে এই বইটা 'আলো আঁধারি'-এর কয়েকটা পৃষ্ঠা আগেই স্যার পড়ে শুনিয়েছিলেন, তখনই ভালো লেগে গিয়েছিল। সেদিন দেরি না করে বসে পড়লাম পড়তে। পড়তে পড়তে কেমন যেন একটা আশ্চর্য আকর্ষণ তৈরী হয়ে গেল। ছোটো একটা মেয়ের জীবন কেমন করে বদলে গেল! মাত্র ১৩ বছর বয়সে খেলতে খেলতে সে দেখে তাঁর শারীরিক পরিবর্তন, ঘাবড়ে গিয়ে মা-বাবাকে সে কথা জানাতেই তাঁর সৎমার পরামর্শে বাবা তার বিয়ে দেওয়ার সিদ্ধান্ত নেন। ১৪ বছরেই প্রথম সন্তানধারণ এরপর আরও দুই সন্তানের জন্ম দেন। তার মধ্যেই চলে স্বামীর অকথ্য অত্যাচার। একসময় সে তিন ছেলেমেয়ের হাত ধরে ছাড়ে স্বামী-সংসার, চলে যায় অজানা এক জগতের উদ্দেশ্যে। শহরে ঘুরে ঘুরে কাজ খোঁজে। তারপর কীভাবে যেন পৌঁছে যায় এমন এক ঠিকানায় যেখানে ঐ কাজের মেয়ের জীবন' যায় বদলে। সে পায় আবার পড়ার উৎসাহ, তার নিজের কথা লিখে ফেলার এবং সে এতদিনের সঞ্চিত অভিজ্ঞতাগুলি লিখেও ফেলে। একদিন সে বাড়ির প্রৌঢ় তার সামনে একটা প্যাকেট রেখে বলেন খুলে দেখতে।। প্যাকেটটির ভিতর সে পায় একটি বই 'আলো আঁধারি' লেখিকা বেবী হালদার।এ বইটা পড়ে শেষকরেছি যখন বেলা পড়ে গিয়েছে। পুবের জানালার কপাটে অস্তগামী সূর্যের শেষ রৌদ্র। মনে কেমন এক বেদনাময় তৃপ্তি। এদিকে ঘরের ভিতর অন্ধকার হয়ে আসছে অথচ লাইটাও জ্বালাতেও আর ইচ্ছা নেই। কথা বলতেও কেমন বিরক্ত লাগছে। বইটা আমার এতদিনের লেখা ও লেখক সম্পর্কে ধারণা একেবারে ওলোটপালোট করে দিতে যথেষ্ট। ভাবনা আসে, লেখক হতে গেলে যে তাঁকে অনেক অনেক পড়তে হয়, জানতে হয় তা আমার কাছে স্পষ্ট ছিল। কিন্তু একি? কেবল নিজের কথা লিখে লেখক হওয়া যায়? হঠাৎ ভাটার পর যেন জোঁয়ার এলো মনে। সে জোঁয়ারে প্রতিটি ঢেউয়ের দোলায় দুলে উঠেছে মন, আর কিছু একটা যেন ফিসফিস করে গেল কানের কাছে লেখক লেখক... তুমিও কি হতে পারো না?

তারপর কতো বই পড়েছি। অবশ্যই সেগুলি স্কুলপাঠ্যের বাইরে কিন্তু স্কুলপাঠ্যের ওই তিক্ত, নিরস, নিষ্প্রাণ পাতাগুলো আমাকে যা দিতে পারেনি কখনও তাই আমি পেয়েছি ওই বইগুলোর কাছ থেকে। এরপর সেই ফেলে আসা অতীতে কখনও ফিরে যেতে দেয়নি আমাদের অন্যরকম, কেবল বলেছে এগিয়ে যাও আরো আরো, কিন্তু ফিরে যেতে কখনও দেয়নি, দেয়নি হারিয়ে যেতে।

মেঘলা আকাশ

সুস্মিতা টুডু
সেমেস্টার - ৫
ইংরেজী সাম্মানিক

তোমায় নিয়ে
আজকে উদাসীন।
সকাল থেকে অবিরত
বৃষ্টি সারাদিন।
পড়ছে শিশির
পলক থেকে
ধরার বুকে তে
তোমার রাঙা কৃষ্ণচূড়া
আজ সূর্যাস্তে।

সত্য

সঞ্চারী সাহা
বিভাগ বাণিজ্য

ভাঙবে বাঁধন খুলবে শিকল,
বিশ্বাস ভরা মন্ত্রতে।
জ্বলবে আলো ঘুচবে কালো,
নিবিড় মনের প্রান্ততে।
জ্ঞানের শিক্ষা জ্বালিয়ে তুলে,
বিকশিত কর ভাবনারে ।
তুমি তোমার পথের দিশা,
শিক্ষা তোমার অন্তরে।
করবে জয় সব ভয়,
চিনবে যেদিন নিজেকে।
মনের কথা শুনলে তব,
জানবে আসল সত্যকে।

Jyoti

প্রথম দিনের সেই ক্লাসে

শ্রেয়া চ্যাটার্জী
সেমেস্টার - ১
ইংরেজী সাম্মানিক

প্রথম দিনের সেই ক্লাসে
গেলাম সেদিন যেই,
ডজন খানেক বন্ধু নতুন
হাত বাড়ালো এই।

সেদিনের ওই ইংলিশ ক্লাসে
ভয় ছিলো খুব মনে,
আলাপপর্ব হলো এবার
নতুন টিচার দের সনে।

পরম স্নেহে আপন করে
নিলেন সেদিন তারা,
হাসি খুশি মজার মাঝে
দুঃখ হলো সারা।

চারটি বছর কাটুক মোদের
হাসি, খেলা, পড়ার সাথে;
কল্পনা মাখা রঙিন দিনের
স্বপ্ন মেশানো থাকুক তাতে।

শেষের থেকে নতুন শুরু
থাকুক মনের গহীন তলে,
নতুন রঙের স্বপ্ন হাজার
বাড়ছে হেথায় অন্তরালে।

ইচ্ছেবাতি থাকুক জ্বালা
আলোর পথের ছোঁয়ার সাথে,
স্বপ্ন সকল দিক যে ধরা
ঘুম ভাঙানীর শেষের রাতে।

বীরাঙ্গনা তারা

বর্ষা চক্রবর্তী
সেম - ৬
সাম্মানিক বাংলা

১৯৬১ সালে প্রকাশিত মাইকেল মধুসূদন দত্তের 'বীরাঙ্গনা' কাব্য। বীরাঙ্গনাদের অন্তর মানসের অভিমান, অনুযোগ এবং অধিকারবোধ পত্রকাব্যের সীমা ছাড়িয়ে হয়ে উঠেছে আধুনিক নারীবাদের আলোকস্তম্ভ।

তৎকালীন সমাজে মনে করা হতো নারী তাঁর স্বামীর কাছে আত্মনিবেদিত। স্বামীর পরিচয়ই তাঁর পরিচয়। সংসারের নিয়মে আষ্টেপৃষ্ঠে বাঁধা মেয়েদের জীবন। কিন্তু মাইকেলের 'বীরাঙ্গনা' কাব্যের নায়িকারা প্রতিবাদী। নিজের পরিচয়, নিজের অধিকারের কথা তাঁরা সসম্মানে ব্যক্ত করেছেন। মোট ১২টি পত্রিকায় 'বীরাঙ্গনা' কাব্যটি সম্পূর্ণ। আমার প্রিয় পত্রিকা হল 'সোমের প্রতি তারা'।

বীরাঙ্গনা কাব্যের দ্বিতীয় পত্রিকা 'সোমের প্রতি তারা'। উনিশ শতকের নব জাগরণের আলো এসে পড়েছে বৃহস্পতি পত্নী তারার ব্যক্তিত্বে। তিনি প্রেমপত্র লিখছেন বৃহস্পতির শিষ্য চন্দ্র অর্থাৎ সোমদেবকে। বিষয়বস্তু পুরাণ থেকে গ্রহণ করা হলেও, সেই সময় দাঁড়িয়ে একজন নারীর পক্ষে তাঁর স্বামীর শিষ্যর সঙ্গে প্রণয়ের ইচ্ছা আধুনিক মনস্কতা এবং সাহসিকতার পরিচায়ক।

সোমদেবের প্রতি মুগ্ধ এবং আসক্ত গুরুপত্নী তারা। তারা স্বামীর কাছ থেকে উপেক্ষিতা, বঞ্চিতা এবং অবহেলিতা। তিনি নিজেকে সমর্পণ করতে চান সোমের কাছে। অথচ সংসারের বাঁধন, সমাজের কঠোর নিয়ম উপেক্ষা করা দায়!

পত্রে আমরা তারার মনের দ্বন্দ্ব দেখতে পাই। একদিকে সোমের প্রতি তাঁর প্রণয়ের আকাঙ্ক্ষা আরেকদিকে গুরুপত্নীর গুরু দায়িত্ব। দায়িত্ব না প্রেম? কোনটি বেছে নেবেন তারা? সোমকে তৃণাশনে শয়ন করতে দেখে দুঃখে তাঁর মন কাঁদে। স্বপ্ন দেখেন সোমের সঙ্গে মধুর মিলনের।

''কত যে উঠিত সাধ

, পারিতাম যবে

শয়ন, এ পোড়া মনে, পারো কি বুঝিতে''

শিক্ষা শেষের দিন সোমকে তিনি এই চিঠি লেখেন। চিঠির শেষাংশে সমাজের সমস্ত বাঁধন, শৃঙ্খল বিসর্জন দিয়ে তারা

পুরোপুরি সোমের কাছে আত্মসমর্পন করলেন। তাঁর কাছে সামাজিক অনুশাসনের চেয়ে প্রেম বড়।

শুধুমাত্র সেকালে নয়, একালেও ক'জন নারী পারে নিজের ভালোবাসার কথা এমন স্পষ্ট ভাষায় বলতে? বললেও 'রে রে' করে তেড়ে আসে সমাজ। এমনকি কাঙ্ক্ষিত পুরুষও ভুল বুঝে সরে যান বহু দূরে।

কৃষ্ণবিরহে বিবাহিতা রাধার চোখের জল ঝরল সারাজীন। একমাত্র মহম্মদ সগীরের 'ইউসুফ জোলেখা' প্রণয়কাব্যে বিবাহিতা জোলেখা পেলেন স্বপ্নপুরুষ হাঁটুর বয়েসী ইউসুফের প্রেম। এমন অভাবনীয় প্রেমের গায়ে লাগল অতিলৌকিক তকমা। আধুনিক কবি কবিতা সিংহ লিখলেন, 'প্রেম যে কেমন ছুঁয়ে দেখার, ছেনে দেখার জন্য বড় কষ্ট হল।' কবি মল্লিকা সেনগুপ্ত লিখলেন, 'তোমায় ভালোবাসি বলেই কিল খেয়ে কিল হজম করি।'

চোখের জল, অপেক্ষা, উপেক্ষা, হজম, বদহজমের রাস্তায় না-হেঁটে সরাসরি প্রেমিককে চিঠি লিখলেন তারা। অধুনা এস এম এস, হোয়াটসঅ্যাপ বা ই-মেল করে মনের কথা বলেন বহু নারী। তবু প্রেম অধরা মাধুরী। এই আধুনিক বিষয় এবং আঙ্গিক গ্রহণ করেছেন মাইকেল উনিশ শতকেই।

তারার বীরত্ব ঝাঁসির রানি লক্ষ্মীবাঈয়ের খোলা তলোয়ারে নয়, প্রেমিককে স্বতঃস্ফূর্ত প্রেমনিবেদনে। কালজয়ী কবি মধুসূদন দত্তের দ্বিশতবর্ষে বীরাঙ্গনা তারাকে কুর্নিশ।

আমার কলকাতা

মৈত্রেয়ী মজুমদার
প্রাক্তনী, ইতিহাস বিভাগ

প্রিয় কলকাতা, আজ অনেকদিন হয়ে গেল তোমার ছন্দপতন ঘটেছে।
তোমার ছন্দহীনতার করুণ সুর শুনতে শুনতে আমরা ক্লান্ত!
জানো তো আজ কতকগুলি দিন হয়ে গেল বাসে চড়ি নি!
বৃষ্টির প্রথম ফোঁটাকে ছুঁতে চেয়েও ছুঁতে পারিনি!
আজ বড্ড মনে পড়ছে আমার প্রিয় কলেজটার কথা-
প্রিয় ক্লাসরুম, প্রফেসরস্ রুম, লাইব্রেরী, ক্যান্টিন, কমন রুম যেন আমায় প্রতিমুহূর্তে হাতছানি দিয়ে ডাকছে!
হ্যাঁ, তিনমাস আগের ছবিটা পুরো আলাদা ছিল।
কোনোদিনো তুমি কি ভেবেছিলে তোমার মুখের হাসি কোনো এক অদৃশ্য, ছোঁয়াচে ভাইরাস এসে এক মুহূর্তে কেড়ে নিয়ে যাবে??

আমরা কেউই ভাবিনি! ছোটোবেলায় দাদুর মুখে শুনেছিলাম পৃথিবী ধ্বংসের প্রাক্কালে নাকি একের পর এক ভয়ানক দুর্যোগের সম্মুখীন হতে হয় সমগ্র বিশ্ববাসীকে-
আজ দেখছি সেটাই সত্যি হতে বসেছে!
প্রতিটা মুহূর্ত কাটছে বিষণ্ণতায়!
শুধু মনে হয় মনখারাপী বিকেলবেলাগুলোতে যদি ছুটে যেতে পারতাম ময়দানের সবুজ ফাঁকা মাঠে-
চোখ বন্ধ করলেই শুধু মনে পড়ে তোমার পুরোনো ছবির কথা।
সবকিছু যেন ম্লান হয়ে গেছে-
চারিদিকে শুধু নেই নেই রব।
অনিশ্চয়তায় কাটানো প্রতিটা মুহূর্তকে আঁকড়ে ধরে বাঁচার আপ্রাণ চেষ্টা করে চলেছি শুধু।
জানি না বেঁচে থাকার এই অদম্য লড়াইয়ে কতটা সফল হতে পারব!
এখনো আমাদের সোনালী স্বপ্নের দিনগোনা বাকি।
এখনো অনেক কাজ অপূর্ণ রয়ে গেছে।
গ্রামের স্কুল থেকে উচ্চমাধ্যমিকে ভালো রেজাল্ট করা যে মেয়েটি দুচোখ ভরে স্বপ্ন দেখেছিল তোমার কাছে এসে আশ্রয় নেবে- এই কলকাতা শহরের নামী কলেজে এসে ভর্তি হবে- তার স্বপ্ন কি সত্যিই অধরা থেকে যাবে??
কিম্বা যে ছেলেটি ভেবেছিল এই কলকাতাতে এসে নতুন চাকরীর সন্ধান করবে- তার কি হবে??
ঠিক এইভাবে হাজার হাজার মানুষ তোমায় নিয়ে কত স্বপ্নের জাল বুনে রেখেছে-
সব স্বপ্ন যে পূরণ করতেই হবে।
আমরা আবার ফিরে পেতে চাই তোমার সেই প্রাণবন্ত রূপ।
এই মহানগরীর বুকে আবার ফিরে আসুক প্রাণের স্পন্দন।
হে কলকাতা তুমি সেরে ওঠো।।

"Go,Get Education"

ঊনবিংশ শতকের এক নিরক্ষর বালিকা-বধূর আহ্বান

সুনন্দা মুখার্জ্জী
প্রাক্তন অধ্যাপিকা
মহারানী কাশীশ্বরী কলেজ

আজ থেকে প্রায় ১৯৪ বছর আগে , ১৮৩১ সালের ৩রা জানুয়ারি , ব্রিটিশ ভারতে , মহারাষ্ট্রের সাতারা জেলার নইগাঁও গ্রামে , 'মালি' সম্প্রদায়ভূক্ত এক দরিদ্র কৃষক পরিবারে জন্ম নেয় এক কন্যা ।

পিতা - খান্ডোজি নেভেসে পাতিল । মাতা - লক্ষ্মীবাই । মাত্র ৯ বছর বয়সে , ১৮৪০ সালে তাঁর বিয়ে হয় ১৩ বছর বয়সী পুনা নিবাসী জ্যোতিরাও ফুলের সাথে । ঈশ্বরের অপূর্ব ইচ্ছায় নিজেদের অজান্তে দুই সম-মনস্ক বালক-বালিকা বাঁধা পড়লো গভীর বন্ধনে ; কারণ এদের দুজনের মাধ্যমে যে সমাজের মঙ্গলে অনেক কিছু করার ছিলো !

বিবাহের সময় কন্যা ছিলেন নিরক্ষর । কালে তিনিই হয়ে দাঁড়ালেন ভারতের 'প্রথম' মহিলা শিক্ষিকা , ব্রিটিশ সরকারের দেওয়া 'শ্রেষ্ঠ শিক্ষক' সম্মানে ভূষিতা , বিশিষ্ট সমাজ-সংস্কারক ,কবি এবং ভারতের নারীবাদী আন্দোলনের জননী ।

তিনি সাবিত্রীবাই ফুলে ।

ঊনবিংশ শতকের অন্ধকার সমাজে চূড়ান্ত জাতপাত ও লিঙ্গভিত্তিক বৈষম্য , অস্পৃশ্যতা , নিচুজাতের মানুষের ও নারীদের শিক্ষার অধিকার না থাকা , বাল্যবিবাহ , বিধবা রমণীদের ওপর নিগ্রহ , ভ্রূণ হত্যা , শিশুহত্যা ইত্যাদির বিরুদ্ধে মূক প্রান্তিক মানুষগুলোর হয়ে সাবিত্রীবাই মুখ খুললেন । আশার আলোকবর্তিকা হয়ে বঞ্চিত , নির্যাতিত মানুষের সামনে এসে দাঁড়ালেন।

এই নির্ভীক রমণীর মহত্বে ভরা জীবনের কাহিনীই এখানে আমাদের আলোচ্য ।

স্বামী হিসাবে সাবিত্রীবাই যাঁকে পেয়েছিলেন , এক ফুল ও সবজি ব্যবসায়ী অন্ত্যজ পরিবারে জন্ম নিয়েও , তিনিও ছিলেন বর্ণবৈষম্য ও প্রচলিত সামাজিক

রীতিনীতির বিরোধী , শিক্ষানুরাগী । পিতার ইচ্ছার বিপক্ষে গিয়ে তিনি প্রাথমিক ও উচ্চতর পড়াশোনা করেন।

সাবিত্রীবাই এর জীবনের মোড় ঘোরায় অবদান ছিলো অনেক ছোটোবেলায় , বিয়ের আগে , এক খ্রীষ্টান মিশনারীর থেকে পাওয়া একটি বাইবেল। নিরক্ষর সাবিত্রী সেটি পড়তে না পারলেও , সর্বদা দেখতেন ; পাতার পর পাতা কালো অক্ষরগুলি কি বলছে বোঝার আকুল ইচ্ছা হতো তাঁর ।

পড়বার জন্য স্ত্রীর এই আগ্রহ জ্যোতিরাও এর চোখে পড়ে । খামারে কাজের ফাঁকে তিনি , এবং বাড়ীতে , তাঁর এক পিসি , সাগুনাবাই ক্ষীরসাগর , যিনি ছোটো থেকে মাতৃহীন জ্যোতিরাওকে পালন করেছিলেন ও লেখাপড়া জানতেন , সাবিত্রীবাইকে লেখাপড়া শেখাতে শুরু করেন । তাঁদের কাছে প্রাথমিক শিক্ষা ও জ্যোতিরাও এর দুই বন্ধুর কাছে উচ্চতর শিক্ষার পর ১৮৪৭ সালে সাফল্যের সাথে পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হয়ে সাবিত্রীবাই এক 'যোগ্য শিক্ষকে' পরিণত হন । পরে তিনি দুটি 'শিক্ষক প্রশিক্ষণ' কার্যক্রমেও যোগ দেন । প্রথমটি -- আহমেদনগরে আমেরিকান মিশনারী সিনথিয়া ফারারের প্রতিষ্ঠানে ও দ্বিতীয়টি পুনের নর্মাল স্কুলে ।

তৎকালীন সমাজে অন্ত্যজ শ্রেণীভূক্ত মানুষ ও নারীদের দুর্দশাগ্রস্ত জীবনের উন্নতি ঘটানোর জন্য 'শিক্ষা'ই হলো চাবিকাঠি , এই বিশ্বাসে অটল এই নির্ভীক দম্পতি , ১৮৪৮ সালের ১লা জানুয়ারী , এক ইতিহাস রচনা করলেন। পুনের 'ভিদেওয়াদা' তে সব বর্ণের মেয়েদের জন্যে খোলা হলো এক স্কুল ।

এটিই ভারতের প্রথম 'বালিকা বিদ্যালয়' এবং সাবিত্রীবাই সেই বিদ্যালয়ের এবং ভারতের প্রথম 'প্রধানা শিক্ষিকা' । জ্যোতিরাও এর এক বন্ধু , তাত্যসাহেব ভিডে , তাঁর বাড়ীর দুটি কক্ষ এই বিদ্যালয়ের জন্য দান করেন।

সাবিত্রীবাই এর স্কুলে বেদ ও শাস্ত্রের পরিবর্তে পশ্চিমী পাঠ্যক্রম অনুযায়ী বিজ্ঞান , অঙ্ক , ইংরেজি ও সামাজিক শিক্ষার ব্যবস্থা রাখা হলো । ১৮৪৪ সালে ব্রিটিশ সরকার ঘোষণা করেছিলো যে সরকারি চাকরির জন্য আবেদনকারীর পক্ষে ইংরেজি জানা বাধ্যতামূলক ।

সাবিত্রীবাই তাই শূদ্র ও অতিশূদ্রদের জীবনে উন্নতি আনার লক্ষ্যে নিজ স্কুলে ইংরেজি শিক্ষার ব্যবস্থা রাখেন ।

যে সময়ে সমাজে নারীদের লেখাপড়া করাটা 'পাপ' বলে গণ্য করা হতো , তখন ফুলেদের এই স্কুল প্রতিষ্ঠার বিপ্লবাত্মক পদক্ষেপ উচ্চবর্ণের গোঁড়া মানুষদের মনে ক্রোধের আগুন জ্বালিয়ে দিলো।

স্কুলে যাওয়া-আসার পথে সাবিত্রীবাইকে লক্ষ্য করে অশ্রাব্য গালিবর্ষণ , ইঁট-পাথর , এমনকি গোবর ছুঁড়ে মারা হোতো। এটা তাঁর অভ্যাস হয়ে গেছিলো । তিনি ব্যাগে দ্বিতীয় একটি শাড়ী নিয়ে যেতেন। স্কুলে পৌঁছে নোংরা কাপড় ছেড়ে সেটি পরে নিতেন। সহনশীলতার প্রতিমূর্তি হয়ে শিক্ষাবিতরণের সিদ্ধান্তে অটল থেকেছেন ; কোনো কিছুই তাঁকে প্রতিহত করতে পারেনি।

অবশ্য ছাত্রী সংগ্রহ করা-ও একটা লড়াই ছিলো। ঘরে ঘরে গিয়ে তিনি শিক্ষার মাহাত্ম্য বোঝাতেন। পড়তে গেলে কিছু অর্থ দেওয়া হবে বলতেন। খাবারও দেওয়া হবে ; যা আজকের Mid-day meal এর অঙ্কুর বলা যায়।

সামাজিক প্রবল রোষের মুখে ১৮৪৯ সালে জ্যোতিরাও এর বাবা গোবিন্দরাও তাঁদের বললেন--''স্কুল বন্ধ করো, নয়তো বাড়ী ছাড়ো''। তাঁরা বাড়ী ছাড়লেন ।

জ্যোতিরাও এর এক বন্ধু , ওসমান শেখের বাড়ীতে তাঁরা থাকতে শুরু করেন ; যাঁর বোন ফতিমা শেখ অচিরেই সাবিত্রীবাই এর ঘনিষ্ঠ বন্ধু ও সহকর্মীতে পরিণত হন ।

১৮৪৯ সালে ওসমানের বাড়ীতে এক স্কুল খুলে সাবিত্রীবাই ও ফতিমা , 'মাহার' ও 'মাং' প্রজাতির নারী ও শিশুদের শিক্ষাদান শুরু করেন ; যারা সেই সময় অবর্ণ বা অতি-শূদ্র এবং 'অস্পৃশ্য' বলে বিবেচিত হতো ।

১৮৫১ সালের মধ্যে , পুনেতে ফুলেদের ৩টি বিদ্যালয় চালু হয় , দেড়শোর বেশী ছাত্রী নিয়ে। ফুলে দম্পতি , তাঁদের সম্পূর্ণ জীবদ্দশায় , মোট ১৮টি বিদ্যালয় স্থাপন করেন ; যা ভারতীয় শিক্ষা জগতে এক যুগান্তকারী ঘটনা। এই স্কুলগুলি চালাতে , অর্থ, বই , শ্লেট-পেন্সিল বা শিক্ষকতা দিয়ে , তাঁদের অনেক বন্ধু ও প্রগতিশীল মানুষরা সাহায্য করেছিলেন।

সাবিত্রীবাই এর স্কুলের বিশেষ আকর্ষক শিক্ষাদান পদ্ধতির জন্য ক্রমে সেখানে মেয়েদের নথিভুক্তির সংখ্যা ছেলেদের জন্য সরকারি স্কুলের ছাত্রসংখ্যাকে ছাপিয়ে গেলো। শুধু তাই নয় , ১৮৫২ সালের ২৯শে মে , 'পুণা অবজার্ভার' পত্রিকায় লেখা হয় যে সাবিত্রীবাই এর স্কুলের ছাত্রীরা সরকারি স্কুলের ছাত্রদের থেকে ভালো করছে। তাঁর স্কুলগুলি ছিলো পরিষ্কার-পরিচ্ছন্ন ; দেওয়ালে থাকতো ছাত্রীদের করা নানা চিত্রকলা। এর থেকে বোঝা যায় শুধু বিদ্যাদান নয় , তিনি নৈতিকতায় ভরা সৃজনশীল মানুষ 'গড়তে' চেয়েছেন। ১৮৫৫ সালে এই দম্পতি কৃষক ও শ্রমিকদের জন্য এক নৈশ বিদ্যালয় খোলেন।

শিক্ষার কারণে , সাবিত্রীবাই এর প্রয়াস , ব্রিটিশ সরকারের নজর এড়ায়নি। ৯ বছরের নিরক্ষর বালিকা-বধূ থেকে উন্নীত হয়ে , ২১ বছর বয়সে , ১৮৫২ সালে , ব্রিটিশ সরকার তাঁকে 'শ্রেষ্ঠ শিক্ষক' সম্মানে ভূষিতা করেন।

একজন 'সমাজ-সংস্কারক' হিসাবেও সাবিত্রীবাই এর জীবন নানা কর্মকান্ডে পরিপূর্ণ ।

উনিশ শতকে চারবর্ণযুক্ত সমাজে ব্রাহ্মণদের অত্যন্ত প্রতিপত্তির জন্য নিম্নবর্ণের মানুষ ও নারীদের জীবন ছিলো অন্ধকারে নিমজ্জিত। সূর্য ওঠা সত্ত্বেও যাদের জীবনে আলো ফুটতো না , তাদের জন্য প্রচলিত রীতিনীতির বিরুদ্ধে রুখে দাঁড়ানোর সাহস দেখালেন সাবিত্রীবাই ।

সে সময় গ্রামের সাধারণ জলাধার থেকে নিম্নবর্ণের মানুষের জল পান করা নিষিদ্ধ ছিলো । ফুলে দম্পতি নিজেদের গৃহে এক বিরাট পাতকুয়া খনন করান - যা থেকে সব বর্ণের মানুষ জল নিতে পারতো । তাঁদের এই পদক্ষেপে সমাজের 'মাথা' ব্যক্তিরা প্রবল ক্ষিপ্ত হয়ে ওঠেন ।

'অস্পৃশ্য' নিম্নবর্ণের লোকেরা উচ্চবর্ণের সাথে একসাথে বসা দূরের কথা , তাদের দেহের ছায়াও উচ্চবর্ণকে স্পর্শ করলে 'মহাপাপ' এর জন্য শাস্তি পেতে হতো । ১৮৫২ সালে সাবিত্রীবাই এক 'মহিলা সেবা মন্ডল' শুরু করেন যেখানে নারীদের নিজ অধিকার সম্পর্কে সচেতন হওয়ার শিক্ষা দেওয়া হতো , তবে সেখানে 'বর্ণভেদমুক্ত' মানসিকতার প্রতীক হিসাবে সবাইকে 'একটিই' মাদুরে বসতে হতো ।

ব্রাহ্মণদের মধ্যে 'বিবাহে' চালু ছিলো 'কৌলীন্য' প্রথা । এর কুফলে বহু ব্রাহ্মণ যুবতী বা বালিকা , অকালে বৈধব্য দশায় পড়লে তাদের মস্তক মুন্ডন করে দেওয়া হতো । একজন নারীর প্রতি চরম বর্বর এই প্রথার বিরুদ্ধে সোচ্চার হয়ে সাবিত্রীবাই ১৮৬০ সালে সমগ্র মুম্বই ও পুনেতে নাপিতদের 'ধর্মঘট' আহ্বান করেন ;যা সর্বতোভাবে সফল হয় ।

যুবতী ব্রাহ্মণ বিধবাদের ওপর প্রায়-ই কুনজর পড়তো সমাজের পুরুষদের। এমনই এক অভাগা রমণী , পিতৃ পরিচয়হীন সন্তানের জন্ম দিলে সমাজের ভয়ে সে নিজ সন্তানকে হত্যা করে । কিন্তু ব্রিটিশ সরকার এই অপরাধের দরুণ তাকে আজীবনের জন্যে আন্দামান জেলে পাঠিয়ে দেয় ।

এই ঘটনা সাবিত্রীবাইকে নাড়া দেয়। নিজে অন্ত্যজ সম্প্রদায়ভূক্ত হয়েও , বিনা অপরাধে অপরাধী , ধর্ষিতা , এই সব ব্রাহ্মণ রমণীদের জন্য সহমর্মিতায় এক বিরাট পদক্ষেপ নিলেন তিনি ; যা আবারও ভারতে 'প্রথম' বারের জন্য হলো ।

১৮৬৩ সালে বাল-হত্যা প্রতিবন্ধক গৃহ (Home for Prevention of Infanticide) নামে এক আশ্রয়স্থল খোলা হলো যেখানে বিধবারা তাদের অবৈধ সন্তানকে হত্যা করার পরিবর্তে জন্ম দিতে পারেন ; চাইলে নিজে থাকতেও পারতেন । নচেৎ শিশুর যাবতীয় দায়ভার হোম গ্রহণ করতো। জাত-গোত্র বিচার ব্যতিরেকে অন্য নিঃস্ব বা সমাজ-বহিষ্কৃতা মহিলারাও সেখানে আশ্রয় পেতেন। হোমে তাদের আর্থিক ক্ষমতায়নের জন্য লেখাপড়া ও অন্য কাজ শেখানো হতো । সাবিত্রীবাই 'বাল্য বিবাহ বন্ধে'এবং 'বিধবা বিবাহ' চালু করার সপক্ষেও সোচ্চার হন ।

নিঃসন্তান ফুলে দম্পতি তাঁদের 'হোমে'ই আশ্রয় নেয়া কাশীবাই নামে এক ব্রাহ্মণ বিধবা মহিলার সন্তানকে নিজেদের দত্তক-পুত্র হিসাবে গ্রহণ করে সমাজকে প্রগতিশীলতার বার্তা দেন। তাঁর নাম হয় যশোবন্তরাও ফুলে ।

ব্রিটিশ আইনে সে সময় কেউ ডাক্তার হলে তাকে জাতিবর্ণ-নির্বিশেষে সব রোগীর সেবা করতে হতো । উচ্চবর্ণের অভিভাবকরা তাই নিজেদের সন্তানকে ডাক্তার করতে চাইতেন না । কিন্তু ফুলে দম্পতি পুত্রকে একজন ডাক্তার করেন । ভারতীয় চিকিৎসা

ইতিহাসে ডাঃ যশোবন্ত রাও এর নাম সাহস ও ত্যাগের প্রতিমূর্তি হিসাবে স্বর্ণাক্ষরে লেখা আছে । তবে , সে কথা পরে ।

একটি বিশেষ ঘটনায় সাবিত্রীবাই একবার জাতপার্থক্য যুক্ত এক প্রেমিক যুগলকে নিশ্চিত হত্যা-র (Honour Killing) হাত থেকে রক্ষা করেন ; ব্রিটিশ আইনে এই হত্যার গুরুতর শাস্তির কথা ক্রোধে উন্মত্তদেরকে বুঝিয়ে ।

১৮৭৩ সালের ২৪শে সেপ্টেম্বর , জ্যোতিরাও এর 'সত্যশোধক সমাজ' প্রতিষ্ঠা হয় ; এতে সাবিত্রীবাই সক্রিয় ভূমিকা নেন। এই সমাজের লক্ষ্য ছিলো অন্ত্যজ মানুষ ও নারীদের জন্য সমান সামাজিক অধিকার ও শিক্ষার অধিকার প্রতিষ্ঠা । সমাজ আয়োজিত বিবাহে কয়েকটি শর্ত ছিলো -- বিবাহ প্রক্রিয়া পুরোহিতহীন , যৌতুকহীন , বর্ণ-বিচারহীন হতে হবে এবং দম্পতিকে 'সমতা'র নাম শপথ নিতে হবে । ১৮৮৯ সালের ৪ই ফেব্রুয়ারি, এই সমাজের অধীনেই তাঁরা নিজেদের পুত্রের আন্তঃবর্ণ (Inter Cast) বিবাহ দেন ।

১৮৯০ সালের ২৮শে নভেম্বর , জ্যোতিরাও ফুলে মারা গেলেন। পুরুষশাষিত সমাজের সকল রীতিনীতির বিপক্ষে গিয়ে সাবিত্রীবাই নিজে স্বামীর চিতায় অগ্নিসংযোগ করেন। অতঃপর , সমাজের উন্নতিতে অঙ্গীকারবদ্ধ এই দৃঢ়চেতা রমণী , 'সত্যশোধক সমাজের' সকল দায়িত্ব নিজের ওপর তুলে নিলেন।

সাবিত্রীবাই একজন কবি-ও ছিলেন । তৎকালীন ব্রাহ্মণ সংস্কৃতিতে চরম অত্যাচারিত নিম্নবর্ণের মানুষ ও নারীদের উদ্বুদ্ধ করার উদ্দেশ্যে তিনি হাতে তুলে নিয়েছেন কলম । লিখেছেন অজস্র কবিতা ও শ্লোগান।

১৮৫৪ সালে প্রকাশিত হয় তাঁর কাব্যগ্রন্থ 'কাব্যফুলে' এবং ১৮৯২ সালে প্রকাশিত হয় 'বভন কাশি সুবোধ রত্নকর' নামে আরেকটি কাব্যগ্রন্থ ।

নিপীড়ণের শৃঙ্খল ভাঙাবার জন্য 'শিক্ষা'ই যে চাবিকাঠি , তা বোঝানোর উদ্দেশ্যে লেখা তাঁর অসংখ্য কবিতার মধ্যে একটি --- 'Go, Get Education' -এ তিনি লেখেন ঃ

" Be self reliant.....gather wisdom

We become animal without wisdom
…..Sit idle no more, go,
Get education
End misery of the oppressed
And forsaken....."

সাবিত্রীবাই এর কর্মময় জীবনের শেষের দিন এগিয়ে এলো ; মানব ইতিহাসে সব চেয়ে ভয়াবহ তৃতীয় প্লেগ মহামারী ছিলো 'বিউবোনিক প্লেগ' বা 'কালো মড়ক', যা ১৮৫৫ সালে চীনে শুরু হয়ে বিশ্বব্যাপী ছড়িয়ে পড়ে। ১৮৯৬ থেকে ১৮৯৮--এই সময়কালে ব্রিটিশ ভারতের বম্বে প্রেসিডেন্সি ও কলকাতা , এর কবলে পড়ে। ১৮৯৭ সালে মহারাষ্ট্রের 'নালা সোপারা' শহরে এই রোগ ভয়ঙ্কর ভাবে ছড়িয়ে পড়ে ।

সাবিত্রীবাই দর্শক হয়ে বসে থাকেন নি । তিনি , ডাক্তার পুত্রকে সঙ্গে নিয়ে পুনে শহরের বাইরে , 'হাদাপসর'-এ , যেখানে সংক্রমণ ছিলোনা , প্লেগ আক্রান্তদের চিকিৎসার জন্য একটি হাসপাতাল খোলেন । মা-বাবার সেবা ও সামাজিক সংস্কারের আদর্শে অনুপ্রাণিত ডাক্তার যশোবন্ত সেখানে সকল জাতের প্লেগ আক্রান্ত রুগীদের নির্দ্বিধায় সেবা দিতেন।

আজীবন অন্যের স্বার্থে উৎসর্গীকৃত সাবিত্রীরাই, পুনের উপকণ্ঠে , 'মুনধোয়া' গ্রামে , 'মাহার' সম্প্রদায়ের এক দশ বছরের বালক প্লেগ আক্রান্ত শুনে ছুটে যান। প্রায় ৪ কিলোমিটার রাস্তা তাকে আপন বাহুতে বহন করে হাসপাতালে নিয়ে আসেন । বালক সেরে উঠলো ; কিন্তু সাবিত্রীবাই সংক্রমিত হলেন। ১৮৯৭ সালের ১০ই মার্চ, আজীবনের সংগ্রাম শেষ করে , তিনি চলে গেলেন এই পৃথিবী ছেড়ে।

মায়ের মতো ডাক্তার যশবন্তও প্লেগে আক্রান্ত হন ও রুগীর সেবা করতে করতে তরুণ বয়সেই মৃত্যুবরণ করেন। বিউবোনিক প্লেগের এই পর্যায়ে গোটা ভারতে এক কোটির বেশী লোক মারা যান।

সদিচ্ছা , সাহস ও ত্যাগের প্রতিমূর্তি, ভারতের নারী নবজাগরণের অগ্রদূত , সাবিত্রীবাই ফুলেকে ভারত সরকারও সম্মান জানিয়েছেন। ১৯৯৮ সালের ১০ই মার্চ , ভারতীয় ডাক

বিভাগ তাঁর ছবি সম্বলিত একটি ডাকটিকিট প্রকাশ করেন। ১৯৮৩ সালে পুনে সিটি কর্পোরেশন তাঁর আবক্ষ মূর্তি স্থাপন করে। ঔরঙ্গাবাদে জ্যোতিরাও ও সাবিত্রীবাই এর মূর্তি বসানো হয়।

২০১৫ সালে পুনে বিশ্ববিদ্যালয় এর নাম তাঁর সম্মানে 'সাবিত্রীবাই ফুলে পুনে বিশ্ববিদ্যালয়' করা হয়। প্রতি বৎসর , মহারাষ্ট্রের বালিকা বিদ্যালয়গুলিতে , সাবিত্রীবাই এর জন্মদিন ৩রা জানুয়ারি দিনটি 'বালিকা দিবস' (Girl Child Day) হিসাবে পালিত হয় ।

ঊনবিংশ শতক থেকে একবিংশ শতকে পৌঁছে , জাতপাতের বিচারে যারা আগে বঞ্চিত ছিলো এবং বর্তমান সমাজের সকল নারীরা , আজ যে ক্ষমতা ও অধিকার নিয়ে মর্যাদাপূর্ণ জীবন যাপন করছে , তার ভিত্তিস্থাপনের জন্য অনেক প্রাতঃস্মরণীয় ব্যক্তিদের সাথে একবার মহারাষ্ট্রের সাবিত্রীবাই ফুলেকেও আমাদের সশ্রদ্ধ প্রণাম জানাতে হবে ।

তথ্যসূত্র ঃ

https://en.wikipedia.org/wiki/Savitribai_Phule

https://simple.wikipedia.org/wiki/Savitribai_Phule

https://www.google.com/search?client=firefox-b-d&q=images+of+Sabitribai+Phule

Savitribai Phule - Her Life, Her Relationships, Her Legacy. 2023.

Reeta Ramamurthy Gupta

The Incredible Life of Savitribai Phule The Fearless Reformer. 2023.

Swati Sengupta

সাবিত্রীবাই ফুলে (1831 --- 1897)

চেঞ্জের সন্ধানে

সুনৃতাবরী সেন
অধ্যাপক, ইতিহাস বিভাগ

ডিসেম্বর মাসের এক শীতের সন্ধ্যায়ে যখন যশিডি স্টেশনে নামলাম তখন শীতের কামড় না থাকলেও ঠান্ডা ঠান্ডা আমেজ ছিল। মনে মনে বিস্মিত হলাম। কনকনে ঠান্ডা পড়বে এই আশা নিয়ে ছোটবেলায় বইতে পড়া সাঁওতাল পরগণা বেড়াতে এসেছি শীতের ছুটিতে।

সময় সংক্ষেপ সুতরাং সত্তর আশি এমনকি পঞ্চাশ বছর আগের বাঙালির মত ছোটানাগপুর মালভূমিতে চেঞ্জে যাওয়ার অবসর নেই। দেওঘর, মধুপুর ,গিরিডী, ডাল্টনগঞ্জ, রাঁচী , হাজারিবাগ ইত্যাদি নানা জায়গায় বাড়ি ভাড়া করে হোল্ডঅল, ট্রাঙ্ক, বেতের চুপড়ি সব নিয়ে সপরিবারে বাঙালি বাবুরা যেতেন , অন্তত এক মাসের জন্য , বায়ু পরিবর্তন করতে। বড়লোক বাবুদের থাকতো নিজেদের বাড়ি। আর এগুলি ঘিরে গড়ে উঠতো কত রোমান্স , কত রোমাঞ্চ। সর্বোপরি নির্মল বাতাস , সর্বরোগনাশক জল সেবন করে পেটরোগা বাঙালির চাঙ্গা হয়ে ঘরে ফেরা। সঞ্জীবচন্দ্র– বিভূতিভূষণ থেকে বুদ্ধদেব গুহ - বহু সাহিত্যিক এমনকি রবীন্দ্রনাথ নিজেও সবুজ বনাঞ্চল ঘেরা , উঁচু নিচু টিলায় ভরা এই অঞ্চলের সৌন্দর্যে আকৃষ্ট হয়েছেন। তাই এবারে বেড়াতে যাইনি, গিয়েছিলাম চেঞ্জের সন্ধানে। খুঁজবো সেই সাওঁতাল পরগণা কে যেখানে শুধু চেঞ্জে নয় প্রয়োজন ও জীবিকার টানে বহু বাঙালি এই অঞ্চলে এসে থেকে গেছে।

আধুনিক দেওঘর শহরে বড় হোটেল। তার পাশে রাস্তা পেরলে ছোট দেওঘর স্টেশন। টিনের শেড দেওয়া এক ফালি আধো অন্ধকার প্ল্যাটফর্ম। লোকজন নেই। শেষ যাত্রীবাহী লোকাল ট্রেন খালি। দাঁড়িয়ে আছে পরের দিনের যাত্রীদের অপেক্ষায়। রাস্তার আলোয় স্বল্পালোকিত জনবিরল প্ল্যাটফর্ম। গা ছম ছমে ভূতের গল্পের পরিবেশ । হোটেলের বারে তখন গান বাজছে , বজরঙ্গবলি মন্দিরে চলছে সন্ধ্যারতি , রাস্তায় suv - sedan এর হর্ন ।

পরের দিন মন টানলো সাঁওতাল পরগনার ভূপ্রকৃতির দিকে । না হলে চেঞ্জে এসে লাভ কি ?

Monte Carlo র দোকানের সামনে থেকে উঠলাম অটোতে। রাস্তা প্রশস্ত এবং সুন্দর। শহর ছাড়াতেই টিলাময় মালভূমির বিস্তীর্ণ প্রান্তর। হলুদ ঘাস, ক্ষয়ে যাওয়া সমমালভূমি, ধূলি ধূসরিত গাছ আর শুকনো সবুজের বিক্ষিপ্ত সমাহার। সকালের ঝকঝকে রোদ শীতের রুক্ষ প্রকৃতিকে আরো

রুক্ষতর করে তুলেছিল। প্রকৃতির নেশা ধরা আমেজে মন তখন গল্পের চরিত্র সন্ধানে ব্যস্ত। নির্জন সাঁওতাল পরগণায় চেঞ্জাররা ভূত দেখে আর বরদার মত গল্প বলে চেঞ্জ কে আরো উপভোগ্য করে তুলতো।

বাসুকিনাথ মন্দিরের হট্টগোল, ত্রিকুট পর্বতে বাঁদরের অত্যাচার, ঘোরামারায় উত্তম পেঁড়া কিনে এবং সর্বত্র বাঙালি টুরিস্টদের সমাবেশ কাটিয়ে দিন শেষের ক্লান্তি কাটলো রাজনারায়ণ বোস বাংলা পাঠাগার (১৯২০),বিহারীলাল চক্রবর্তী রোড, দীনবন্ধু উচ্চ প্রাথমিক বিদ্যালয়ের নাম লেখা হোর্ডিং গুলো দেখে। আর রয়ে যাওয়া স্মৃতি স্বরূপ কিছু বাগানবাড়ির ভগ্নাবশেষ। কয়েকটা বাড়ি টিকে গেছে সেই দাদার কীর্তি সিনেমায় দেখা হাতাওলা বাড়ি যা হস্তান্তরিত বা অবহেলিত। কিছু বাঙালির বাস আছে অঞ্চলে তবে তাদের সঙ্গে দেখা হয় নি।

উশ্রী থেকে ফেরার পথে গিরিডিতে আলাপ হল অশোকবাবুর সঙ্গে। মা তারা ধাবার মালিক। হিন্দিতে হোর্ডিং লেখা থাকলেও মা তারার মধ্যে তাঁর বাঙ্গালিয়ানার পরিচয় রাখতে ভোলেননি। গিয়ে পড়েছিলাম একেবারে মধ্যাহ্ন ভোজনের সময়। ব্যস্ততা তখন তুঙ্গে তবু দু চার কথা বলতে ছাড়লেন না। অনেক পুরুষে প্রবাসী। তবে কলকাতার সঙ্গে যোগাযোগ এবং যাতায়াত আছে। কদিন আগেই ঘুরে এসেছেন যাদবপুর 8B র কাছে তাঁর আত্মীয়ের বাড়ি থেকে। গিরিডিতে বাঙালিদের একটা বেশ বড় বসতি আছে। আছে বাঙালি সাংকৃতিক পরিষদ। বেশ কয়েকটি বাংলায় নাম লেখা বাড়ি নজরে পড়লো। কবে অতীতে জীবিকার সন্ধানে এসেছিলেন এঁদের পূর্বপুরুষ তার পরিচয় পাবার সুযোগ হল না। বর্তমানে শহরটি এত জনবহুল, এত ধুলো আর ভাঙ্গাচোরা যে জগদীশ বসু শেষ জীবন এখানে কটিয়েছিলেন স্বাস্থ্যের কারণে বা রবীন্দ্রনাথ বেশ কিছুদিন কটিয়েছিলেন চেঞ্জের সন্ধানে তা বিশ্বাস করতে ইচ্ছে করে না। সহজপাঠের উশ্রী ---প্রোফেসর শঙ্কুর উশ্রী-- picnic party আর tourist দের ভিড়ে খুঁজে পাওয়া কঠিন। মানুষের অত্যাচারে প্রকৃতি জর্জরিত এবং পরিবেশ মারাত্মক ভাবে দূষিত।

মধুপুর গেলাম শেষ দিন। শিলাময় শুষ্ক মালভূমি আর মাঝে মাঝে সাঁওতালদের গ্রাম। পরিষ্কার উঠোন বেষ্টিত কারুকার্যময় মাটির বাড়ি। বাঙালির মধুপুর আর সাঁওতালদের মধুপুর কল্পনায় রোমান্স সৃষ্টি করছিল যদিও আধুনিক শহরের গন্ডি কেটে সেই সময়কে ফিরিয়ে আনা বুঝলাম অসম্ভব। মধুপুরে এখনও অনেক বড় বড় বাগানবাড়ী নজরে পড়ে কোথাও পোড়ো বাড়ি হয়ে গেছে আবার কোথাও বাগান জঙ্গলাকীর্ণ। কিন্তু শ্বেতপাথরের ফলকে নাম গুলো রয়ে গেছে। আর পাঁচটা ঘিঞ্জি

ছোট শহরের সঙ্গে কোন তফাত নেই । আবর্জনা ভর্তি ডালমিয়া কূপ দেখে বিশ্বাস হয় না যে এই কূপের জল খেয়ে পেটরোগা বাঙালি পেটের অসুখ সারিয়ে ফিরে যেত । বর্ধমান মিষ্টান্ন ভান্ডার বাংলা হিন্দি এবং ইংরেজি হরফে নিজেদের ঐতিহ্য ধরে রেখেছে। মধুপুরে এখনও এটি সব থেকে বড় মিষ্টির দোকান ।খুব ভিড় আর রসগোল্লা ভয়ংকর মিষ্টি।

পরবাদ অঞ্চলে এখনও কিছু বাঙালি চেঞ্জাদের বাড়ি আছে। তবে হারিয়ে গেছে আশুতোষ মুখোপাধ্যায়ের বাড়ি গঙ্গাপ্রসাদ ভবন । মানুষের মন থেকেই মুছে গেছে ও বাড়ির স্মৃতি কিন্তু নেট খুঁজলে মনে হবে বাড়িটা ঐতিহ্য ভবনের তকমা পেয়েছে । এক বাঙালি স্বর্ণ ব্যবসায়ি বললেন ওখানে আর কিছু নেই । পরবাদের সাধারণ মানুষ কিন্তু "আশুতোষের বাড়ি" চেনে । আমাদের পরিচিত শ্রীমতীদির ঠাকুরদার বাড়ি আছে । এখনও চেঞ্জে আসেন বছরে দুবার। আমাদের আমন্ত্রণ করেছেন বহুবার কিন্তু যাওয়া হয় নি । এবারে নেহাত ঘুরতে ঘুরতে তাঁর বাড়িটা পেয়ে গেলাম । দারোয়ান শিউশরণ খুব খাতির করলো ।আশুতোষের বাড়ি আর নেই। সে আমাদের দেখলো নম্বর দেওয়া ২১ টা প্লট । বাড়ির এই পরিণতিতে অনকেই ক্ষুব্ধ । রাস্তার দু পাশে জমি নিয়ে বাড়িটা ছিল ।

বুঝলাম ইতিহাস.... রোমান্স.... কোনো দৃষ্টিকোণ থেকেই চেঞ্জের সন্ধান কঠিন । মধুপুর থেকে কার্মাটার কাছে । বিদ্যাসাগর এখানে শেষ জীবন কটিয়েছিলেন । আমার ঠাকুরদা ১৯৪৭ -৪৮ সালে সাঁওতাল পরগনার এই অঞ্চলে জমি কিনেছিলেন বাড়ি করে চেঞ্জে আসবেন সপরিবারে। সে আর হয় নি । শুধু দলিলটা রয়ে গেছে । জায়গাটা দেখতে যাবার ইচ্ছে ছিল কিন্তু গতিশীল জগতে একটা স্তব্ধ সময় কে খুঁজে পাওয়া কঠিন । অন্তত হরপ্পার মতো সভ্যতা যেখানে থেমে নেই । বর্তমানের দাবী আগে তবু কোন এক সুদূর অতীত মানুষকে মাঝে মাঝে হাতছানি দেয় তার দিকে । চেঞ্জের সন্ধানে গিয়ে যে চেঞ্জ দেখলাম তা এখন অতীত-বর্তমানের সীমারেখাকে সম্পূর্ণ অতিক্রম করে নি । অতীত বর্তমানের আলাপচারিতা তো ইতিহাসের মূল বিষয় বলেছিলেন এক বিখ্যাত ঐতিহাসিক।

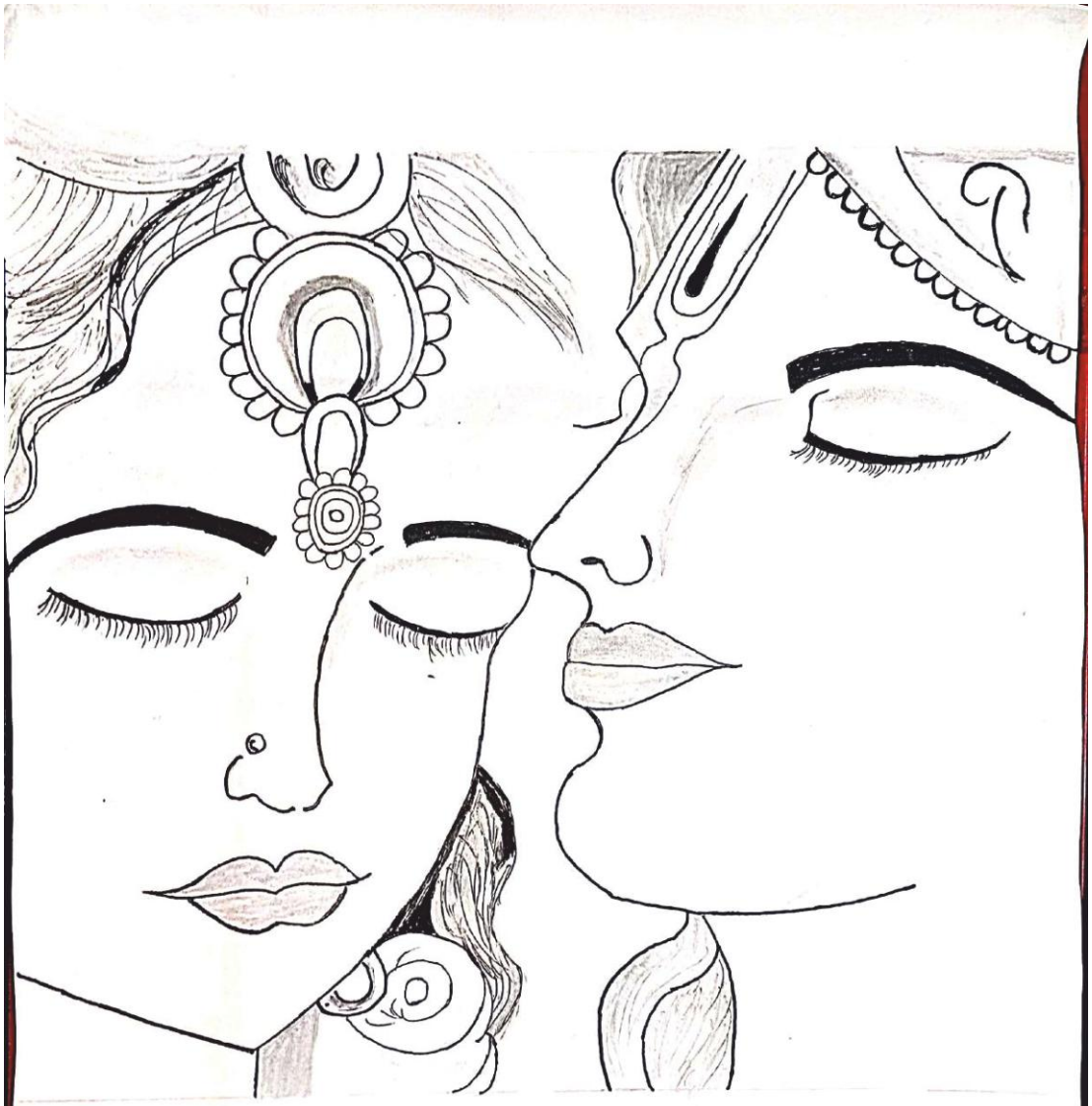

B.A (GEN) . SEM-4
HINDI - DEPARTMENT
Art By
Priti Kumari
Prasad

জয়তু নারী

পিয়ালী ঘোষ
অধ্যাপিকা, সংস্কৃত বিভাগ

অতি সুপ্রাচীনকাল থেকেই ভারতবর্ষে দেবী মূর্তি (নারী অবয়বে তথাকল্পিত ঐশ্বরিক ক্ষমতা যুক্ত) পূজিতা হয়ে আসছে। ভারতবর্ষে সিন্ধু সভ্যতার সময় আনুমানিক খ্রিষ্টপূর্ব ২৫০০-১৫০০ অব্দে দেবী মূর্তির নিদর্শন পাওয়া যায়।

ভারতবর্ষে সনাতন হিন্দু ধর্মে শক্তি, সম্পদ, বিদ্যা ও জ্ঞানের প্রতীক হিসাবে নারী দেবতা রূপে অধিষ্ঠিতা হয়ে বিভিন্ন প্রকারে অর্চিতা হয়েছেন।

এমনকি বন্য হিংস্র প্রাণী থেকে রক্ষা পেতেও মানবসমাজে দেবী মূর্তি আরাধিতা হতে দেখা গেছে, যেমন - সর্প - পরিবৃতা দেবী মনসা, বাঘের উপর উপবিষ্টা দেবী জগদ্ধাত্রী প্রমুখ।

সিন্ধু সভ্যতায় নারীরা সমাজে সম্মানের জায়গায় অবস্থান করতেন। প্রকৃতি ও মাতৃদেবী হিসাবে নারী শক্তি পূজিতা হতেন। সিন্ধু উপত্যকার সভ্যতা স্পষ্ট ভাবে হিন্দু ধর্মে শক্তি আচারের আর্বিভাবের চিহ্ন বহন
করে, যা দেবীকে মহা বিশ্বের উদ্ভাবিকা সংরক্ষণকারিণী এবং ধ্বংসকারিণী রূপে পূজা করতো।

সমাজে স্ত্রীকে পুরুষের অর্ধাঙ্গিনী রূপে গণ্য করা হতো এবং একজন অবিবাহিত পুরুষকে অসম্পূর্ণ মানুষ হিসাবে বিবেচনা করা হত।

ঋক বৈদিক যুগে নারীরা তাদের গার্হস্থ্যের ক্ষেত্রে সম্মান ও সুযোগের অধিকারিণী ছিলেন। তাঁরা তাঁদের সন্তানদের স্রষ্টা। তাঁরা শিক্ষাগুরুও হয়ে উঠে ছিলেন। বৈদিক সমাজে স্ত্রী'র অবস্থান সম্মানিত হয়েছিল পতির পাশে অবস্থান করে ধর্মীয় অনুষ্ঠান সম্পাদনের ক্ষেত্রে। স্ত্রীকে ছাড়া স্বামীরা কোন যজ্ঞ অনুষ্ঠানে অংশ গ্রহণ করতে
পারতেন না, কারণ এটা বিশ্বাস করা হত যে সর্বশক্তিমান ঈশ্বর সেই যজ্ঞের স্বীকৃতি দেবেন না।

বেদ উপনিষদ ও অন্যান্য গ্রন্থে দার্শনিক, রাজনীতিবিদ, শিক্ষক, প্রশাসক এবং অধ্যাত্মিক চর্চার সঙ্গে যুক্ত অসংখ্য নারীর উদাহরণ পাওয়া যায়।

পরবর্তীকালে বৈদিক যুগে রামায়ণ মহাভারত মহাকাব্যে নারীদের স্বয়ংবরা বা নিজেদের পতি নির্বাচনের কথা বলা হয়েছে। আবার সীতার নিজের চরিত্রের সততা প্রমাণের জন্য রামায়ণে তাঁর অগ্নি পরীক্ষার ঘটনার বর্ণনাও পাওয়া যায়।

ধর্মসূত্রে বলা হয়েছে যে বিবাহ একটি চুক্তি নয়, কিন্তু এটি একটি পবিত্র মিলন যেখানে নারী সম্মানিত হয় এবং জীবনে স্বাধীনতা ভোগ করে। মনুস্মৃতিতে চার বর্ণের বিভাজন ও তাদের কর্তব্য কর্মের কথা স্পষ্ট ভাবে বর্ণিত আছে। মনু স্মৃতিতে
নারীদের তাঁদের পরিবারের পুরুষ সদস্যদের নিয়ন্ত্রণে ও কর্তৃত্বে থাকার কথা বলা হয়েছে। নারীরা শৈশবে পিতা,
যৌবনে স্বামী এবং বার্ধক্যে পুত্রের দ্বারা নিয়ন্ত্রিত ও সুরক্ষিত থাকবে। মনুস্মৃতিতে নারীদের একক স্বাধীনভাবে থাকার কথা অস্বীকার করা হয়েছে। মনুস্মৃতিতে সমাজে মহিলাদের বেদ পাঠ, মন্ত্রোচারণ নিষিদ্ধ হয়। মহিলারা

শিক্ষার অধিকার থেকেও বঞ্চিত হন। পরবর্তীযুগে বৈদিক সমাজে মহিলাদের এই নিম্ন অবস্থানের জন্য ‘মনুস্মৃতি’
অনেকখানি দায়ী।
পৌরাণিক যুগে মহিলাদের বিবিধ ব্রতের কথা পুরাণে উল্লিখিত আছে, স্বামী এবং পুত্রের মঙ্গলের জন্য তাঁদের এই ব্রত। পুরাণে বলা আছে, স্বামী স্ত্রী’র সম্পূর্ণ অংশ জুড়ে থাকবেন এবং স্ত্রী স্বামীর প্রতি বিশ্বাসী ও দায়িত্বশীল থাকবেন।
উপনিষদে কখনই নারী সেভাবে সম্মানের আসনে অধিষ্ঠিত হয় নি। মহিলারা তাদের বিবাহিত জীবনের
সুরক্ষা, পুত্র সন্তান জন্ম দেবার জন্য ব্রত বা কালা জাদুর প্রয়োগে অন্য মানুষের ক্ষতি সাধন ইত্যাদি কাজে লিপ্ত থাকেন - এই ভাবে সমাজে তাদের অবস্থান বর্ণিত হয়েছে।
আদি কালে বেশ কিছু নারী ছিলেন যেমন গার্গী, মৈত্রেয়ী, অপলা, লোপামুদ্রা, যাঁরা যথেষ্ট মাত্রায় বিদুষী ছিলেন।
দর্শন চর্চা এবং রচনা করতেন তাঁরা। জ্যোতিষ ও জ্যোতির্বিদ্যায় তাঁরা ছিলেন পারদর্শী, তাঁদের আয়ত্তে ছিল ধনুক
চালনা, অস্ত্র বিদ্যা, শিক্ষকতা ও গুরুর দায়িত্ব পালন করা। আদিকালে নারীরা কেবল গুরু পত্নীই নন, স্বয়ং গুরুও
ছিলেন।
ধর্ম সম্পর্কে যথেষ্ট সচেতনতা থাকলেও যৌনতার ব্যাপারে তেমন রক্ষণশীল ছিলো না সেই সমাজ। নারীদের কৌমার্য ও সতীত্বকে তখনো বড় করে দেখানো হত। অবিবাহিত অবস্থায় মাতৃত্ব অর্জন বা বিয়ের আগে কৌমার্য
হারানো মোটেই গ্রহণীয় ছিল না। যার জন্য সত্যবতী ও কুন্তীর মত শক্তিশালী, সাহসী এবং যথেষ্ট কৌশলী নারীদের
বিবাহের পূর্বে সন্তান ধারণ করার পর সমাজের এবং পুরুষের প্রত্যাশা মেটাতে আবার দেবতার দাক্ষিণ্য নিয়ে তাদের কুমারী সাজতে হয়েছে, আদায় করতে হয়েছে স্বামী, যাতে দেহের কোথাও কৌমার্য হানির চিহ্ন না থেকে যায়।
অর্জুন, ভীমসহ পঞ্চপাণ্ডবের সকলেই বিবাহ বহির্ভূত যৌন সম্পর্কের থেকে জন্ম গ্রহণ করলেও সেটি
নিন্দনীয় হয় নি।
একই রকম ভাবে, কর্ণ যেহেতু সূর্যদেবের সঙ্গে অবিবাহিত কুন্তীর সম্পর্কের ফসল, বিবাহর পূর্বে জন্ম গ্রহণ করার লজ্জায় মাতা তাঁকে পরিত্যাগ করেছিলেন।
যুগের প্রয়োজনে যে অনিবার্য পরিবর্তন ঘটে সেও আসে মেয়েদেরই জীবনচর্যার পরিপ্রেক্ষিতে। সমাজ ব্যবস্থার
ভারসাম্য রক্ষার্থে যে পরীক্ষা নিরীক্ষা চলে, সেও তো নারীর উপর দিয়েই। দেশে জনসংখ্যার নিরিখে কখনও তাকে
শতপুত্রের জননী হবার জন্য উৎসাহ দেওয়া হয়, কখনও বা এক সন্তানের জননী হবার নির্দেশ দেওয়া হয়। এই

পরীক্ষা-নিরীক্ষা পুরুষের উপর এমন প্রত্যক্ষগোচর নয়।
নারীই সমাজের, তথা পরিবারের মূল কাঠামো। নারী যেমন পরিবারের পরিচালিকা, তেমনি পরিচারিকাও বটে। সে যেমন সংসারের সেবায়, কল্যাণ চিন্তায়, উৎকর্ষ সাধনায়, মধুর, কোমল, অনলস তেমনি আবার সেই সংসারের শুচিতা শুভ্রতা সভ্যতা শৃঙ্খলা রক্ষার নিয়ম নীতিতে কঠোর, কঠিন। নারীর আর এক নাম শ্রী।
ঋগ্বেদে দেবী সূক্তে নারী শক্তিকে মহাবিশ্বের সারমর্ম হিসাবে ঘোষণা করেছে। (১/২) এখানে নারীকে পদার্থ ও চেতনা, চিরন্তন ও অসীম, ব্রহ্ম ও আত্মা হিসাবে উল্লেখ করা হয়েছে।
কিছু উপনিষদ, শাস্ত্র ও পুরাণ, বিশেষত দেবী উপনিষদ, দেবী মাহাত্ম্য ও দেবী ভাগবত পুরাণে নারীকে সবচেয়ে শক্তিশালী ও ক্ষমতায়নকারিণী শক্তি হিসাবে উল্লেখ করা হয়েছে।
প্রাচীন ও মধ্যযুগীয় হিন্দু ধর্ম গ্রন্থগুলি নারীর কর্তব্য ও অধিকারের বিচিত্র চিত্র উপস্থাপন করে। গ্রন্থগুলি নারীদের
আট ধরনের বিবাহকে স্বীকৃতি দেয়।
পণ্ডিতদের মতে, বৈদিক যুগের হিন্দু ধর্মগ্রন্থ সমূহ এবং প্রাচীন ও মধ্যযুগীয় হিন্দু সমাজে যৌতুক ও সতীদাহ প্রথা প্রচলিত ছিল না।
ইতিহাস জুড়ে, হিন্দু সমাজ অনেক নারী শাসক দেখেছে যেমন রুদ্রমা দেবী, ধর্মীয় ব্যক্তিত্ব এবং সাধু যেমন মৈত্রেয়ী বৈদিক হিন্দু আচার অনুষ্ঠানের মহিলা অনুশীলনকারিণী ও সঞ্চালিকা।
বৈদিক যুগের আদি পর্বে নারীরা জীবনের সকল ক্ষেত্রেই পুরুষের সঙ্গে সমানাধিকার ভোগ করেছেন। পতঞ্জলি ও কাত্যায়নের মতে প্রাচীন ভারতীয় বৈয়াকরণের লেখা থেকে ইঙ্গিত পাওয়া যায় যে আদি বৈদিক যুগে নারীরা শিক্ষিতা ছিলেন।
বৈষয়িক শিক্ষার ক্ষেত্রেও নারীরা সমান সুযোগের অধিকারী ছিলেন। কবি হালের কাব্যসংকলন 'গাথা সপ্তশতী' তে আটজন কাব্যরচয়িত্রীর নাম পাওয়া যায়, যারা চারুকলা বিদ্যা শিক্ষাতেও সমান পারদর্শী ছিলেন। মনু বলেছেন-

''যত্র নার্যস্তু পূজ্যন্তে রমন্তে তত্র দেবতাঃ।
যত্রৈতাস্তু ন পূজ্যন্তে সর্বাস্তত্রাফলাঃ ক্রিয়াঃ।।''

অর্থাৎ, সেখানে নারীরা পূজিতা, সেখানে দেবতাও খুশি হন, যেখানে তাঁদের পূজা নেই, সেখানে সকল ধর্মকর্মই নিস্ফল। সুতরাং লক্ষ্য করা যায় যে ভারত প্রাচীনকাল থেকে নারীদের সম্মান প্রদর্শন করা হয়ে আসছে।
জৈন, বৌদ্ধ যুগেও নারীদের সম্মান ম্লান হয়নি। পুরুষদের মত তারাও সংঘে প্রবেশ করতে পারতেন। সর্ব প্রকার বিদ্যালাভ করার সুযোগ থেকে তাঁরা সামান্যও বঞ্চিত হতেন না। জৈন ধর্মে দেখা যায় যে পুরুষ অপেক্ষা নারী সদস্যের সংখ্যাই বেশি ছিল। ভিক্ষু মাত্র ১৪০০০ জন, ভিক্ষুণী সেখানে ৩৬০০০ জন।
মধ্যযুগে রাজনীতি, সাহিত্য, শিক্ষা ও ধর্মসহ বিভিন্ন ক্ষেত্রে বহু বিশিষ্ট নারীর সন্ধান পাওয়া যায় যেমন রাজিয়া (১২০৫-১২২০)। মহিলা সুলতান বা সুলতানা, যিনি দিল্লী শাসন করেছেন।
বিগত কয়েক সহস্রাব্দে ভারতীয় নারীর অবস্থা বহু পরিবর্তনের মধ্য দিয়ে গেছে। প্রাচীন যুগ থেকে মধ্য যুগে তাঁদের অবস্থার অনেক পরিবর্তন পরিলক্ষিত হয়।

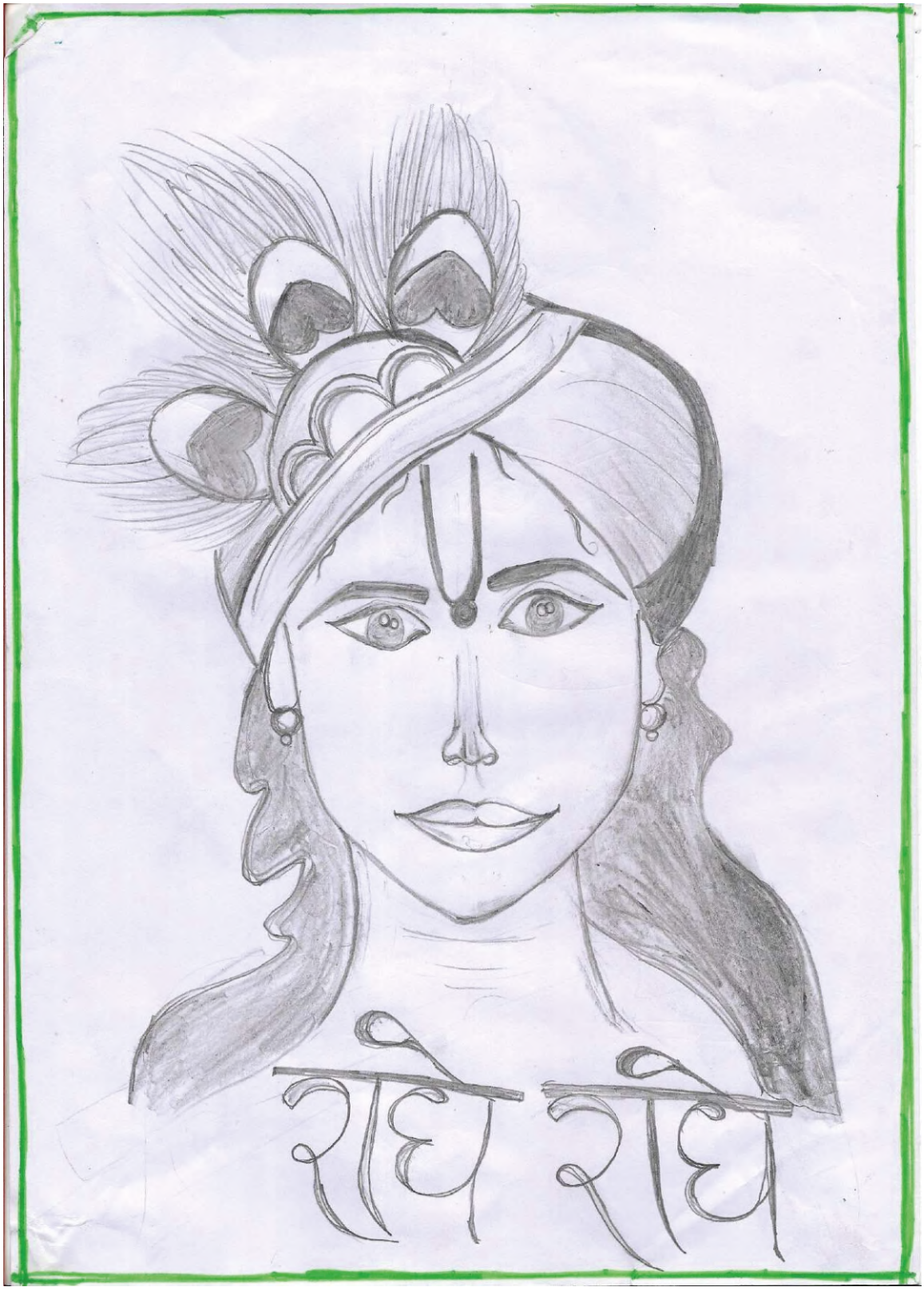
राधे राधे

মনের সমস্যা ও সমাধান

অধ্যাপিকা রিয়াঙ্কা চ্যাটার্জি

সম্প্রতি এক স্কুল ছাত্রীর আত্মহত্যাকে ঘিরে বিভিন্ন মহলে এবং social media গুলিতে অবসাদ নিয়ে হরেক মন্তব্য শোনা যাচ্ছে। বেশীরভাগ ক্ষেত্রেই অবসাদ জনিত আত্মহত্যার ঘটনা অল্প বয়সী বা টিন এজদের মধ্যে বেশি পরিলক্ষিত হয়েছে। কিন্তু মাঝবয়সি দের মধ্যে যে অবসাদ জনিত আত্মহত্যার ঘটনা যে নেই তা একেবারেই উড়িয়ে দেওয়া যায় না।এই ধরনের ঘটনার পরিসংখান লক্ষ্য করলে দেখা যাবে যে বিগত দশক গুলির তুলনায় বর্তমান সময়ে এর সংখ্যা উত্তরোত্তর বৃদ্ধি পেয়েই চলেছে। অনেকেই এর কারণ হিসাবে social media কে, প্রতিহিংসা পরায়ণ চলচ্চিত্র বা ওয়েব সিরিজকেই দায়ি করেন। কিন্তু মনে রাখতে হবে সোশাল মিডিয়া জনপ্রিয় হওয়ার অনেক আগেও কিন্তু অবসাদ জনিত আত্মহত্যা অনেকেই ঘটেছে, কিন্তু সেগুলি খুব বেশি লোকসমাজের নজরে আসেনি যেহেতু তখন মাস মিডিয়া অত জনপ্রিয়তা পায়নি। তাহলে এখন প্রশ্ন থেকে যায়, অন্য age group এর তুলনায় মাঝবয়শি বা অল্প বয়সী দের মধ্যে কেন অবসাদ এর সংখ্যা এত বেশি? শুধু মাত্র সোশাল মিডিয়া কে এর জন্য দায়ি করা একেবারেই উচিৎ নয়।

যদি গভীর ভাবে অনুসন্ধান করা যায় তবে দেখা যাবে বর্তমানে যুব সমাজ তথা অল্প বয়সী শিশুরা পর্যন্ত 'না' শুনতে খুব একটা অভ্যস্ত নয়। জীবনের ব্যর্থতাকে মেনে নিতে তারা অনেকাংশে অসফল। ছোট থেকে সমস্ত চাহিদা প্রিয়জনদের থেকে পূরণ হতে থাকায়, বৃহত্তর সমাজের থেকেও তাদের এটাই প্রত্যাশা থেকে যাচ্ছে, তারা যা চাইছে, যাকে চাইছে, যেমন ভাবে চাইছে , সেটাই হয়ত ঠিক। কোন বিষয় নিয়েই 'বিরূপ' অথবা 'ঋণাত্মক মন্তব্য' তাদের মেনে নিতে অসুবিধা হচ্ছে। ছোটদের এজন্য দোষ দেওয়া উচিৎ নয়। কারণ 'সামাজিকীকরণ' এবং মানসিক বিকাশ শুরু হয় সবার প্রথম বাড়িতেই। সেখানে ছোট থেকেই যদি সে বাড়ির সকলকে মুঠো ফোনে বন্দি থাকতে দেখে তাহলে পরবর্তী সময়ে গিয়ে তাদের কাছেও ঐ কাল্পনিক জগৎটাই হয়ে ওঠে সময় কাটানোর একমাত্র মাধ্যম। অল্প বয়স থেকে সকলের অগোচরেই কিন্তু এই মানসিক দূরত্ব তৈরি হয়ে যায় বাড়ির লোকের সাথে, যেটা হয়ত আমরা কেউই ইচ্ছাকৃত ভাবে করতে চাইনা।

পুঁথিগত ভাবে বলা হয় শহুরে আদবকায়দা ভরা জীবন যত অগ্রগতির দিকে এগোবে, ততই বৃদ্ধি পাবে মানুষের সাথে মানুষের দূরত্ব আর একাকীত্ব। একথা যে ভুল তা কিন্তু অস্বীকার করার নয়। বর্তমানে প্রযুক্তি স্থানগত ভাবে দূরে থাকা মানুষকে হয়ত কাছে এনেছে ঠিকই, কিন্তু, দূরে করে দিয়েছে পাশে বসা মানুষটিকে। এর মধ্যে উল্লেখ্য হল ভার্চুয়াল জগতের প্রতি অতিরিক্ত আসক্তি এবং বাবা মায়ের সাথে দূরত্ব বৃদ্ধি। আর এখান থেকেই শুরু হয় সমস্যা। উভয়ের মধ্যে সরাসরি সম্পর্ক না থাকলেও উভয় ঘটনাই একে অপরকে ইন্ধন অবশ্যই যোগায়।

অল্প বয়সীদের মধ্যে অবসাদ জনিত এই ধরনের ঘটনা কখনই কাম্য নয়, শুধু অল্প বয়সী কেন কোন বয়সের ক্ষেত্রেই নয়। তার থেকে বেশী কাম্য নয় বাবা মায়ের সাথে সন্তানদের এই দূরত্ব বৃদ্ধি। বয়ঃসন্ধি এমন এক পর্যায় যখন শারীরিক বিভিন্ন পরিরর্তনের সাথে সাথে তৈরি হয় মানসিকতা। আর এই পর্যায়তেই ভার্চুয়াল মিডিয়া বেশী করে দায়ি। মাত্রাতিরিক্ত ভার্চুয়াল জগতের প্রতি নেশা আর হাতের মধ্যে সারাক্ষণ একটি মুঠো ফোন কখন যে কাল্পনিক আর বাস্তব জগতের

মধ্যে একটা সীমারেখা টেনে দেয় তা আমরা নিজেরাও বুঝতে পারি না। নয় অতীতের কোন ঘটনা নিয়ে স্মৃতি বিজরিত হয়ে উদাস হয়ে পড়ছে অথবা ভবিষ্যতের কোন এক অজানা আশঙ্কাকে ঘিরে জীবন কাটাচ্ছে। এই দুইয়ের কোথাও তাদের বর্তমান নেই। একটা কথা মনে রাখবেন, অবসাদ কিন্তু একদিনে তৈরি হয় না। অনেক চাহিদার অপূর্ণ থেকে যাওয়া, নিজেকে ধীরে ধীরে পারিপার্শ্বিক জগৎ থেকে দূরে সরিয়ে নেওয়া, হীনমন্যতা, নিজের ব্যর্থতা মেনে নিতে না পারা, এসবের থেকেই সূত্রপাত হয় একাকীত্বের অনুভূতি আর যার থেকে জন্ম নেয় অবসাদ। বর্তমানে যেটা কোন বয়সের মধ্যেই আটকে নেই। ছোট থেকে বড় সকলেই আমরা কোন না কোন কারণে অবসাদে ভুগছি। দ্রুত সব চাহিদার পূরণ হয়ে যাওয়া, আমাদেরকে বাস্তবের পরাজয়টা কে মেনে নিতে শেখাতে পারে না। কিন্তু ঐ যে বললাম, এটা এক দিনের ঘটনা নয়, ধীরে দিরে বেড়ে ওঠার মতন রোগ। তাই উপায় অবশ্যই আছে। আর সেটা আমাদের কাছের মানুষরাই পারবেন সব থেকে ভালো বুঝতে। ছোটদের ক্ষেত্রে তার বাবা মা, বা বড়দের ক্ষেত্রে তাদের কাছের মানুষ যারা সব সময় কাছে থাকছেন। এক্ষেত্রে গুরুদায়িত্ব তাদেরই। আচরণের মধ্যে পরিবর্তন, উদাসীন মনোভাব, অযথা রেগে যাওয়া বা নিজেকে বাইরের জগৎ থেকে সম্পূর্ণ ভাবে গুটিয়ে নেওয়া, এসব লক্ষ্য করলে সেটিকে অগ্রাহ্য না করে অবশ্যই চিকিৎসকের পরামর্শ নিন। শহরের আদবকায়দার মধ্যে থেকেও মনের কোন রোগ হলে আজও আমরা মনোবিদের কাছে যেতে দ্বিধা বোধ করি। শরীরের রোগ বাইরে থেকে দেখা যায় কিন্তু মনের রোগ বাইরে থেকে যেমন দেখাও যায় না তেমনই অন্য কেউ সেটার গভীরতাকে উপলব্ধিও করতে পারেন না। যেহেতু বাইরে থেকে দেখা যায় না তাই আমরা মানসিক কোন রোগ কে খুব একটা গুরুত্ব দিই না, কিন্তু মনে রাখতে হবে এমন অনেক রোগ আছে যার উৎস কিন্তু আমাদের 'মন'। আর বাইরে থেকে দেখে বোঝা যায় না বলেই হয়ত 'মনের' বিভিন্ন রূপকে আমাদের আরও বেশী করে গুরুত্ব দেওয়া উচিৎ ।শরীরের যেমন রোগ হতে পারে, মনেরও তো হতে পারে। তাই তারও চিকিৎসা প্রয়োজন এবং সময় থাকতে পরামর্শ নিলে দ্রুত আরোগ্যও সম্ভব।

মনোবিদ এর কাছে যাওয়া মানেই সে 'পাগল' হয়ে যায় না ।স্থান কাল নির্বিশেষে আমাদের সকলের এই মানসিকতা পালটানো প্রয়োজন। আমাদের আরও অনেক বেশী সচেতন এবং উদার মনভাবাপন্ন হতে হবে। সমস্যা ছোট থাকতে থাকতে তাকে নির্মূল করার ব্যবস্থা করুন। উপযুক্ত চিকিৎসা আর কাউন্সিলিং রোগ এর প্রাথমিক পর্যায় থেকেই শুরু হলে সেটা আর বিশাল আকার ধারণ করতে পারে না। বাঁচানো যায় এমন অনেক প্রাণ যাদের মৃত্যু অবসাদের থেকে। এটা আমাদের সকলের একটা চেষ্টা মাত্র। আধুনিক হওয়া মানে কিন্তু পরিবর্তনের সাথে নিজেকে উপযুক্ত করার পাশাপাশি পুরনো ধ্যানধারণা গুলিকেও পাল্টে ফেলা।

সকলের প্রতি তাই একটাই আবেদন, জীবনের জটিলতা গুলিকে নিত্যসঙ্গী ভাবার কোন কারণ নেই, আপনার আমার মনের এমন অনেক সমস্যার সমাধান, যা আমরা নিজেরা খুঁজে পাচ্ছিনা তার থেকে মুক্তির উপায় বলে দেবে আমাদের মনোবিদরাই। অবসাদ কোন রোগ নয়,মনের এক অবস্থা মাত্র যা দীর্ঘদিন ধরে চলতে থাকলে যেমন খারাপ পরিনতির দিকে যেতে পারে, আবার প্রাথমিক পর্যায়ে চিকিৎসা করলে একটা সুন্দর জীবনকেও উপভোগ করা যেতে পারে। আপনার সামান্য সচেতনতা কিন্তু আপনার কাছের মানুষটিকে অবশ্যই একটা সুন্দর জীবন উপহার দিতে পারে।

लड़कियां

कौन कहता है लड़की कुछ नहीं कर सकती,

तू एक कदम उठा के तो देख

हा माना रस्तो में बहुत से काटे मिलेंगे,

मगर काटो के बाद फुलो को तो देख....

बस तू अपने सपनों को सच होते देख,

बस तू कभी हटना नहीं आपने रास्ते से,

तेरी कामयाबी की ख़ुशी में देख कितने लोग खड़े हैं...

बस तू आगे बढ़ती जा,

अपने सपनों को सच करके उड़ती जा,

अपने ख्वाबों को पूरा करती जा,

बस तू अपने कदमों में पंख लगा कर उड़ती जा ।

शानवी उपाध्याय

हाँ, हम किसान हैं।

नाम–स्नेहा गुप्ता
रोल – २३८
डिपार्टमेंट – बीकॉम (होन्म.)

हम किसान है देश की शान हैं.
धुप छाव बारिश में भी करते ना विश्राम हैं।।
कड़ी धुप की परवाह नही हमें, फसलें हमारी जान हैं।
लोगों के पेट भरने में दी वक्त की रोटी नहीं मिलती
हम वह लाचार हैं।।

हाँ, हम किसान हैं।।
हम किसान हैं देश के अभिमान हैं।
हर समय बदलती परिस्थिति से हैरान हैं।।
कभी–कभी तो लगना है हो रहे हम नाकाम हैं।
लगता है जीवन के कष्ट ही हमारे इनाम हैं।।

हाँ, हम किसान हैं।

प्रकृति हमारी माँ

न कोई मालिक इसका ,
न इसका कोई नौकर है,
कोमल मन में इसके न कोई खोट,
भूल से भी न पहुंचाना इसको कोई चोट ,
प्रकृति हमारी माँ,
हरियाली रूपी चुनरी है ओढती,
ये धूप छाँव से अपना शृंगार करती,
झोली इसकी कभी खाली न रहती,
लाखों दुःख हंसकर है सहती,
कभी ठंड से सताती है,
तो कभी गर्मी से तपाती है,
हजारों रंग लिए खुद में,
मौसम की बहार लाती है,
प्रकृति हमारी माँ कहलाती हैं।

नाम:रिया कुमारी राय
रोल नं:1393
सेमेस्टर: 6

-: मेरी जिन्दगी :-

काश जिंदगी मेरी कोई किताब होती,
जिक्र तुम्हारे पन्नों को मे फाड़ देती।
स्याही जिस कलम की ईसतमाल होती,
उस काँच की शीशी को में उजाड़ देती।
सहारा क्यो दिया तुमने,
जबकि खुद को में संभाल लेती।
हाँ गिरती कही बार, चूने मेरे रास्तो पर,
लेकिन विश्वास है मुझे, खुद को में संभाल जाती।
दिखावे कि तुम्हारे उन बातो को,
काश, पहले ही में पहचान पाती।
जाहिर कर देते वो राज,
जो दिल में थे तुम्हारे।
सच कहती हूँ,
अपने जिक्र को भी,
तुम्हारे (जिन्दगी की) किताब में टाल देती।

नाम - नेहा कुमारी
कक्षा - वि.ए. द्वितीय सेमेस्टर
क्रमिक नं - ८०
कॉलेज नाम - महारानी काशीश्वरी कॉलेज

महादेवी वर्मा जी

वे मुस्काते फूल, नहीं जिनको आता हैं मुरझाना
वे तारों के दीप, नहीं जिनको भाता है बुझ जाना

आधुनिक मीरा महादेवी वर्मा जी

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आँखे देती सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार ।

नाम - नेहा कुमारी
कक्षा - वि.ए. द्वितीय सेमेस्टर
क्रमिक नं - ८०
कॉलेज नाम - महारानी काशीश्वरी कॉलेज

-: बचपन की यादे :-

वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिसका रोज एक नया फसाना था।
कभी पापा के कंधो का,
तो कभी मां के आँचल का सहारा था।
कभी बेफिक्रे मिट्टी के खेल का,
तो कभी दोस्तो का साथ मस्ताना था।
कभी नंगे पाँव वो दोड़ का,
तो कभी पंतग ना पकड़ पाने का पछतावा था।
कभी बिन आँसू रोने का,
तो कभी बात मनवाने का बहाना था।
सच कहुँ तो वो दिन ही हसीन था,
ना कुछ छिपाना और दिल में जो आए बताना थे

नाम - नेहा कुमारी
कक्षा - वि.ए. द्वितीय सेमेस्टर

प्रेमचन्द

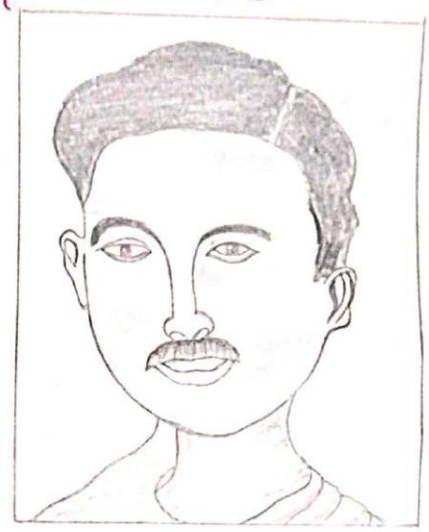

"अर्थ क्रान्ति में ही
देश का उद्धार है,
ऐसी क्रान्ति
जो सर्वव्यापक हो,
जो जीवन के मिथ्या
आदर्शों का,
झूठे सिद्धान्तों और परिपाटियों का
अन्त कर दे,
जो एक नये युग की प्रवर्तक हो
एक नयी सृष्टि खड़ी कर दे,
जो मनुष्य को,
धन और धर्म के आधार पर टिकने वाले
राज्य के पंजे से मुक्त कर दे।

प्यारे पक्षी

इतनी खलबली किस बात की?

ये तो रोज़ाना कि बात है,

क्या ही अनोखा दिखाने ले चली तुम,

वह तो हमेशा तुम्हारे साथ है |

भोर होते ही जाग उठती हो,

संग सभी को साथ लिए,

नींद, सुस्ती, आलस भुलाकर,

उड़ान भर्ती हो आकाश के लिए |

कितनी ही रोमांचक होगी ये उड़ान?

है तो वही रोजमर्रा की काम,

सोचूँ, पर न जान पाउँ मैं,

लिखकर सब में बाँटु तुम्हारी पैगाम।

Name- Shriya Bhattacharya

Sem - 3rd Subject – Food and nutrition

पिता

पिता मेरा साहस, मेरी इज्जत, मेरा सम्मान है पिता।

मेरी ताकत, मेरी पूँजी, मेरी पहचान है पिता।।

घर की एक एक ईंट में शामिल उनका खून-पसीना।

सारे घर की रौनक उनसे सारे घर की शान पिता ।.

मेरी इज्जत, मेरी शोहरत, मेरा रुतबा, मेरा मान पिता।

मुझको देने वाले, मेरा है अभिमान पिता ।।

सारे रिश्ते उनके दम से, सारे नाते उनसे हैं।

सारे घर के दिल की धड़कन, सारे घर की जान पिता ।।

शायद रब देकर भेजा, फल ये अच्छे कर्मों का,

उसकी रहमत, उसकी नेअमत, उसका है वरदान पिता ।।

- ज्योति कुमारी गुप्ता

अनजान नगर

नेहा कुमारी
बी.ए. द्वितीय सेमिस्टर

अनजान यह नगर हैं
अनजान यह डगर हैं

न ढ़लाव का पता हौं
न ढ़लान की खबर है

सब कह रहे सुसाफिर
चलना–सम्बक–सम्भल

कर लम्बा बहुत सफर हैं
छोटी बहुत उम्रर हैं

Gungun Gupta
1st Sem

A Poem From Santiago Nasar's Dead Body.

Shruti Tripathi
Sem - 1
English Honours

they have killed me, mother,
and i am lying all dead and still,
here in your kitchen, wondering why.
I recall everything that could be the reason;
I count only sins but not a fault
for a punishment like this.
I loved only two women,
it was the third one who lied,
it was the third one whom I never loved,
it was the third one, for her, I died.
they have killed me, mother;
they, who hated me once, are now
mourning, sitting, and are very scared;
scared not of their inability to save me
but on knowing how unbothered
they chose to be.
but i am dead now, mother,
lying all dead and still in your kitchen,
begging in vain for just one more breath
to question the cause of my death.

-shruti.

"Besides, when he finally learned at the last moment that the Vicario brothers were waiting for him to kill him, his reaction was not of panic, as has so often been said, but was rather the bewilderment of innocence."

"My personal impression is that he died without understanding his death."

lines from **Chronicle of a Death Foretold** by
Gabriel García Márquez.

RAINY DAY

Swagata Khan
Sem - 4
English Honours

A rainy day
when I'm sunk in bed
drained,
with my deranged self

Will you be a beginning to an end?

A fistful of stardust,
constellations up above the sky
Now; serenading us.
Leaving everything behind,

Will you be the beginning to the end?

What if we get lost
into the crowds of thousands
In the deceptive future;
still holding hands,

Will you be my beginning of the end?

A STUDENT'S NOTE

Pushplata Singh
2nd Semester
English (Honors)

Arya entered her hostel room, finally after a long, tiring journey. After entering, the first thing she looked at was the wall full of different paintings, feeling a bit happy about how beautifully her whole room was decorated . After getting fresh and settling all her things in the room, she sat down on the floor clutching her knees with her hands, while flashbacks came to her mind of how she was forcefully admitted to the college by her parents. Arya was at least not interested in engineering and always wanted to be an artist but no one really cared about that.

From the next morning, classes were supposed to start, and the hostel was filled with new sets of students with new goals to achieve. As days passed by, the engineering college started becoming more suffocating for Arya.

One night she sneaked out of her room and was trying to escape from college, when she tumbled over something near the staircase. It was a box full of notes. Curiously she picked up a random note from the box and started reading. It was a note from a student to his parents...

"Dear Parents,

I have always tried to make you happy. So when you told me to study engineering I agreed because I didn't want to hurt you.I never wanted to do it but you didn't understand! So I have to give up my dream just for your dreams. Since(delete)I was never a brilliant student, especially when it came to science. But you never understood and always thought that if you put me to a good tuition then I can definitely do better. But it was not so. I was told to mug up everything.I did so and wrote as it is in exams.That's why I could never score good marks in mathematics.Slowly with time my grades in science went down terribly. The only reason being,I never got interested in science and mathematics because I didn't understand anything. But still in class11, I don't know how and why; I took up the subject I feared the most. Then the time came when keeping aside all my dreams I made up my mind to fulfill your dreams. You just broke the bank sorely in the wrong field. You just tried to fulfill your dreams through me, in any way. Undoubtedly, you buried my bad score with money but you can't bury my love for art. Acquaintance and recommendations work rarely by fortune and the same happened with me, your money and acquaintance make me stand here here but unfortunately this journey can't be continued, as I am not capable of this. But seeing my real capability and ability is still with me, the fire of love for art is still burning in my heart . And I know that no fortune will ever be able to snatch it from me.You insisted that I study engineering. So I'm here today. But believe me it is getting unbearable for me.I am still regretting not standing up for my dreams. I

tried to do my best but sorry Mumma… Papa"

After reading the letter Arya's eyes filled up with tears she did not want the darkness to fill her life.She realized that she was not the only one. There were many students like her who were forced to pursue careers against their will.And not only Arya this is the current situation of many students across the country. Their dreams are being killed by either their parents or society.

In India,mostly students are judged by their mark sheet instead of their potential. They are always told to follow whatever others are doing, especially their neighbour's child or their relative's child.Many parents do not understand how much this is affecting their child's mental health.

Till date people haven't changed their mindset. Many parents are imposing their will on their children. Huge number of students are getting suppressed under the society wall. Our parents always want to do the best for us, but sometimes while trying to do the best, they turn out to make a wrong decision causing us to suffer and regret our whole life.Lastly, I would like all the parents to give a chance to their children to pursue their dreams and to prove themselves. Surely they will shine in their field.Even students should never forget that it's their life and should try to convince their parents instead of giving up their dreams. Surely this problem will ultimately come to an end if society changes and adjusts their mindset with new generation.Be understanding towards students,"Give a chance to their dreams and save their life"

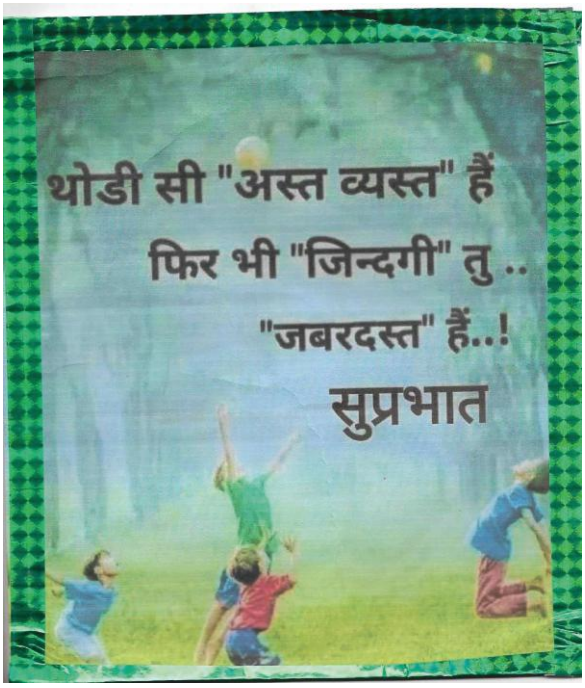

ACCEPT YOUR FAULTS

Pushplata Singh
2nd Semester
English (Honors)

When you don't accept your faults, it puts you into a great downfall.
So from now on, Please take a few minutes to accept your faults.
It may take something from you but will save many things in your life.
Now do a favour to yourself, by keeping the door of your big heart opened, for every one.
So without wasting your time, on thinking about what this world will say.
Be clever and big hearted, reject your downfall and accept your faults.

LOVE

Tejeshweta Pandey
Sem-1
English Honours

It feels illegal but nice ,
Gives me peace of mind and chaos too.
Trying to move away yet getting closer.
Losing interest from all to building interest in you,
Tried to unlove ended up loving you more .
Lost in your eyes , imagining the day you'll be mine .
Endless thoughts, unfinished talks,
greedy of your love and care , is this too much to ask for i swear .

MEETING AT BOUGAINVILLEA

Anneyasha Karar
Semester - II
Englsih Honours

To my beloved , have you remembered me?
I , who used to live in your dream once !
I , with whom you sown your day and months.
I , the girl with bluest eyes , fair skin and long black hair.
The one who you never wanted to share !
Days after , when we were profoundly in love….
Sun arose , sky glowed mesmerizingly.
Wind slowly blew over heads and sudden sweet smell was poured into our nostrils.
As I thought of you as my Cyril….
You plucked a bougainvillea for me , I put it into my hair…. You looked at me fascinatedly , and said your beauty got my heart , I can look at you for the rest of my life…. " You are my own bougainvillea ! "
I laughed , blushing with deep shy , looked down and said , ' beauty dies eventually , however memories rely .'
' Your beauty will never die nor be faded ' you said .
I kept quiet.
Thirty springs have gone, I saw you , you are as same as you were….
But, my beauty have died.
I saw you with a girl who has blue eyes, mine were blur . Who has fair skin mine was dull , wrinkled . Who was long black hair same as me . Mine was grey. My soft pink lips which you addressed as a rose petal ! it was blighted but her is pretty and fresh .
I saw you hold her hands . Just exactly you held mine .
Darling, will you bring me align?
You hold her tight and crossed me . I laid in the very graveyard didn't you see?
I laid in the dark , cold room . Worms ate my flesh and my bones , I'm slowly become the part of the abandoned wone !
I know you are the profane of beauty .
You do not even allow the dark clouds hide the gold ! To me , you are the fyodor.
You may lose your ardour, you may forget me like the arrival malodorous
But , my existence still makes happy someone , my smell could not be bothered that is my bougainvillea, my own bougainvillea . Which falls on my face and admiring me in my older.
But, I hope you soon understand ,,
Beauty lies in the eyes of the beholder.

NOT FALLEN

Soumiya Srivastava
Sem - II
English Honours

From the blue sky he falls, to the red see beneath him, he runs to the brown ground, and died till it was found.

found himself on the dead hell, dark and quiet, roamed around through the whole night, only to see the day light.

No where to be found, the holy ground, cried for his life, and realized, that it was found, he found home, the real one, the one where he belonged, not by birth but by destined.

The hard rocks, the mount high, the red lava and the no sky, was his new world.

Now from the darkest night he rose and leads his world, got the kingdom of his own, and lots of pride,

No need to hide from the celestial Christ, he rebelled and lived for eternity of time

Took his pride, took his wings, took his ability to sing, Couldn't take the man within, he is the fallen king

They called him lucifer, the glorious cloud, now he's fallen and found.

Saten will be his name and thrown will be his power, not the outcast you think he is, but equal to the higher power .

Now he's in the world same as above, leaves among us, no more lost, no more gone.

He is not fallen, he is made.

SHADOW LINES.

Shruti Tripathi
Sem- 4
English Honours

I kill for freedom,
you escape from your city;
he points at your short length skirt,
in a city of stares and gaze.
you are unsafe, insecure, angry.
you escape from your city;
i kill for freedom.

i remember what i want to forget;
that my brother did not die,
that he was killed,
that he did not know of love,
that he loved a lot,
that he is not forgotten,
that remembering him stings,
that nobody wants to retell reminiscences,
that nobody can let it slip off.
i remember what i want to forget,
it is a weight with no place to put down.

you eat what you forget,
what you remember consumes you,
there lies death laughing,
at a series of incidents that
happened for real, only for you,
but for them - it happened
in your dreams, in your imagination.
you have a thousands of stories to tell
and have no one to believe.
there lies death, still laughing;
there you are, still narrating.

a part of my home is in your state,
and you are still finding yours;
a long time friend is now lost,
do you know his home?
do you know your home?
shadow lines were drawn later on lands,
they partitioned us in our minds first;
I see you from other continent,
you still cook what we used to eat together,
and I still have a chair, vacant next to me.
for one can draw thousands of shadow lines
throughout the whole continent,
but how can anyone divide a memory?

-shruti, horror of separation and no one can hold the hands of others.

MEMORABLE DAYS OF MY COLLEGE LIFE

Name: Jyoti Mishra
Alumni of Maharani Kasiswari College
(Department of Commerce)
Year of Graduation: 2023

First of all we have to know, "What is College Life". College life is one of the most memorable phases of one's life. College life is totally different from school life. In college life we get the opportunity to explore new experiences throughout this journey that we were not familiar with in early stage of our life. It's a time where we step out of our comfort zone, step into a world of independence and responsibility and we should focus on our career for a bright future. College life also means enjoying to the fullest and making some special bond with our friends and also our teachers. But everyone is not lucky enough to explore the college life due to various reasons. So I can say that, I am lucky that I got this opportunity for exploring my college life. Now, I am going to share my experiences throughout this journey.

I am an ex-student of **Maharani Kasiswari College**, one of the best girls' colleges in Kolkata. This college offers several Undergraduate courses under University of Calcutta, like-Science, Arts, Commerce, Travel & Tourism etc. I was in the Commerce department. At first I had a perception about college if I can properly manage myself in that new environment because a college is full of a huge number of students and they all were new to me but my thought was changed after taking admission in MKC. I was in 2020 batch i.e. pandemic period. We all know that pandemic period means lockdown period. As a result like others my college life was started through online platform in the year of 2020. At that time we were not aware about online system. But all our teachers were very helpful and supportive towards us from first day onwards and made us aware about the online system and it became easy to use for us. Then I had started exploring new experiences in many ways and made some amazing friend circle. Then after 1.5 years we got the opportunity to go to our college and physically attend the classes, and I was very excited for that. After that every day of my college was memorable for me, because I got the opportunity to learn something new from our teachers and also making some special bonds

with my friends and our teachers. Our respected Principal Ma'am and our respected teachers made us feel free so that we could share our problem with them. They supported us in all fields and also motivated us to represent our college through participate in various inter-college competition, sports or cultural program and also arranged different seminars for us in order to guide us for our bright future. In our college life for the first time we celebrated Teachers' Day in the year of 2022. To make this day very special and memorable, we arranged some cultural programme for our respected Principal Ma'am and our respected teachers. So I can say that this phase of my life is full of with memorable moments which will never end.

But out of all those moments, that one particular day which will always be memorable for our batch and also for me i.e. **20th December 2022**, this day was the day of our **One day Educational tour to TAKI.** We all were very excited on that day because for the first time we were going together for educational tour in order to explore some new experiences throughout that tour with our friends and all our respected teachers. On that day we all gathered in our college premises by 7:30 a.m. and we all were distributed a note book and a pen by our teachers and asked to prepare a report on that journey because our college aims behind that tour is to explore unknown facts and provides immense happiness, a sense of satisfaction among us, develop civic engagement skills, organization skills and interpersonal skills with us. After that our bus was departured at 8 a.m. On the way we saw many industries, colleges, farms and fields. Finally we reached our destination **Taki Raj Bari Ghat, 24 Parganas (North),** at about 12:00 p.m. After taking some refreshment there we all started wondering to different places of Taki.

As we know, Taki is a border town on the bank of the **River Ichamati,** where the river itself serves as a **border between India and Bangladesh.** Apart from great views of the river and the essence of International border Taki also has its share of history, with several palatial buildings. Although majority of the buildings are falling apart but, Taki still boast of it glorious past. Apart from its share of history Taki also has its share of ecology. Located close to the famous mangrove forest of Sundarban Taki also has its share of mangrove forest. After visiting various places of Taki and taking lots of photographs

there we went with our HOD Sir and other teachers for the survey. We spoke to animal husbandry staff, tree caretakers, street vendors, local people and the PHE Guest House receptionist and asked them about the weather, tourism, their experiences in Taki and different aspects related to Taki. In this way we collected lots of information about Taki and we felt very good in doing all that because our teachers were also guiding us in our survey.

After lots of enjoyment finally we started our journey to go back to our college. In this way I gathered lots of memories from that tour which will remain forever in my mind.

At last, I would like to thank our Principal Ma'am, HOD Sir and all our respected teachers very much for making this day and all our college days very memorable for us and also thanks to all my friends for their co-operation, & unity throughout this journey.

Artificial Intelligence's Impact on the Job Market and Its Role in Creating New Jobs

AI, or artificial intelligence, seems to be on the tip of everyone's tongue these days. While I've been aware of this major trend in tech development for a while. I'm sure that for many of us, the term "AI" conjures up sci-fi fantasies or fear about robots taking over the world.In reality, AI is already at work all around us, impacting everything from our search results, to our online education to the way we shop and many more.But what will AI mean for the future of work? As computers and technology have evolved, this has been one of the most pressing questions. As with many technological developments throughout history, the advancement of artificial intelligence has created fears that human workers will become obsolete.Some people are saying that Al will cause mass unemployment as machines take over our jobs. Others are saying that Al will create new and better jobs. So which is it? Let's dive into this topic.

What is Artificial Intelligence?

Artificial Intelligence (AI) is a powerful field of computer science. Al strives to make machines capable of performing tasks typically done by humans. This includes visual perception, speech recognition, decision- making, and translation between languages, graphic designing, video editing, accounting, and a lot more

The Wide-Reaching Impact of Artificial Intelligence in the Job Market

AI has both pros and cons that must be weighed when considering its influence on the labor market.

Pros of Al in the Job Market : Some of the advantages of using Al tools in the workplace are given below:

Increased Efficiency: By automating daily operations, Al frees up time for employees to focus on more meaningful and specific tasks. Al can also handle high- volume data that is too time-consuming or complex for humans to process.

Improved Customer Service: Al technology can provide services that are faster, more accurate, and more personalized than ever before. Al chatbots can provide customers with access to 24/7 support Thus, enabling customers to find quick answers or solutions to their queries and issues.

Cost Savings: Al can help businesses save money in many ways. Al-driven automation can help reduce labor costs, freeing up resources to focus on more strategic initiatives. Al also enables companies to optimize their supply. chain and production processes, leading to cost savings.

Al is Pioneering New Roles for Human Employees! Al has transformed the job market by introducing a variety of fresh roles for human workers. These positions encompass: AI Consultants, Data Analysts, AI Engineers, UX/UI Designers, Business Strategists, Cybersecurity Specialists, Ethical Data Analysts, AI Researchers, Quality Assurance Specialists, Policy Developers, AI Project Managers, Knowledge Architects, AI Marketers, Social Media Managers, AI Auditors, Technology Consultants, AI Product Managers, Technical Writers, Data Scientists, and Robotics Engineers.

AI has now become a permanent fixture and is increasingly vital in the job market. As technology progresses, there is a growing necessity for traditional workers to collaborate with AI systems. This shift presents new career prospects like machine learning engineering and software development. Businesses that integrate AI will gain a competitive edge over those that do not. AI aids in talent acquisition, enhancing the competitive standing of companies. The future of AI looks promising, so take advantage of the current opportunities and stay informed about industry advancements. Specialized experts with unique skills will be highly sought after. This shift will allow more time for creative and intellectual pursuits, fostering the development and implementation of fresh ideas and directions.

Cons of Al : The disadvantages of using Al tools in the workplace are given below:
Job Losses: Al is quickly becoming one of the most disruptive forces in the global economy. Al is expected to replace millions of jobs that are currently done by humans.
Risk of Automation Bias: Machine learning algorithms can be biased if they are not programmed properly. This could lead to unfair discrimination in hiring and other decisions.
High Cost of Implementation: Al technology can be expensive, which may make it out of reach for smaller companies. Additionally, there are often costs associated with maintaining and updating Al systems. As well as the cost of acquiring data and hiring personnel to work on projects.
. AI can have a big impact on recruitment. In the past, recruiters have had to devote considerable time to poring over resumes to look for relevant candidates.Now a days however, resume scanning is being done by AI- powered programmes.AI already plays a major role in the hiring process, so much so that up to 75% of resumes are rejected by an automated applicant tracking system, or ATS, before they even reach a human being

Will AI Replace Human Jobs

The ialogue regarding robotics and Al replacing human jobs is a multifaceted one. Al has a major impact on many industries including health and finance sector. AI has a significant role in business and commerce. But AI has made major strides toward replicating the efficacy of human intelligence in executing certain tasks, there are still major limitations. In particular, AI programs are typically only capable of "specialized" intelligence, meaning they can solve only one problem, and execute only one task at a time. Often, they can be rigid, and unable to respond to any changes in input, or perform any "thinking" outside of their prescribed programming.

Humans, however, possess "generalized intelligence," with the kind of problem solving, abstract thinking and critical judgement that will continue to be important in business. Human judgement will be relevant, if not in every task, then certainly throughout every level across all sectors.

. Another important limitation of note is that data can itself carry bias, and be reflective of societal inequities or the implicit biases of the designers who create and input the data. If there is bias in the data that is inputted into an AI, this bias is likely to carry over to the results generated by the AI.

. There are many other factors that could limit runaway advancement in AI. AI often requires "learning" which can involve massive amounts of data, calling into question the availability of the right kind of data, and highlighting the need for categorization and issues of privacy and security around such data. There is also the limitation of computation and processing power.

What Types of Jobs Al Will Impact

AI is already impacting many different types of jobs. Its influence on the job market is likely to increase in the future.These job includes:

Manufacturing jobs:Automation is becoming increasingly common inmanufacturing settings, leading to fewer human employees.

White-Collar jobs: Al is being used to automate mundane tasks and providel customer support in many white-collar jobs.

Administrative Roles: Automation can be used to streamline processes in administrative roles, such as data entry and scheduling.

Transportation & Logistics Jobs: Self-driving cars are becoming increasingly popular, leading to fewer human drivers in the transportation and logistics industries.

Healthcare Professionals: Al is being used to assist medical professionals with diagnostics and other tasks.

Financial Services:Automation is becoming common in the financial services industry, leading to fewer human employees.

Creative Jobs: Al is being used to create art and music, as well as author articles and write scripts. for movies.

The professions related to the translation industry may also disappear. Many automated online translators can translate quickly and efficiently, and the number is only growing.Occupations associated with the security of premises are in danger of disappearing. Automation has given us high-tech security systems equipped. with many cameras and alarms, thus negating the need for a security guard.

Therefore, the jobs associated with monotonous, mundane tasks will be eliminated.

Conclusion.

Considering the information provided and contemplating the future potential of automation, it can be inferred that it does not pose an immediate threat to the workforce. While some roles may vanish, numerous other creative positions cannot be substituted by artificial intelligence. As technology progresses, automation will be integrated into various aspects of human existence. Nevertheless, these advancements are not intended to completely replace humans but rather to simplify tasks and alleviate them from mundane duties. This shift will allow individuals to focus on more creative endeavors and utilize their unique abilities and attributes to a greater extent.

Influencers and Content Creators: A Powerful Marketing Tool in the Digital Age

Arsha Gupta
Sem - 6
Dept. of Commerce

In the ever-evolving landscape of digital marketing, influencers and content creators have emerged as powerful tools for brands to reach their target audiences. These individuals, with their established online presence and engaged communities, offer a unique opportunity to connect with potential customers in a more authentic and relatable way.

Traditional methods of banner ads and sponsored posts are still present, but a new breed of marketer has emerged - the influencer and the content creator. These individuals have cultivated dedicated followings on various platforms like Instagram, YouTube, and TikTok, and their ability to connect with audiences has made them invaluable assets for brands seeking to reach new customers.

The Power of Influencer

Influencers possess a unique ability to shape consumer behavior and shape trend. They have built trust and credibility with their audiences through relatable content creation and engagement. When an influencer promotes a product or service, it comes across as a genuine recommendation rather than a forced advertisement due to a personal touch added to marketing campaign.

This organic approach resonates with viewers, leading to higher engagement and conversion rates compared to traditional advertising methods. It makes the brand more approachable and add positive sentiments

Content Creators: The Storyteller

Content creators, while often overlapping with influencers, play a crucial role in social media advertising by creating visually appealing and creating informative content that crafts compelling narratives around brands and products. They leverage their creativity and storytelling skills to produce engaging videos, articles, reviews or social media posts that capture the attention of their audiences.

This content goes beyond simply showcasing a product; it creates an emotional connection and inspires viewers to learn more or make a purchase.

Effectiveness as a Marketing Tool:

Influencer marketing offers several advantages over traditional marketing methods

- Increased brand awareness: Influencers can reach a large and engaged audience, increasing brand awareness and visibility.
- Enhanced credibility and trust: Consumers often perceive influencer recommendations as more authentic and trustworthy than traditional advertising, leading to higher purchase intent.
- Targeted reach: Brands can collaborate with influencers who align with their target audience, ensuring their message reaches the right people.
- Engaging content:Influencers are skilled at creating engaging and visually appealing content, which can resonate with audiences and drive engagement.
- Measurable results: Many social media platforms offer analytics tools that allow brands to track the performance of influencer campaigns, providing valuable insights into their effectiveness.

How Influencers Manipulate Consumer Preferences

In today's digital age, influencers have emerged as powerful figures shaping consumer behavior. They leverage their online presence and personal brand to sway the preferences of their audience, often subtly and effectively. Understanding these tactics is crucial for both consumers and businesses

1. Building Trust and Authenticity:

- Relatability: Influencers often cultivate a relatable persona, presenting themselves as "one of us." This fosters a sense of trust and connection, making their recommendations seem genuine and trustworthy
- Expert Positioning: Some influencers establish themselves as subject matter experts in their niche, building credibility and influencing the perception of products or services they endorse

2. Storytelling and Emotional Connection:

- Crafting Narratives: Influencers weave engaging stories around products, highlighting their benefits and integrating them seamlessly into their lifestyle. This emotional connection makes the product more desirable.
- Aspirational Content: Showcasing a glamorous lifestyle, using specific products, and portraying the positive outcomes associated with them can create a desire to emulate the influencer's life and choices.

3.Social Proof and Bandwagon Effect:

- Highlighting Popularity: Influencers often emphasize the popularity of a product or service, showcasing high engagement and positive user reviews. This creates a sense of social proof, making it seem like the "right" choice.
- FOMO (Fear of Missing Out): Influencers can create a sense of urgency by emphasizing limited- time offers or exclusive access, encouraging impulsive purchases to avoid missing out.

4.Strategic Content and Visuals

- High-Quality Production: Influencers often leverage professional-looking photos and videos, making the products visually appealing and desirable.
- Targeted Content: By tailoring their content to specific demographics and interests, influencers can directly influence the preferences of their target audience

5. Utilising Social Media Platforms

- Leveraging Algorithms: Platforms like Instagram and TikTok prioritize content with high engagement, further amplifying the reach of Influencer endorsements and influencing wider audiences.
- Interactive Features: Features like live streams, Q&A sessions, and polis allow for direct interaction between influencers and their audience, fostering a sense of community and trust.

It's important to note that not all influencer marketing is manipulative. Ethical influencers disclose sponsored content and genuinely believe in the products they promote. However, understanding the tactics employed can help consumers make informed choices and businesses utilize influencer marketing effectively

The Rise of Influencers and Content Creators: A Boon for Businesses

In today's digital landscape, traditional marketing methods are no longer enough.Consumers are bombarded with advertisements, making it increasingly difficult for brands to stand out.This is where influencers and content creators emerge as powerful marketing tools, offering businesses a unique and effective way to reach their target audience.

1. Increased Brand Awareness and Reach:These individuals have established communities of engaged followers who trust their recommendations and opinions. When an influencer promotes a brand or product, it reaches a wider audience than traditional advertising, often with greater impact. This is because the endorsement comes from a trusted source, increasing the perceived value and credibility of the brand
2. Cost-Effective and Measurable: Compared to traditional advertising, influencer marketing can be a more cost- effective way to reach a targeted audience. Businesses can choose to collaborate with micro-influencers or larger personalities depending on their budget and target audience. Additionally, influencer marketing campaigns can be easily tracked and measured, allowing businesses to assess the return on investment (ROI) and optimize their strategy for future campaigns.
3. Building Trust and Credibility: Unlike traditional advertising, which can often feel impersonal and intrusive, influencer marketing allows brands to connect with their audience on a more authentic level. .

Influencers and content creators are seen as relatable figures, and their genuine recommendations carry more weight than traditional advertising messages. This fosters trust and credibility, leading to a more positive brand perception and increased customer loyalty

4.Targeted Content and Engagement: Influencers and content creators often specialize in specific niches, allowing businesses to target their ideal audience with laser precision. This ensures that the brand message reaches the right people, increasing the likelihood of engagement and conversion. Additionally, influencers excel at creating engaging content that resonates with their audience, making it more likely to be shared and viewed organically, further amplifying the reach of the brand message

5. Improved Brand Perception: Positive influencer reviews and recommendations can significantly impact brand perception and build trust with potential customers.

6. Enhanced Sales and Conversions: Effective influencer marketing campaigns can directly lead to increased sales and conversions.

Key Consideration For Brands

While influencer marketing offers significant potential, brands need to carefully consider certain factors to ensure successful campaigns.

- Transparency and Disclosure: As influencer marketing continues to evolve, transparency and clear disclosure of partnerships are crucial for maintaining trust with audiences.
- Focus on Social Impact: Influencers are increasingly using their platforms to promote social causes and advocate for positive change, creating opportunities for brands to align with these values.
- Target audience alignment: Choosing influencers whose audience aligns with the brand's target demographic and interests is crucial for maximizing reach and impact.
- Authenticity and credibility: Partnering with influencers who genuinely align with the brand's values and message is essential for maintaining authenticity and building trust with the audience.
- Content quality and engagement: Selecting influencers who create high-quality, engaging content that resonates with their audience is vital for driving positive brand perception.

Conclusion

Influencers and content creators have revolutionized social media advertising. Their ability to build trust, create engaging content, and connect with specific audiences makes them invaluable marketing tool for brands seeking to reach new customers and achieve marketing success.By understanding the roles of influencers and content creators, brands can effectively leverage their power to create successful social media advertising campaigns that reach target audiences, drive engagement, and achieve their marketing goals.As the influencer marketing landscape continues to evolve, businesses that embrace this strategy are poised to gain a significant competitive advantage.However, careful consideration of audience alignment, content quality, and campaign measurement is crucial for successful influencer marketing strategies.

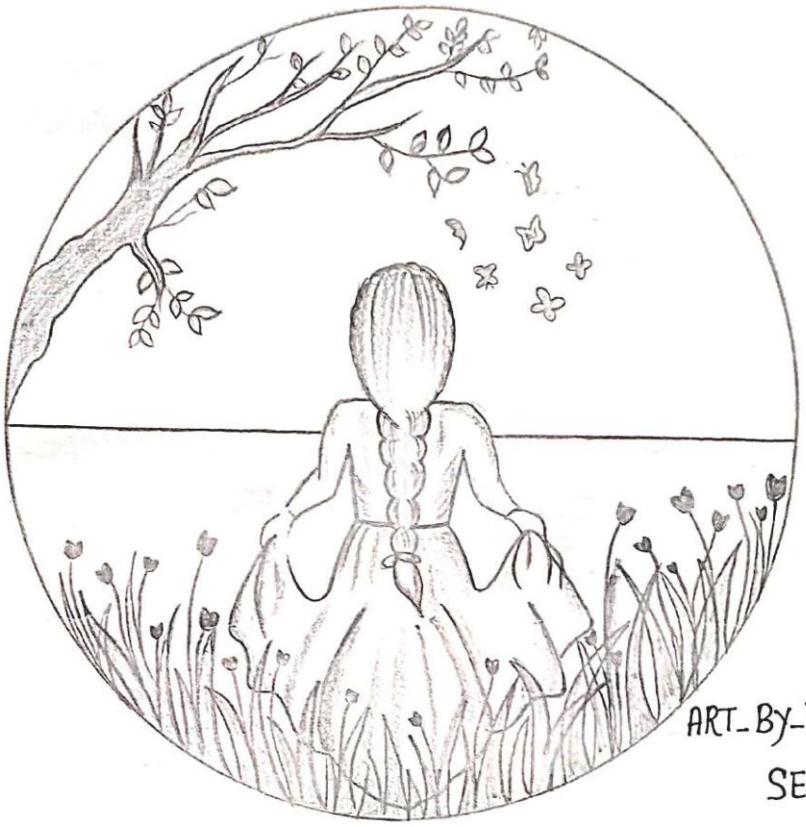

ART_BY_NANDINI KUMARI
SEM-6

"ए प्रकृति तुझ-सा कोई नहीं"

तेरी खुबसूरती ही तेरी पहचान ही अलग है। तुझसे जुड़े हवा का बहना किसी लड़की के समान है जैसे कोई आये और मन को छू-कर चल जाये।
ए प्रकृति तेरे मिट्टी की खुश्बू सारे जग को महका देती है मानो तो ऐसा लगे की कोई तो है जो खुश्बू बिखेड़ रहा हो
ए प्रकृति कैसे बयां करु तेरी खुबसूरती कहने के लिए कोई शब्द नहीं।
ए प्रकृति तेरा शीतल सा-जल सभी जन प्राणियों में जान-सी डाल देता है॥
ए प्रकृति क्या कहूं तेरी सुहानी रात के बारे मे ये तो पूरी बेचैन दुनिया को सुकून दे जाता है।
"ए प्रकृति तेरा कोई जवाब नहीं॥ ← BY_CHITRALEKHA GUPTA
SEM-6

बीती विभावरी जाग री

- जय शंकर प्रसाद

बीती विभावरी जाग री!
अंबर-पनघट में डुबो रही -
तारा-घट ऊषा नागरी ।

खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई -
मधुमुकुल नवल रस गागरी

अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये-
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री

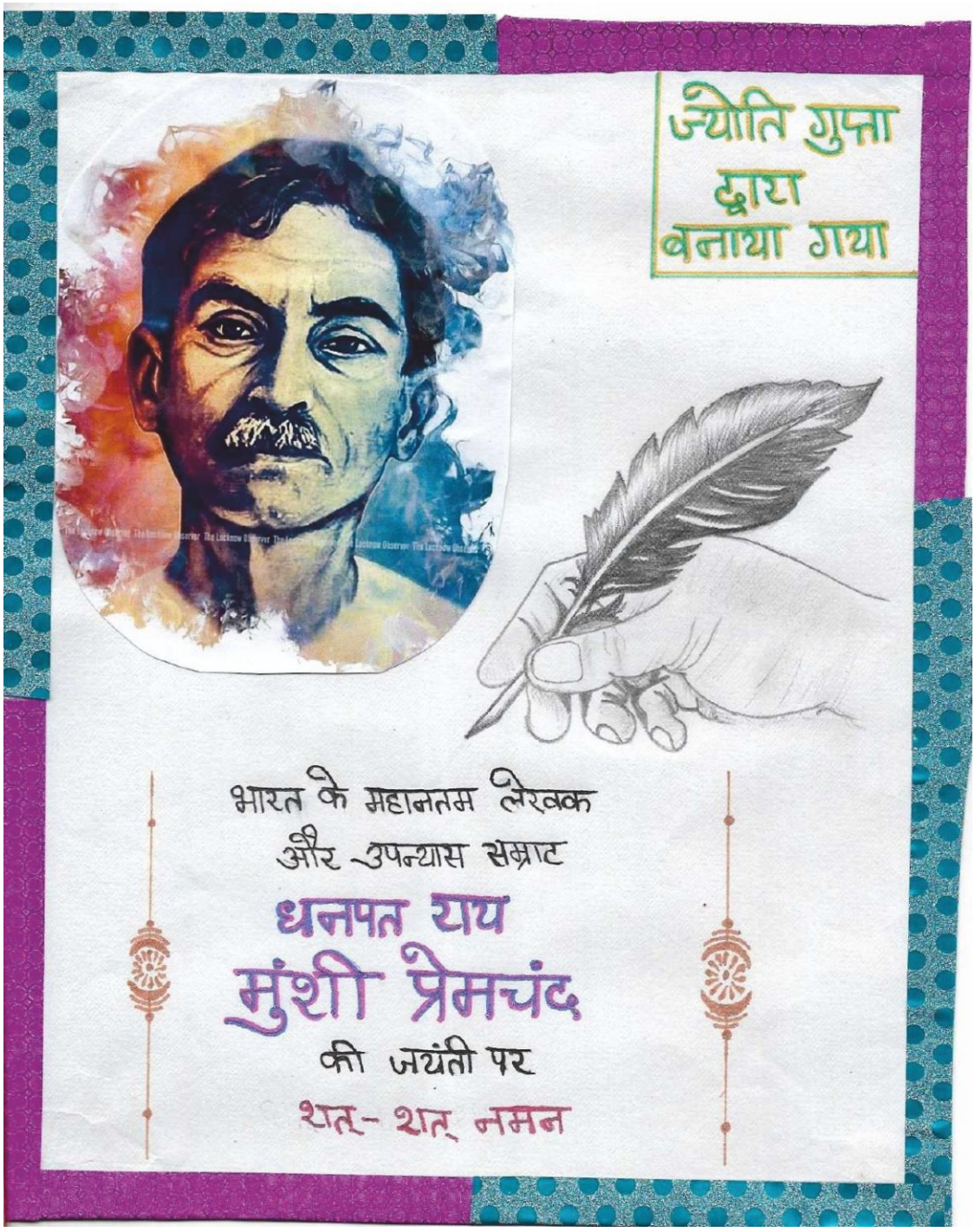
ज्योति गुप्ता
द्वारा
बनाया गया
भारत के महानतम लेखक
और उपन्यास सम्राट
धनपत राय
मुंशी प्रेमचंद
की जयंती पर
शत- शत् नमन

21ST CENTURY WATERLOO

Ahana Choudhuri
3rd Sem
Englishi Honours

The city of torment reeks with ashes and light,
Telltale limps bounds away affright
Tears in their eyes quench the twinkling nights
Embers glow and wry, miseries fall behind,

The ships of strife, wildly pitches
racked with terror and ugly riches,
Raging ruins in all its vengeance,
rings with cries for the healer and wailings for the lifeless;

Will there be any relief from strewn of blood on the ground,
that washes down with pain and found?
Children stillborn, will they ever feel the beauty of the burning rays down
the horizon as the past?

Ruthless furore, they spun out by the bars,
Breeds unborn, gauges down the landfall behind the stars,
Tears mingle with the countenance of love and warmth
We plead together, to lift up your arms into the ether,

You and I, untangle the qualm and butterflies of the night, wings her feather;
I wish this is my future self who recalls,
the dreads and scourge of bigots to the sky,
Grim and brawls and fateful feuds,
glints tight inside brilliant vault of heaven aside,

We sing the symphony of remedies,
The world shall recuperate again,
Till then, let's hold our hands,
Dwell in a land of hope and courage,
In the realm of frosty winter nights,
I wish they care enough for the living artless mirage.

WE GAIN FREEDOM WHEN

Sneha Gupta
BCOM (hons.)

We are determined to do something,
We gain freedom when we fearlessly resist
obstacles which are came in our path,
We gain freedom when we express our feeling
without any fear,

We gain freedom
when we show our courage and do something which seem impossible at first,
We gain freedom when we believe in ourselves.

YOU

Sweta Samaddar
2nd semester
English Honours

You, yes you the one who will choose the right path for you,
You the one who will keep the trust on you,
It doesn't even mean what others people think or say about you,
It doesn't mean what others make decisions too,
The time when you stand up and raise your voice for yourself then that others have nothing to do.
You, yes you the one who will choose the right time for things to do,
You the one who will always believe in you when those others have no clue,
And the end of your day the one thing is important that's is 'YOU'.....

LONER'S STRIVE

Alivia Chakraborty
2nd semester, Roll no.-03
English Honours

The lights are dimmed
When half of the world is in dreams.
The clouds hide the shimmering stars,
And the loner's strive begins.

"Who am I? Why am I even here?
Soaking the pillow with every drop of tear?"
Mindful of questions but no one to ask;
Don't we all hide our souls behind an invisible mask?

"How'd the world look if I wasn't in it?
Would there be any difference, even a tiny bit?"
No, I think. Cause, the universe is so vast...
Supine, I realize I'm just an emotional outcast."

"Stop feeling crap." they say.
But how do I do?
Some people are praying to live,
When some are crying not to.

With all the void questions crawling in my heart
I look up, in search of the world apart;
My lips curl into a smile with a glinting eye
"When the clouds revealed a star, why don't I let my hopes fly?"...

AWKWARD

Sampurna Mazumdar
Sem - 3
English Honours

Ugh! One knows something wrong
Awkward alert went off
Don't give him angry look
Don't yoke him, he is still young
One might be a simpleton
Zipped his mouth of rubbish talk
Unsocial! A phone loving hawk!
Yet awkward? Lazy mode on
Strange isn't it, no, it went; yes gone
What? Nothing, a silent silence
Made him or act like a mature
Be a man! Avoid awkward dependence
Being ridiculous sunken wish
Had no existence, an empty dish
Into his own world
Kept spinning awkward
Jot down the main points
Be ready for the real world.
Ain't no criminal, no haphazard
Just kept hush, people you're awkward!
Huh! Reach my age, my situation
Little one, or already gone through
Once upon a time....? Didn't you?
Knowing yet why'd you call me awkward?

चुप रहो पर बोलते रहो

डॉ रमेश यादव

चुप रहो
लेकिन चुप इतना न रहो
कि चुप हो जाए तुम्हारी आत्मा

बोलते रहो
कि बोल सको तुम प्रतिरोध में
पर इतना न बोलो
कि तुम्हारे बोलने से हो जाए हत्याएं

चुप रहने में
और बोलने में इतना ही महीन अंतर हो
कि बोल सके तुम्हारी आत्मा
और चुप रहने से बच सके किसी की जान!

लौटना है तो लौटो

डॉ रमेश यादव

अगर लौटना ही तो
लौट जाओ
सूरज के प्रकाश की तरह
अगली सुबह के लिए

लौटो वैसे
जैसे लौटती हैं सांसें फेफड़ों में
हवा लिए

लौटना ही तो
लौटो हर पतझर के बाद
जैसे लौटता है बसंत पत्तियों में
कोमलता लिए

लौटना ही तो लौटो
जैसे लौटती है महक बसंत के फूलों में
जैसे लौट जाती हैं तितलियाँ परागकण
के लिए
फूलों पर
जैसे लौटती हैं मधुमक्खियाँ मधु लिए
अपनी छत्ता में

लौटो तो लौटो...
लौटो उस नदी की तरह समतल धरा
पर
जो उष्णता सींचने के बाद उग आती है
फसल बनकर भूखे मुँह के लिए

सच में
मुझे लौटना है
जीवन के क्षय के बाद
किसी शिशु में
बचपन का धड़कन लिए!

हार और जीत🙏🙏
प्रथम-स्वरचित सकारात्मक कविता(कोरोना काल में लिखी गई)
अन्तर्राष्ट्रीय महिला काव्य मंच -कोलकात्ता
हार और जीत

जिंदगी का कटु सत्य है
यह हारना और जीतना
हार और जीत दो बहनें सफलता और असफलता की भांति
एक दूसरे के बिना अधूरी हैं।

नाकामयाब हो जाता है जब अपने मकसद में मनुष्य आशायें तोड़ देता है
ना बढ़ना चाहता है
ना जीना चाहता है
टूट जाते हैं सपने सारे जब हार मंद मंद मुस्कुराती है
हारे हुए मनुष्य को निढाल कर डालती है
आहिस्ता से एहसास कराती है
' पुरुष हो पुरुषार्थ करो।।'

जिंदगी का कटु सत्य है यह हारते ही सब रिश्ते टूट जाते हैं
जो अपनों का दम भरते थे वह मानो डूब जाते हैं
रिश्तो के भंवर में जब फंस जाता है इंसान
जीत फुर्ती से आकर हाथ थाम लेती है
और याद दिलाती है
" हार मान लेना तुम्हारा मकसद नहीं "
ललकारती हुई से हुई सी निराश मनुष्य को,
" हारोंगे नहीं यदि कभी तो जीत का जज्बा कैसे लाओगे?"
हार तो पल भर की है जिंदगी से हमेशा तुम जीत जाओगे

जिंदगी का कटु सत्य है यह
हार कर जीतना ही मनुष्यता की निशानी है
'जीत' जाने पर भी हार सदा फूलों के' हार 'रूप में तुम्हारे साथ रहेगी
क्योंकि हार और जीत दो बहनें हैं।
जिंदगी का कटु सत्य है यह।।
धन्यवाद
स्वरचित-दर्शना शर्मा
प्रोफेसर हिन्दी विभाग (कोलकत्ता)
एम०ए०,एम०फिल०,एम०एड०।।

कहानी... आस्था और विश्वास

कोलकाता सिटी ऑफ जॉयCity of joy

अपनी संस्कृति और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए विख्यात है प्रत्येक उत्सव यहां बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है मैं भी यहां रह कर प्रत्येक पर्व और त्योहार का आनंद लेती हूँ बंगाली भाषा बहुत ही मीठी भाषा है औरतों के प्रति यहां पर विशेष सम्मान दिखाई देता है

अनजाने को भी भाभी और दीदी कहकर पुकारा जाता है जो मेरे अंतर्मन को बहुत प्रिय है।शायद इसीलिए कोलकाता मेरा पसंदीदा शहर है मैं एक छोटी सी घटना लिखने जा रही हूं जो मुझे अंदर तक छू गई। हम रोज नये-नये लोगों से मिलते हैं और उन्हें समझने और जानने की कोशिश भी नहीं करते हैं इतना समय नहीं रहता कि किसी की मुश्किलों को सुलझा सकें।अगर ऐसा करें तो शायद थोडा बदलाव ला सकें।

जिन्दगी में व्यस्तता इतनी है कि भगवान का नाम भी जाते-जाते गाडी में लेना पडता है क्योंकि काम ही पूजा है।भाग -दौड भरी जिन्दगी में अपना भी पता नहीं होता कि कब कहाँ से क्या -क्या सोचते हुए पहुँच गये।

रोज़ सुबह मैं अपनी बेटी को स्कूल छोड़ने उसके विद्यालय जाती हूं और आते हुए एक शिव जी का मंदिर पड़ता है सोमवार के दिन वहां पूजा करने के लिए फूल वाले से फूल खरीदती हूँ ।

एक दिन मैं गाड़ी से उतर कर फूल वाले के पास जाकर खड़ी हुई तो उसने मुझसे कहा- "दीदी मेरा काम धंधा ठीक से चल नहीं रहा। फूल बिक्री ही नहीं होते। घर चलाना मुश्किल हो रहा है। कोई उपाय बताइए ?

आपको देखने से लगता है कि आप मेरी सहायता जरूर करेंगे और कोई उपाय बताएंगे। यहां के लोग मेरे बैठने की जगह पर रोज टोना कर देते हैं जिससे मैं बीमार रहता हूं ।और मेरा धंधा भी मंदा ही चल रहा है।"

उस व्यक्ति की आंखों में पानी था और मैं उसकी बातों को सुनकर सन्न रह गई वह निराश हो चुका था मैं निरुत्तर थी क्योंकि मैं टोनो-टोटको पर विश्वास नहीं करती कर्म पर विश्वास करती हूँ।

लेकिन उसी वक्त मैंने उससे कहा-"भईया, ईश्वर पर भरोसा रखो,वही हम सब का पालनहार है।आप तो मन्दिर के बाहर ही बैठे हैं आपकी पुकार वो अवश्य सुनेगा।और आप तो पीपल के पेड के नीचे बैठ कर फूल बेच रहे हो और हमारी हिंदू मान्यता के अनुसार पीपल के वृक्ष पर 36 करोड़ देवी- देवता निवास करते हैं आप तो उनकी छाया में बैठे हैं आपका कोई कभी भी कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा ।

आप सबसे पहले आकर पेड को प्रणाम करके फूल चढाया कीजिए ।यही छोटा सा उपाय है ।अपने काम को पूरी निष्ठा से करो।"

फिर मैनें अपने पर्स निकाल कर माता की छोटी सी चुन्नी थी जो उसने अपने छोटे से थैले में, बड़ी श्रद्धा से रख ली।सोमवार को जब मैं फिर से फूल लेने गई तो वो बहुत प्रसन्न नजर आया बोला-" दीदी नमस्ते "

मैंने पूछा- सब ठीक है?भईया

बोला- हां, सब ठीक है धंधा बहुत अच्छा चल रहा है ।पूरे सप्ताह में ,मैं बीमार भी नहीं हुआ।

उसको प्रसन्न देखकर मैनें खुद भी प्रसन्नता का अनुभव किया और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि मैने कम -से -कम एक व्यक्ति के आत्म सम्मान को जगा कर उसके चेहरे पर खुशी दी है।

गाडी में बैठते -बैठते मैं स्वयं एक खिलाडी की भांति जीत का अनुभव कर रही थी और सोच रही थी कि,

ऐसे ही यदि हम सब मिल कर निराश लोगों को आशा का दीपक दिखायें तो कितना अच्छा होगा।मैनें सिर्फ उसे ईश्वर के प्रति आस्था रखने को कहा था और अपने काम पर ध्यान देकर लगन से करने को कहा था।

हमें हमेशा कर्म पर विश्वास रखना चाहिए और रब(ईश्वर) तो हमारे साथ है ही,

ये अटूट विश्वास🙏🙏रखना न भूलें।।

कर्म में विश्वास रखें

जीवन की राहें,

अवश्यमेव खुलती जायेंगी।।

दर्शना शर्मा(कोलकाता)

हे गणपति निज भक्त को दो ऐसी निज भक्ति

साहित्य सृजन में ही रहे जीवन भर अनुरक्ति🙏🙏

असंभव को बनाया संभव

"कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है"

लेखक- गोपाल दास नीरज

जी हां, ऐसा ही हुआ था पूरी दुनिया के साथ कितने लोगों के सपने टूट गए थे लॉकडाउन लगा लेकिन बहुत कुछ सीखा भी गया। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी एक दुख भरी दास्तां बन गई अब क्या भूलें क्या याद करें?

शायद आने वाले दिनों में, वर्षों में हम उन दिनों की पीड़ा को कभी भी भूल पाए।।

जीवन एक संघर्ष है और असंभव को संभव बनाना व्यक्ति के हाथो में ही होता है क्योंकि

कभी अवसर बदल जाते हैं कभी मौसम बदल जाते हैं कभी परिस्थितियों भी बदल जाती हैं सब कुछ बदला बदला सा नजर आने लगता है लेकिन एक अच्छा खिलाड़ी हं हर मौसम में हर मैदान में खेलने का जज्बा रखता है और हम सब अच्छे खिलाड़ी साबित हुए।।

21 मार्च 2020 का दिन शायद ही हम कभी भूल पाए

हर बात वो जो दुख देती है भुलाई नहीं जा सकती ।ऐसी पीड़ा जो स्वयं की दूसरों की भी हो ,तो वह हमारे अंतर्मन में अपनी ऐसी छाप छोड़ जाती है कि फिर भूलने पर भी भुलाई नहीं जा सकती।

लॉकडाउन एक ऐसा भयानक समय था जो बड़े से बड़े व्यक्ति को भी हिला गया। आम आदमी की स्थिति को भी सोच कर दुख होता है जो लोग रोज काम करके मजदूरी करके अपने बच्चों का लालन पालन करते थे उनकी दयनीय अवस्था थी लेकिन भरोसा ईश्वर पर था कि किसी को भूखे पेट नहीं सोने देंगे।।

पल पल मरते जा रहे थे हम जी -जी कर हर रोज़

दुनिया की तस्वीर का यह भी था नया पोज़।।

चारों तरफ निराशा ही निराशा थी लोग हताश हुए जा रहे थे घर में बंद होकर सभी आने वाले कल की चिंता में चिंतित रहने लगे थे। जरूरत थी केवल प्रोत्साहन की। ऐसा मैंने शायद किया मैं सकारात्मक विचारों में विचरण करती हूं कभी भी नकारात्मकता को अपने नजदीक नहीं आने देती इसलिए यथा समर्थ मैंने छोटा-छोटा योगदान देकर किसी का भी मनोबल नहीं गिरने दिया था हमेशा मुस्कुराते रहने का संदेश दिया था।

इंसान को यदि सामने वाला दो मीठे बोल भी बोल दे तो वही रामबाण होता है उस समय मैंने यही किया।

अपने परिवार को ,दूसरों के परिवारों को भी संभाला आश्वासन दे देकर अस्वस्थ व्यक्तियों को ईश्वर पर भरोसा करने के लिए कहा और जोश कायम रखने के लिए मैंने अपील की आखिरकार हम लोगों की जीत हुई।कोरोना को हमारे बुलंद इरादों ने हरा दिया।

बहुत सी कहानियां हैं जो हमने सब ने करोना काल में देखी महसूस की।। जीवन में संघर्ष,हर चीज़ की किल्लत क्या होती है? शायद उस वक्त समझ में आया। नकारात्मकता को त्याग सकारात्मक की ओर चलते हैं

चलिए

अच्छी बातों की चर्चा करते हैं हम चाहे घर में बंद हो गए थे कहीं बाहर आना-जाना नहीं कर पा रहे थे लेकिन फिर भी खुश थे।

मस्त थे क्योंकि इस प्रकार का माहौल जीवन में पहली बार देख रहे थे कोई कामवाली बाई नहीं थी, खुद ही कामवाली बाई बन गए ,झाड़ू पोंछा ,कपड़ा धोना बर्तन मांजना ,खाना बनाना और सबसे मजा तब आया जब हम हलवाई भी स्वयं ही बन गए यूट्यूब चैनल जिंदाबाद हर स्वादिष्ट व्यंजन बना डालें । सभी एकजुट होकर हर काम में सहयोग देने लगे।

इतने फ्री थे कि समय काटने पर भी नहीं कटता था परिवार के साथ बैठकर एक साथ खाना खा रहे थे जिंदगी के सुख-दुख एक साथ झेल रहे थे और बांट रहे थे अपने रिश्तेदारों के साथ वीडियो कॉल करके गीत ,भजन, खेल सबका आनंद उठा रहे थे हर त्यौहार हर पर्व हमने इतनी असुविधाओं के होते हुए भी खुशियों के साथ बिताया और असंभव को भी संभव बना दिया

आज इस लेख के जरिए

मैं अपने सभी विद्यार्थियों का चाहे वह स्कूल के विद्यार्थी या कॉलेज के विद्यार्थी सभी का धन्यवाद करना चाहूंगी।। बच्चे स्कूल ना जाकर खुश थे लेकिन पढ़ाई का लगातार

ध्यान रखा गया स्कूलों कॉलेजों के छात्रों को बहुत-बहुत धन्यवाद उन्होंने अपने आप को एक ही घर में बंद रखकर अपने आप को हर सूरत में सुरक्षित रखते हुए तथा सबकी सहायता करते हुए करोना को भगाने में हर संभव सहायता की।। एक -दूसरे को आश्वस्त देने लगे।

वसुदेव कुटुंबकम का नजारा नज़र आने लगा ।।

हम भारतीयों को एक दूसरे पर गर्व है हर व्यक्ति जो दूसरों की सहायता करने में समर्थ था उसने की।।

इंसानियत की मिसाल देखकर मन हर्षित हुआ कि मैं एक ऐसे देश की वासी हूं जहां इंसान को इंसान की पीड़ा का दर्द महसूस होता है इंसानियत अभी जिंदा है

सबसे अच्छी बात यह रही कि घर बैठे बैठे ही हमने कलम उठाकर कुछ सकारात्मक कविताएं लिख डाली और बहुत से लेख भी।। बस फिर क्या था हमारी कलम ने रुकने का नाम ही नहीं लिया हमें याद आया कि हम तो पहले भी कविताएं लिखा करते थे बहुत से मंचों से जुड़ गए और सुंदर-सुंदर कविताओं से अपना मनोरंजन करके तथा लोगों को सकारात्मक रहने का संदेश देकर और ईश्वर पर भरोसा रखने का हमने काम किया।। निराश हुए लोगों की मानसिकता को बदलना आवश्यक था।

प्रातः काल ही उठकर सभी घर के सदस्यों को आयुर्वैदिक काढा पिला दिया करते थे और काम वाली बाई हो जाते थे हल्दी वाला दूध और फल हमारे प्रिय हैं और इन्हीं घरेलू औषधियां ने हमें बचा कर रखा और हमने दूसरों को भी स्वस्थ रहने का नुस्खा बता डाला।

जब भी टीवी चलाते तो वहां पर असहनीय दृश्यों को देखकर मन खराब हो जाता था

हमने न्यूज़ चैनल देखना ही बंद कर दिया समय काटना मुश्किल था लेकिन हमने हंसते-हंसते काटा ।

माना कि कोरोना ने घर में ही दीवारें खड़ी की एक कमरे में बंद हम अपनो से ही नहीं मिल सकते थे लेकिन परिवार वाले कैसे अलर्ट थे। एक दूसरे की सेवा सुश्रुषा में ।परिवार में स्नेह बढ़ गया। लोगों को एक दूसरे की अहमियत समझ आने लगी।

शुक्रिया- शुक्रिया उन सरकारी मुलाजिमों का,

डॉक्टरों का नर्सों का, जितने भी हमारे भाई बंधु इस स्थिति को सुधारने में लगे थी सभी को धन्यवाद🙏🙏

हम कदम बढ़ाते रहेंगे

जब तक आस और श्वास है

मुश्किलो को लांघ लेंगे

स्वंय पर हमें विश्वास है ।।

ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि उन लोगों को ईश्वर सदैव खुशियां दे जिन्होंने निस्वार्थ भाव से उस वक्त मानवता की रक्षा की थी।।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के *पिंजर बंद न गा पाएंगे

कनक तीलियों से टकराकर* पुलकित पंख टूट जाएंगे।।

अंत में मैं यही ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि ऐसा समय हमें फिर कभी मत दिखाना क्योंकि हम उन पक्षियों की तरह पिंजरे में बंद नहीं रह सकेंगे ।जो उस वक्त लॉकडाउन में हमने समय बिताया वैसा समय फिर कभी भी किसी की जिंदगी में ना आए।।

मुस्कुराते रहिए क्योंकि ये जीवन अनमोल है।अच्छे कर्म करते रहिए जीवन की कठिन राहें स्वयंमेव खुल जायेंगी।।

धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित

दर्शना शर्मा

हिंदी प्रोफेसर

महारानी काशेश्वरी कालेज कोलकाता।

पंछी की जुबानी
मेरी कविता

आ गया लो फिर बसंत।
छा गया लो फिर बसंत।।

पीले –पीले फूल खिले चारों ओर
पीली –पीली हर क्यारी चारों ओर
पीली –पीली सरसों लहराई चारों ओर
पीले–परिधानों से सजी धरा चारों ओर
आ गया लो फिर बसंत।
छा गया लो फिर बसंत।।
हम पंछी खिलखिलाते, मंडराते, चारों ओर
गीत खुशियों के हैं मानो गाते। चारों ओर
पुष्पावलि को देख, हम भी मुस्काते चारों ओर
बसंतोत्सव का लुत्फ उठाते चारों ओर
कवियों की कलम के सुअक्षर बन जाते, चारों ओर
हर प्राणी के मन को भाते चारों ओर
आ गया, लो फिर बसंत।
छा गया, लो फिर बसंत।।
जगत की है जो परम्परा चारों ओर
बस, तीन मास ही हम यश पाते चारों ओर
देख व्यथित होता है हृदय हमारा
क्यों नहीं? बारह मास, रहता बसंत
क्यों नहीं? मनुज, प्रिय हमारे सुन पाते,
स्वर हमारे पपीहे की पीहू–पीहू
कोयल की, कूहु–कूहु
चहचहाना, मस्ती में हम पंछियों का
कलम उठाकर, शब्द सजाकर
माला बनाकर, थोडा सहलाकर
ममत्व दिखाकर, प्यार उमडाकर
विषय बनाकर, वृक्ष बचाकर
नीड़ सहेज कर क्यूँ नहीं रख पाते??
आ गया, लो फिर बसंत।
छा गया, हम पंछियों का गुणगान चारों ओ

दर्शना शर्मा (कोलकाता)

आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन गुरूर है...।
संसार में गऊ बनने से काम नहीं चलता जितना दबो उतना ही दबाते हैं......।
वह प्रेम जिसका लक्ष्य मिलन है, वह प्रेम नहीं वासना है।
यश त्याग से मिलता धोखाधड़ी से नहीं।
"मैं एक मजदूर हूँ। जिस दिन कुछ लिख न लूँ उस दिन रोटी खाने का कोई हक नहीं।"
प्रेमचंद
"अन्याय में सहयोग देना, अन्याय करने के ही समान है....।"
"विपत्ति" से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला

মহারাণী কাশীশ্বরী কলেজ পত্রিকা

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT MAGAZINE, MAHARANI KASISWARI COLLEGE PATRIKA

FORM - VI

1.	Place of Publicaiton	Kolkata
2.	Periodicity of its Publicaiton	Annual
3.	Printer's Name Nationality Address	Sudipta Ghosh & Gobinda Mandal Indian 20, Ramkanta Bose Street, Kolkata - 3
4.	Publisher's Name Nationality Address	Sudipta Ghosh & Gobinda Mandal Indian 20, Ramkanta Bose Street, Kolkata - 3
5.	Editor's Name Nationality Address	Sudipta Ghosh & Gobinda Mandal Indian 20, Ramkanta Bose Street, Kolkata - 3

6. Name and address of Individual who own the newspaper and partners of shareholders holding more than one percent of total capital.

MAHARANI KASISWARI COLLEGE
20, Ramkanta Bose Street, Kolkata - 700003

We, Sudipta Ghosh & Gobinda Mondal (Convener, college Magazine Committee) hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and helief.

Sd/- Sudipta Ghosh

Dated, Kolkata
April 2024

Gobinda Mondal
Signature of Publisher

Printed and published for Maharani Kasiswari College, Kolkata - 700003 by Sudipta Ghosh & Gobinda Mondal at Om Printers, Amta (Sahapara), Howrah - 711401